मिशन बुनियाद

कहानियों का ख़ज़ाना

हिन्दी

कक्षा : 6–8



GNCT OF DELHI
शिक्षा निदेशालय
दिल्ली सरकार

बिक्री के लिए नहीं

सौजन्य से
दिल्ली पाठ्य पुस्तक ब्यूरो

SCERT
स्वाध्यायान्मा प्रमदः
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं
प्रशिक्षण परिषद्

सत्यमेव जयते

उप मुख्यमंत्री

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार



यह एक कड़वी सच्चाई है कि दिल्ली नगरपालिका के प्राथमिक विद्यालयों व दिल्ली सरकार के माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले बहुत से बच्चे अपनी कक्षा-स्तरीय पाठ्यपुस्तकों को पढ़ने में भी सक्षम नहीं हैं।

पिछले तीन वर्षों में, दिल्ली सरकार ने ऐसे कई तरह के कदम उठाए, जिनसे कक्षा 6-8 के बच्चों की शिक्षा के स्तर में सुधार आया। इस पहल से हमें कई अच्छे परिणाम भी मिले, परन्तु हमने यह भी जाना कि हम सभी बच्चों को उनके शिक्षा स्तर तक लाने में पूरी तरह सफल तभी हो सकते हैं जब हम प्राथमिक कक्षाओं से ही बच्चों की शिक्षा पर ध्यान दें।

सरकारी स्कूलों में पढ़ रहे हर बच्चे को सफल होने का हर प्रकार से मौका मिलना चाहिए। 'कोई भी बच्चा पीछे न छूटे', यह सुनिश्चित करना 'मिशन बुनियाद' का प्रयास है। बच्चों में पढ़ने की क्षमता व मूलभूत (बेसिक) गणित की समस्याओं को हल करने की क्षमता अति महत्वपूर्ण है। इन्ही क्षमताओं के आधार पर आगे की कक्षाओं में शिक्षक अन्य सभी विषयों को सिखा सकते हैं।

सभी अभिभावकों के पूर्ण सहयोग द्वारा ही मिशन बुनियाद को सफल बनाया जा सकता है। ज़रूरी है कि हमें अपने सभी बच्चों को प्रतिदिन स्कूल आने के लिए प्रेरित करें, ताकि वे आवश्यक विषयों एवं पाठ का भली-भांति ज्ञान प्राप्त कर सकें। इस प्रकार के छोटे छोटे कदम हमारे बच्चों की सफलता सुनिश्चित कर सकते हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि शिक्षक व अभिभावक साथ मिलकर सभी बच्चों के लिए एक उज्जवल भविष्य का निर्माण करेंगे।

शिक्षित राष्ट्र समर्थ राष्ट्र

शुभकामनाओं सहित,

मनीष सिसोदिया

बच्चों में शिक्षा के बुनियादी स्तर को मजबूत करने के उद्देश्य से बनायी गई इस शिक्षण सामग्री की समीक्षा के लिए हम डॉ शारदा कुमारी (प्राचार्या, DIET आर.के. पुरम) का धन्यवाद करना चाहते हैं। हम आभार प्रकट करना चाहते हैं छाया शर्मा (सर्वोदय कन्या विद्यालय, शास्त्री पार्क), श्रुति आहूजा (सर्वोदय कन्या विद्यालय, मोती नगर), हरीश सिंह (गाँधी मेमोरियल सर्वोदय बाल विद्यालय, जी टी रोड, शाहदरा) और गरिमा गुप्ता (सर्वोदय कन्या विद्यालय, डी ब्लॉक, मंगोलपुरी) को, जिन्होंने इस पुस्तिका के संपादन का काम किया है।

शिक्षा निदेशालय,

दिल्ली सरकार

सौजन्य से : दिल्ली पाठ्यपुस्तक ब्यूरो, 25/2, संस्थानीय क्षेत्र, पंखा रोड़ जनकपुरी, नई दिल्ली –110058

मुद्रक : नोवा पब्लिकेशनस एंड प्रिंटर्स प्राइवेट लिमिटेड, फरीदाबाद-नई दिल्ली. works@npppl.in

भाग-1
नव निष्ठा

मेरा दोस्त

मेरे बहुत सारे दोस्त हैं। मेरे कुछ दोस्त बड़े हैं। मेरे कुछ दोस्त छोटे हैं। मेरे कई दोस्त बूढ़े भी हैं। मेरे कुछ दोस्त नन्हें-मुन्ने भी हैं।



मेरे कुछ दोस्त ऐसे भी हैं जिनकी पूँछ भी है। कुछ ऐसे दोस्त हैं जिनके पैर ही नहीं हैं। मेरे कुछ दोस्त उड़ते हैं। मेरे कुछ दोस्त तैरते भी हैं। ओह! हो! किताबें भी तो मेरी दोस्त हैं।

लेकिन, मेरा सबसे अच्छा दोस्त कौन है? कौन? कौन? कौन? मेरी माँ!

चित्रांकनः सुविधा मिस्त्री

लेखनः रुक्मिणी बनर्जी

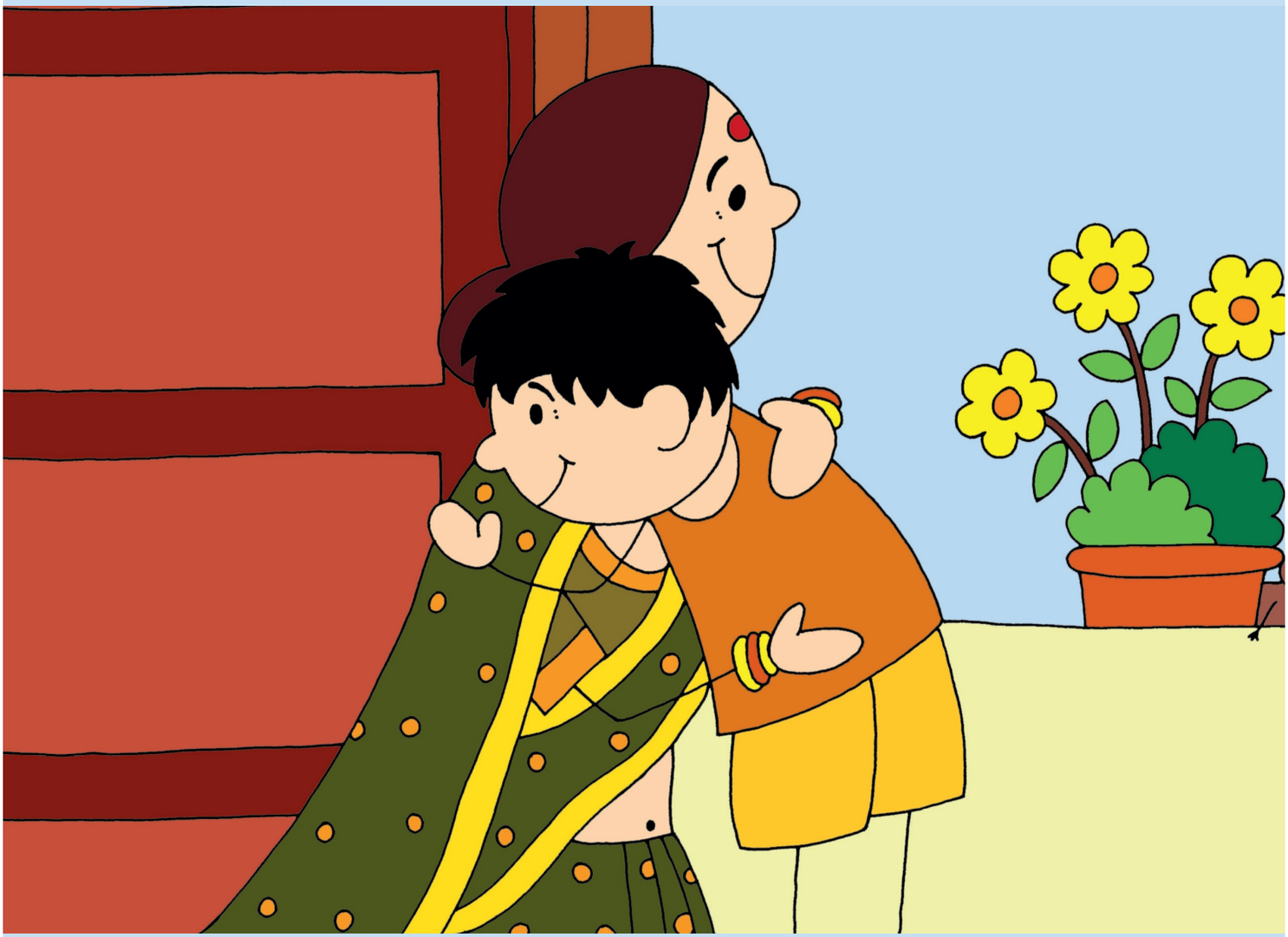

मोटा राजा दुबला कुत्ता

यह है मोटा राजा। मोटे राजा का है दुबला कुत्ता। एक बार की बात है। मोटा राजा और दुबला कुत्ता घूमने निकले। दुबले कुत्ते ने चिड़िया देखी। वह उसके पीछे भागा। मोटा राजा भी दुबले कुत्ते के पीछे भागा।





दोनों भागे। दोनों कई दिनों तक भागते रहे! आख़िर मोटे राजा ने दुबले कुत्ते को पकड़ ही लिया। मोटा राजा अब दुबला हो गया है।

चित्रांकनः परिस्मिता

लेखनः परिस्मिता

पतंग के साथ उड़ना

तेज़ हवा चल रही है। एक पतंग नीचे की ओर आ रही है। एक चिड़िया अपने छोटे बच्चों को उड़ना सिखा रही है। बच्चों को उड़ने में डर लग रहा है। चिड़िया माँ बोली–



डरो नहीं। उस पतंग की डोर थाम लो। बच्चों ने उड़ती पतंग की डोर पकड़ ली। उन्हें उड़ने में मज़ा आने लगा। वाह, हम तो हवा में उड़ने लगे। अचानक उनके मुँह से डोर छूट गई। हवा में वे पंख फड़फड़ाते हुए अब वे बहुत ख़ुश हैं।

चित्रांकनः अजीत नारायण

लेखनः प्रीती सलभ सक्सेना

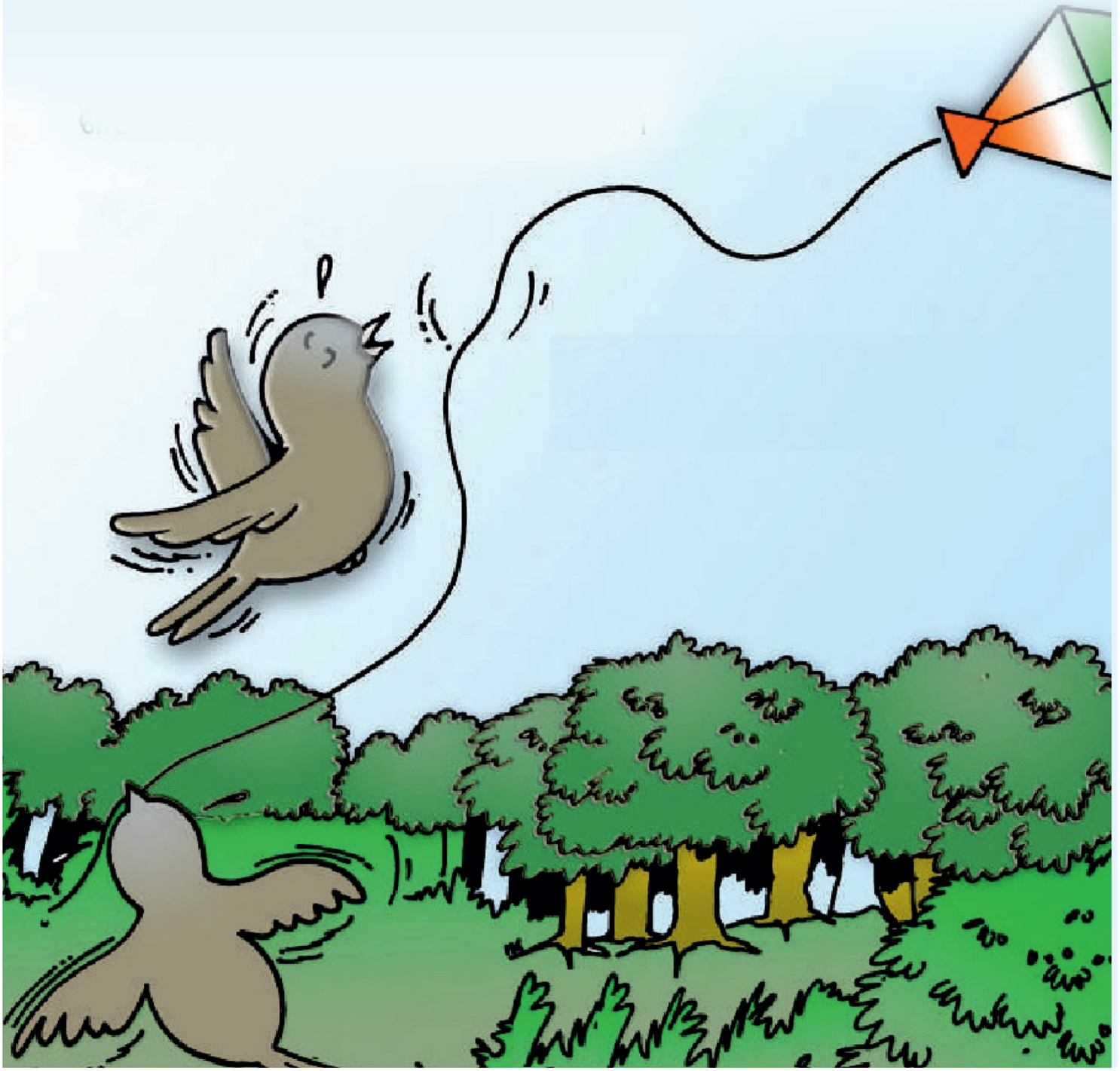

वह हँस दिया

हिरण का बच्चा दौड़ रहा था। वह ख़रगोश से आगे था। वह हाथी से भी आगे था। वह नाला फाँद गया। खंडहर भी पार कर गया। मैदान में पत्थर पड़ा था, ठोकर लगी तो वह गिर पड़ा। पैर में चोट लगने से रोने लगा। बंदर ने पैर सहलाया। वह चुप न

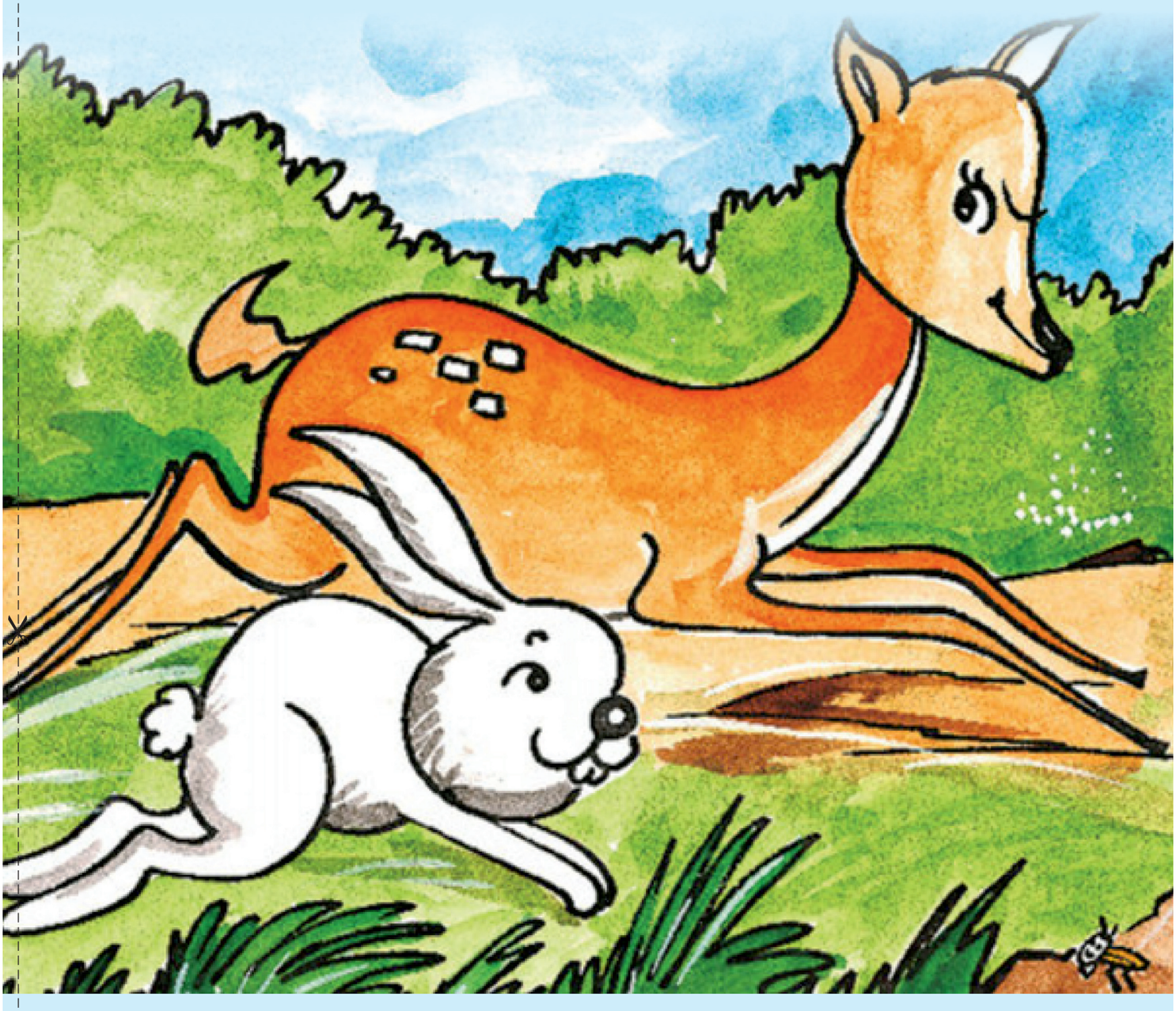

हुआ। भालू दादा ने गोद में उठाया। वह चुप न हुआ। माँ आई। वह बोली – चलो, पत्थर की पिटाई करते हैं। हिरण का बच्चा बोला – नहीं उसे मत मारना वरना वह भी रोने लगेगा। माँ हँस दी। वह भी हँसने लगा। सब हँसने लगे।

चित्रांकनः अजीत नारायण

लेखनः संजीव जयसवाल (संजय)

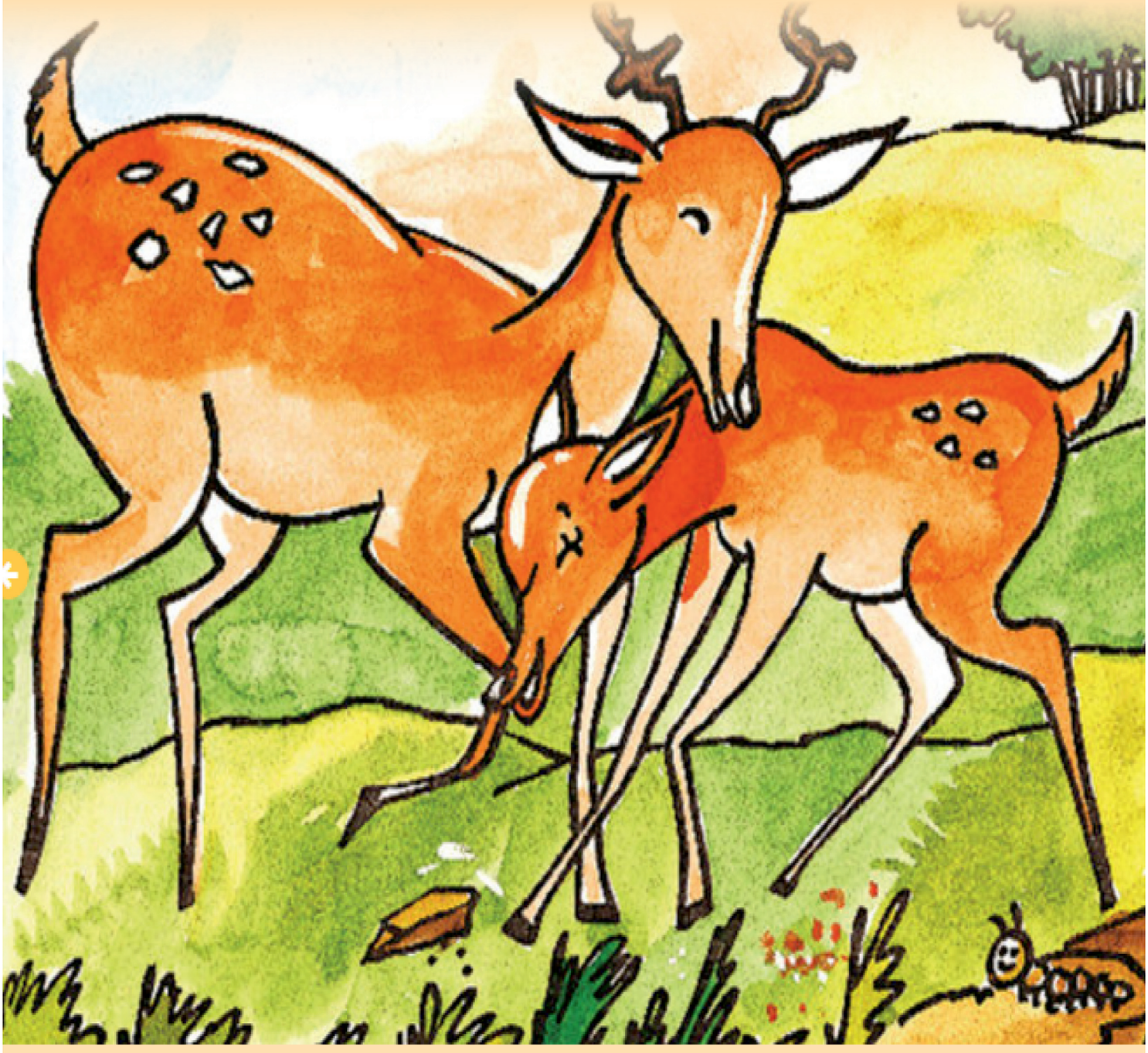

छोटी परी

एक छोटी-सी परी थी। वह हमेशा उदास रहती थी। एक दिन वह चाँद के पास गई। उसने चाँद से उसकी ख़ुशी का कारण पूछा। चाँद ने बताया, वह रोज़ धरती पर जाता है। वहाँ सब उसे मामा कहते हैं।



परी बोली– कल मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगी। अगले दिन परी भी उसके साथ गई। बच्चे चंदा मामा और परी को देखकर बहुत खुश हुए। बच्चे गाना गाने लगे। चंदा मामा आए हैं, परी को साथ लाए हैं। परी भी गाना सुनकर बहुत ख़ुश हुई। अब वह उदास नहीं है।

लेखन: प्रथम



रोटी गई, रोटी आई

कमल के घर में एक कुत्ता था। उसका नाम भौंकू था। एक दिन कमल भौंकू को रोटी देने गया। तभी बंदर उसकी रोटी छीनकर भाग गया। कौए ने वह रोटी देखी। उसने बंदर से रोटी झपट ली। कौआ उड़कर पीपल के



पेड़ पर बैठ गया। पेड़ पर मोर बैठा था। कौआ रोटी बचाने के लिए उड़ा। भौंकू ने शोर मचाया, भौं-भौं-भौं-भौं! कौआ घबरा गया। उसकी चोंच से रोटी छूट गई। भौंकू ने दौड़कर रोटी लपक ली।

चित्रांकनः पार्थासेन गुप्ता

लेखनः अमर गोस्वामी

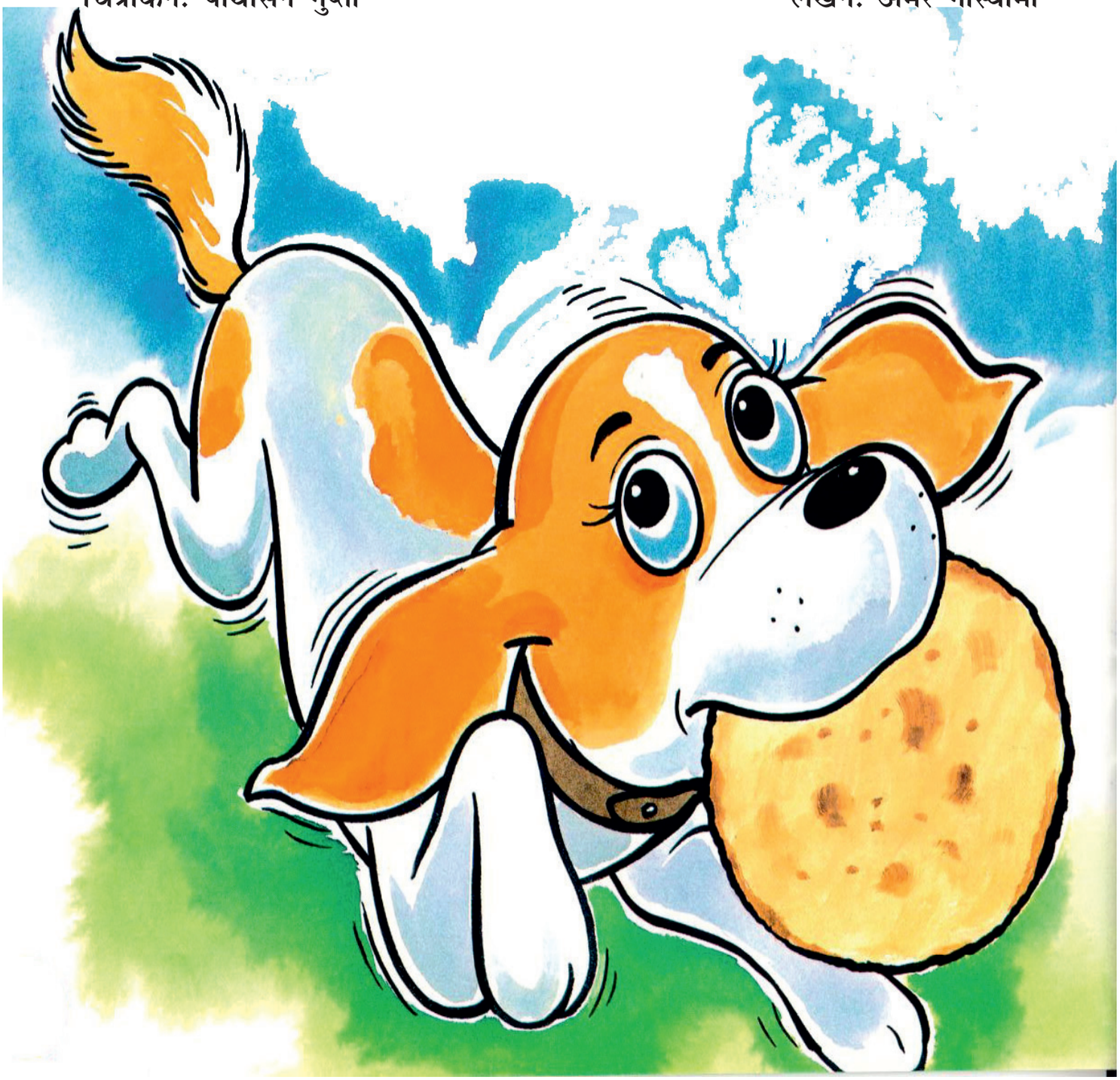

मुर्ग़ा मामू

मुर्गा मामू आज बहुत गुस्से में थे। उसने सोचा कल वह बाँग नहीं देगा, तब कैसे होगा सवेरा। सारी रात वह सोया रहा। किसी के जगाने पर भी वह नहीं जागा। सूरज सिर चढ़ आया। यह देखकर मुर्ग़ा मामू ख़ूब झल्लाए।



किसी के बिना, काम नहीं रुकता। चाहे कोई कितना भी क्यों न इतराए। यह बात मुर्गा मामू को समझ में आ गई।

लेखनः प्रथम



शेर का हौदा

शेर जंगल का राजा था। एक दिन उसे शहर का राजा दिखा। राजा हाथी पर बैठा था। शेर ने भी हाथी पर बैठने की सोची। उसने अपने मन की बात सबको बताई। हौदा बनाने की तैयारी शुरू हो गई।



देखते ही देखते हौदा भी बन गया। हौदा हाथी की पीठ पर रख दिया गया। शेर उछल कर उसमें जा बैठा। हाथी के चलते ही हौदा हिलने लगा। हौदा नीचे गिर गया। शेर भी नीचे जा गिरा। उसने संभलते हुए कहा – भई पैदल चलना सबसे अच्छा है।

चित्रांकनः पार्थासेन गुप्ता

लेखनः अमर गोस्वामी

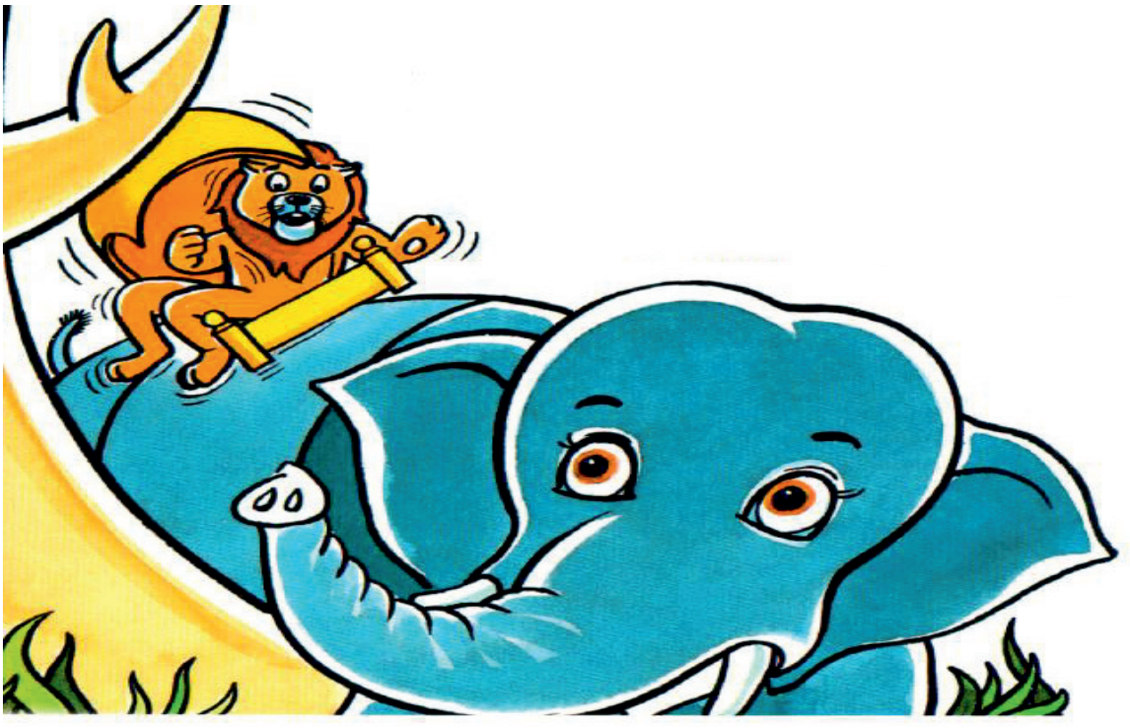



छुक-छुक-छुक

रीना ने स्लेट और चॉक उठाई। वह रेलगाड़ी बनाने लगी। मगर अब डिब्बे कहाँ बने? रीना ने फ़र्श पर एक डिब्बा बनाया। डिब्बे के साथ एक और डिब्बा, फिर एक

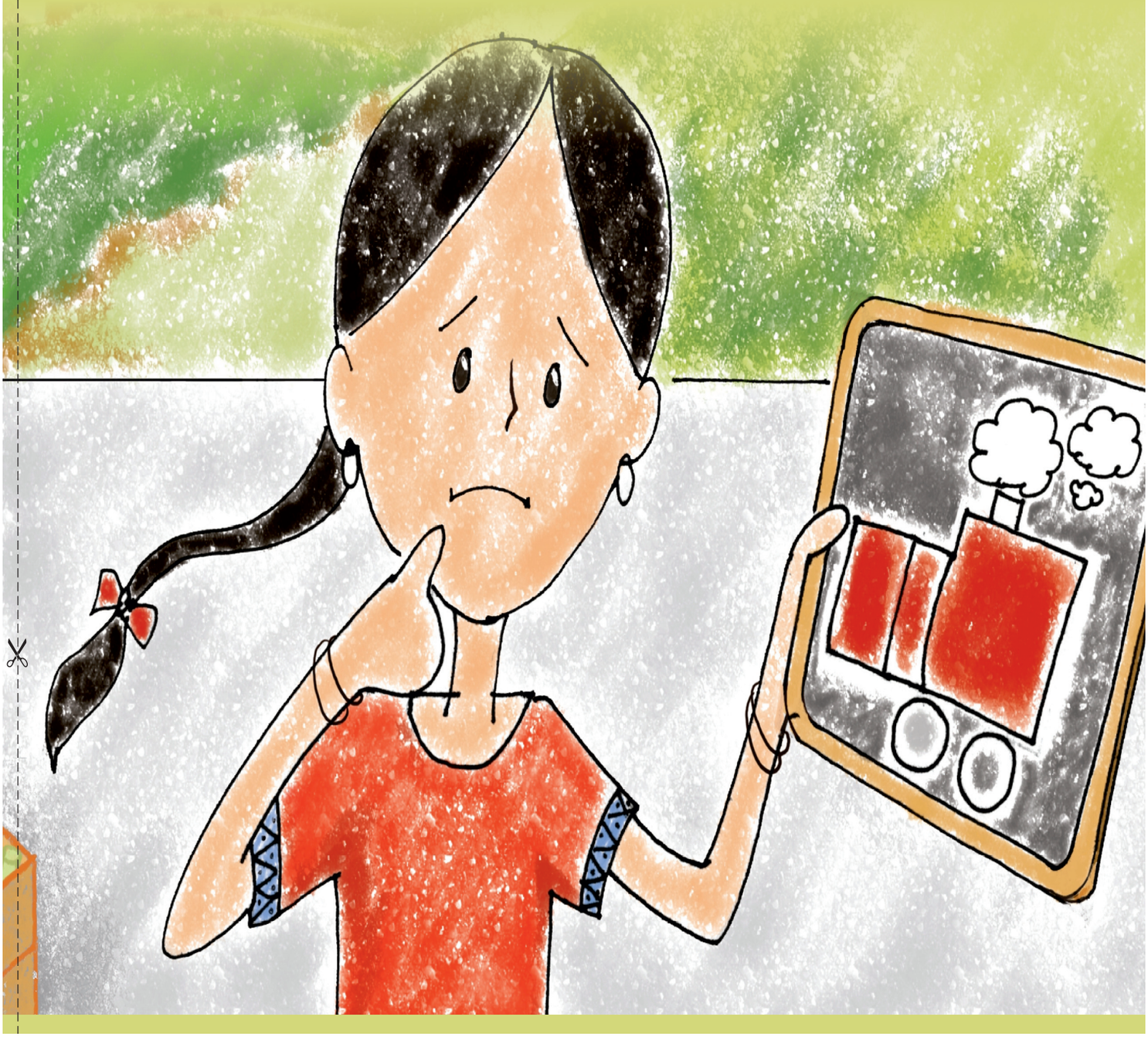

डिब्बा, रीना बनाती चली गई। फिर उसकी चॉक ख़त्म हो गई। उसने उठकर देखा। वाह! पूरे बरामदे में लम्बी रेलगाड़ी बन चुकी थी। रीना की रेल चली छुक-छुक-छुक, इधर से उधर। बहुत दूर तक।

चित्रांकनः सुविधा मिस्त्री

लेखनः विनिता कृष्णा



खेल-खेल में

हाथी का बच्चा था गोलू। ख़रगोश का बच्चा था छोटू। दोनों साथ-साथ खेलते थे। एक दिन गोलू बोला - आज कोई नया खेल खेला जाए। छोटू बोला - तुम बैठो। मैं तुम्हारी पीठ के ऊपर चढ़ता हूँ। गोलू बैठ गया। छोटू ने छलाँग मारी। वह गोलू की पीठ पर चढ़ गया। अब तुम

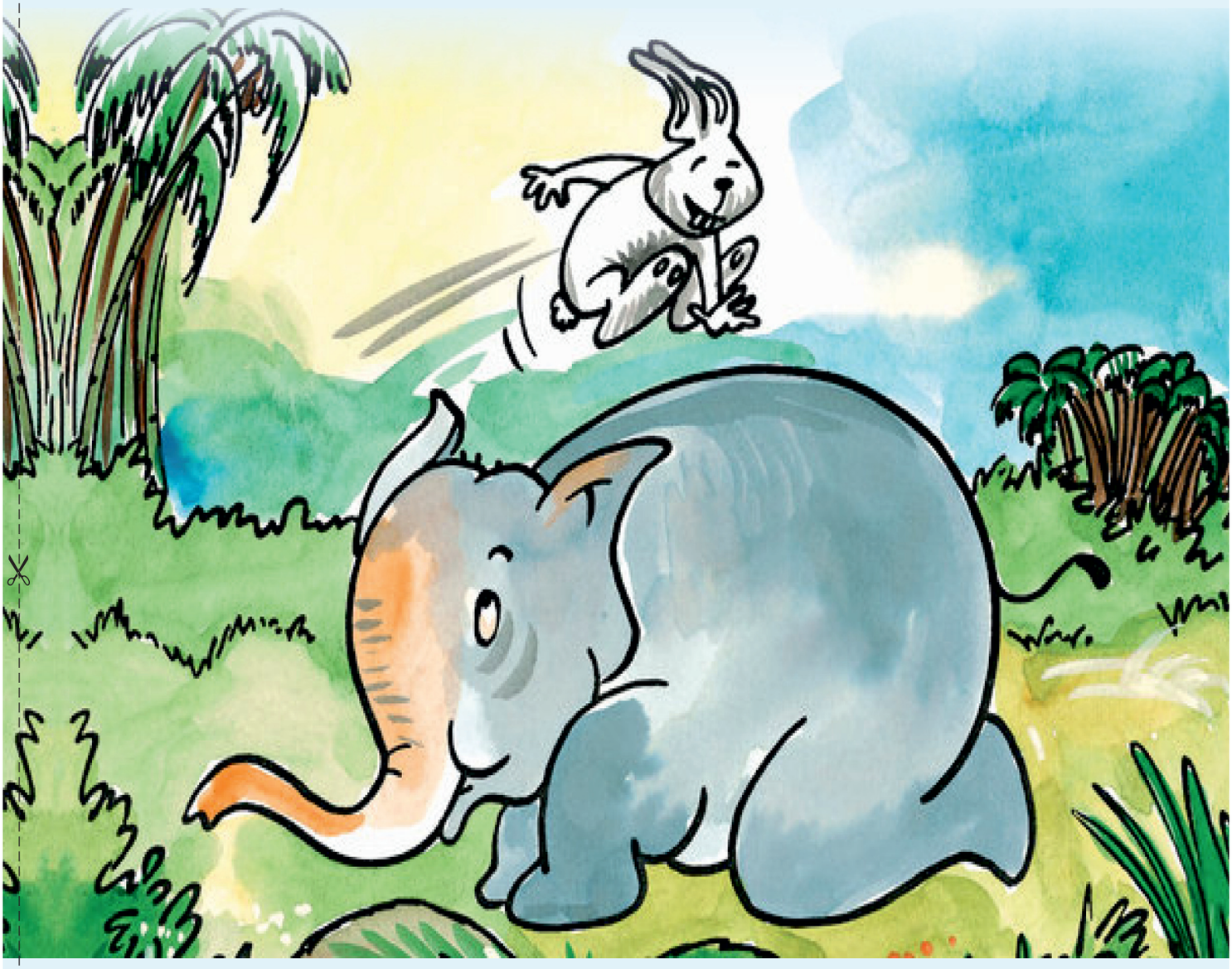

बैठो, मैं कूदूँगा - गोलू बोला। तुम! छोटू घबरा गया। गोलू ने कूद कर दिखाया।

ऐसे! धप...धप...धप... गोलू पर नारियल बरसने लगे। गोलू घबरा कर भाग गया। एक छोटा-सा नारियल छोटू पर भी गिरा। उसने सोचा- हाथी से ज़्यादा अच्छा है यह नारियल।

चित्रांकनः अजीत नारायण

लेखनः संजीव जयसवाल (संजय)

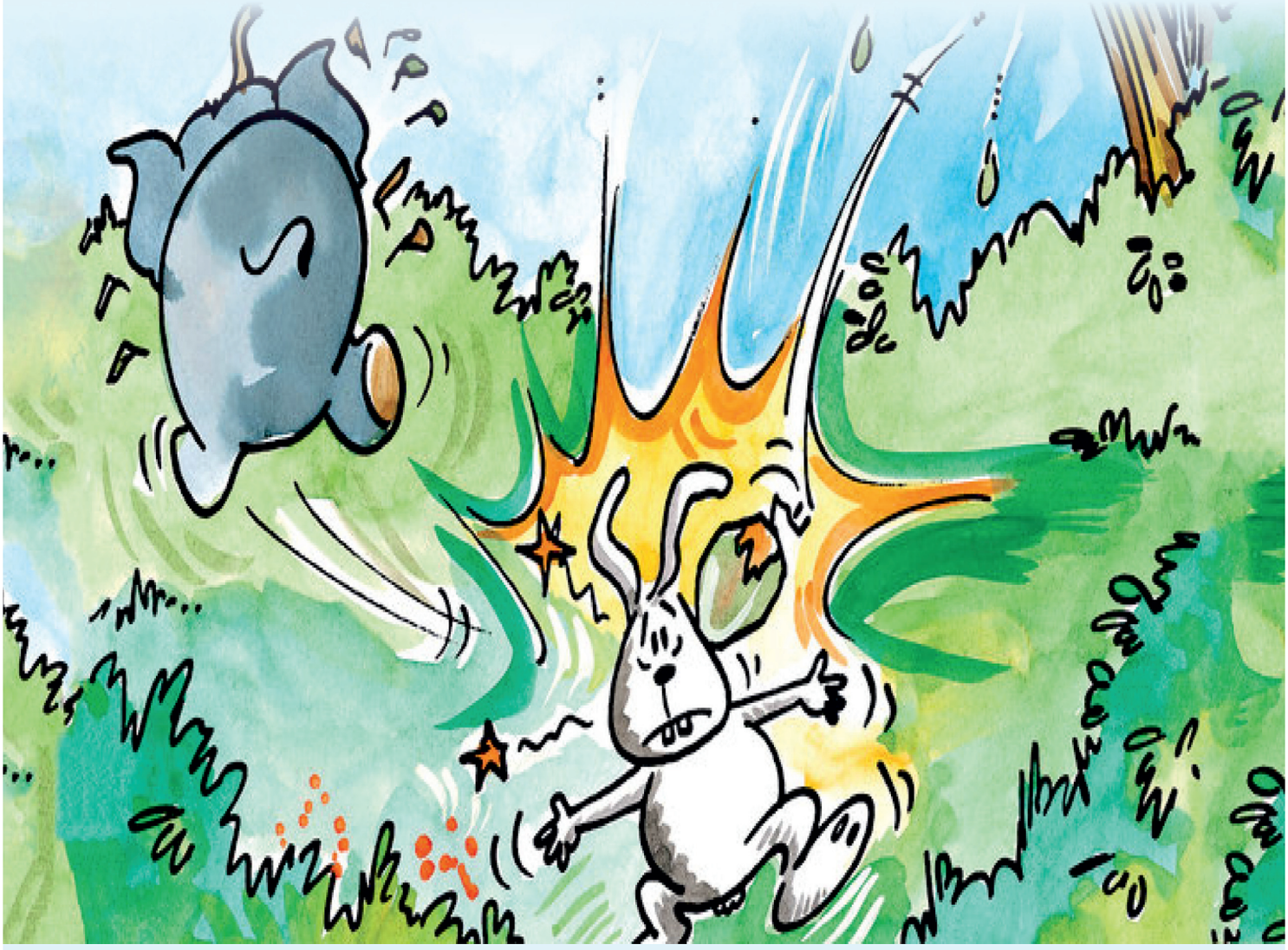

बंदर और हाथी

एक हाथी था। वह बग़ीचे में घूम रहा था। आम के पेड़ पर एक बंदर बैठा था। बंदर को शरारत सूझी। उसने आम खाकर गुठली हाथी पर फेंकना शुरू कर दिया। गुठली कभी हाथी के कान पर तो कभी सूँड पर लगती। हाथी परेशान हो गया।



हाथी ने इधर-उधर देखा। उसे पेड़ की डाल पर बंदर नज़र आया। उसने बंदर को सूँड में लपेट लिया। बंदर डर गया। उसने कान पकड़कर हाथी से माफ़ी माँगी। हाथी ने उसे छोड़ दिया। अब दोनों दोस्त बन गए हैं।

लेखनः प्रथम

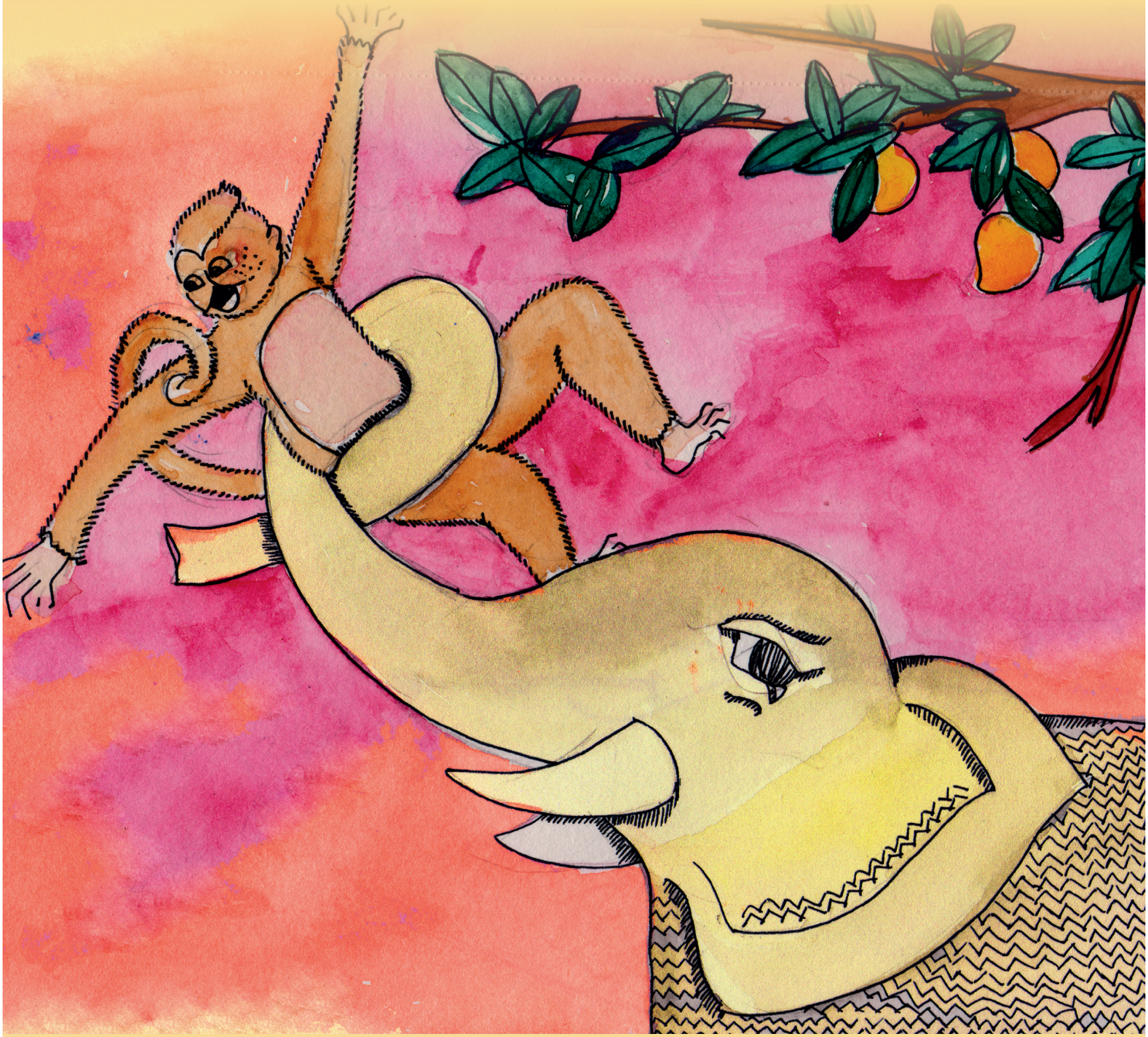

टप टप टपक

एक जंगल था। ख़ूब घना जंगल। एक दिन झमाझम पानी बरसा। थोड़ी देर बाद बारिश रुक गई। सारे जानवर बाहर निकले। तभी आवाज़ आई – टप–टप–टपक। सब घबरा गए।

सबने सोचा यह कैसी आवाज़ है? सारे बड़े जानवर डर कर भाग गए। चींटी ने कहा – चलो साथियो, हम



टप-टप-टपक को ढूँढें। चूहा बोला - शाबाश चींटी बहन! जुगनू बोला - मैं आगे रहूँगा। बिल्ली बोली - मैं साथ हूँ। ख़रगोश ने कहा - मैं भी पीछे नहीं रहूँगा। सब टप-टप-टपक को ढूँढने चले। फिर सबने देखा, बरसात का पानी पत्तों पर टपक रहा था... टप-टप-टपक।

चित्रांकनः साउ किमसन

लेखनः अमर गोस्वामी



नटखट कुत्ता

हमारे परिवार में चार लोग हैं। मम्मी, पापा, मैं और चिंकू। चिंकू जहाँ जाता है मैं भी पहुँच जाता हूँ। मुझे चिंकू की देखभाल करनी पड़ती है। मैं उससे बड़ा जो हूँ। चिंकू कभी-कभी लापरवाही करता है। घर की चौकीदारी मुझे ही करनी पड़ती है।





हम एक साथ काम करते हैं। खेलते भी साथ-साथ हैं। माँ से हमें डाँट भी पड़ती है। जब चिंकू स्कूल में होता है तब मैं माँ की मदद करता हूँ। मैं कौओं को पापड़ से दूर रखता हूँ। मैं एक अच्छा कुत्ता हूँ। मैं बिल्लियों को डराता नहीं हूँ।

चित्रांकनः दीपा बलस्वार

लेखनः कंचन बैनर्जी

ख़ुशबू

ख़ुशबू सारा दिन अपना अंगूठा चूसती रहती है। एक दिन वह चिड़ियाघर गई। उसने वहाँ हाथी का बच्चा, हिरन का बच्चा और छोटी-सी बंदरिया देखी।

ख़ुशबू उन्हें देखकर सोचने लगी। सभी कितना मज़े से खेल रहे हैं। तभी उसने देखा, एक बच्चा पापा के कंधों



पर बैठकर हवा में हाथ लहरा रहा है। एक लड़की फ़ोटो खींच रही है। कुछ बच्चे एक दूसरे का हाथ पकड़कर कूद रहे हैं। ख़ुशबू ने झट से अपना अंगूठा मुँह से निकाला। वह दौड़कर मम्मी-पापा के पास गई। दोनों का हाथ पकड़कर ज़ोर-ज़ोर से झूलने लगी।

चित्रांकनः शुभाश्री माथुर

लेखनः प्रथम



आलू-मालू-कालू

मालू बग़ीचे में सब्ज़ी तोड़ने गया। मालू ने तोड़े लाल टमाटर, लम्बे बैंगन और हरी-भरी भिण्डी। दादी ने कहा - शाबाश मालू! जाओ थोड़े आलू भी ले आओ। मालू ने सारे पेड़, बेलें और पौधे देखे। आलू कहीं दिखाई नहीं दिए। वह बोला - दादी, आलू अभी उगे नहीं।





दादी ने समझाया। बहुत आलू उग रहे हैं, ध्यान से देखो। मालू फिर गया बग़ीचे में। पीछे-पीछे कालू भी चल पड़ा। मालू आलू खोजने लगा। तभी 'भौं, भौं' की आवाज़ आई। ओ हो! रुक-रुक कालू। मालू दौड़ा। बग़ीचा ख़राब मत कर। मालू ने देखा, कालू ने गड्ढा खोदा हुआ था। खुदी मिट्टी में थे मोटे-मोटे आलू! वाह कालू! ढूँढ निकाले आलू-टोकरी भर कर बोला मालू।

चित्रांकनः सुविधा मिस्त्री

लेखनः विनिता कृष्णा

बंटी और बबली

बंटी को तितलियाँ बहुत पसंद है। उसके साथ खेलना भी उसे पसंद है। वह चिड़ियों के साथ भी खेलती है। उसे कागज़ की नाव बनाना भी अच्छा लगता है। उसे रेत के क़िले बनाने में मज़ा आता है। माँ बंटी को हाथ-मुँह धोने के लिए कहती है। बंटी उनकी बात नहीं मानती। उसे साबुन अच्छा नहीं लगता। एक रात उसने सपना देखा। उसके रेत के



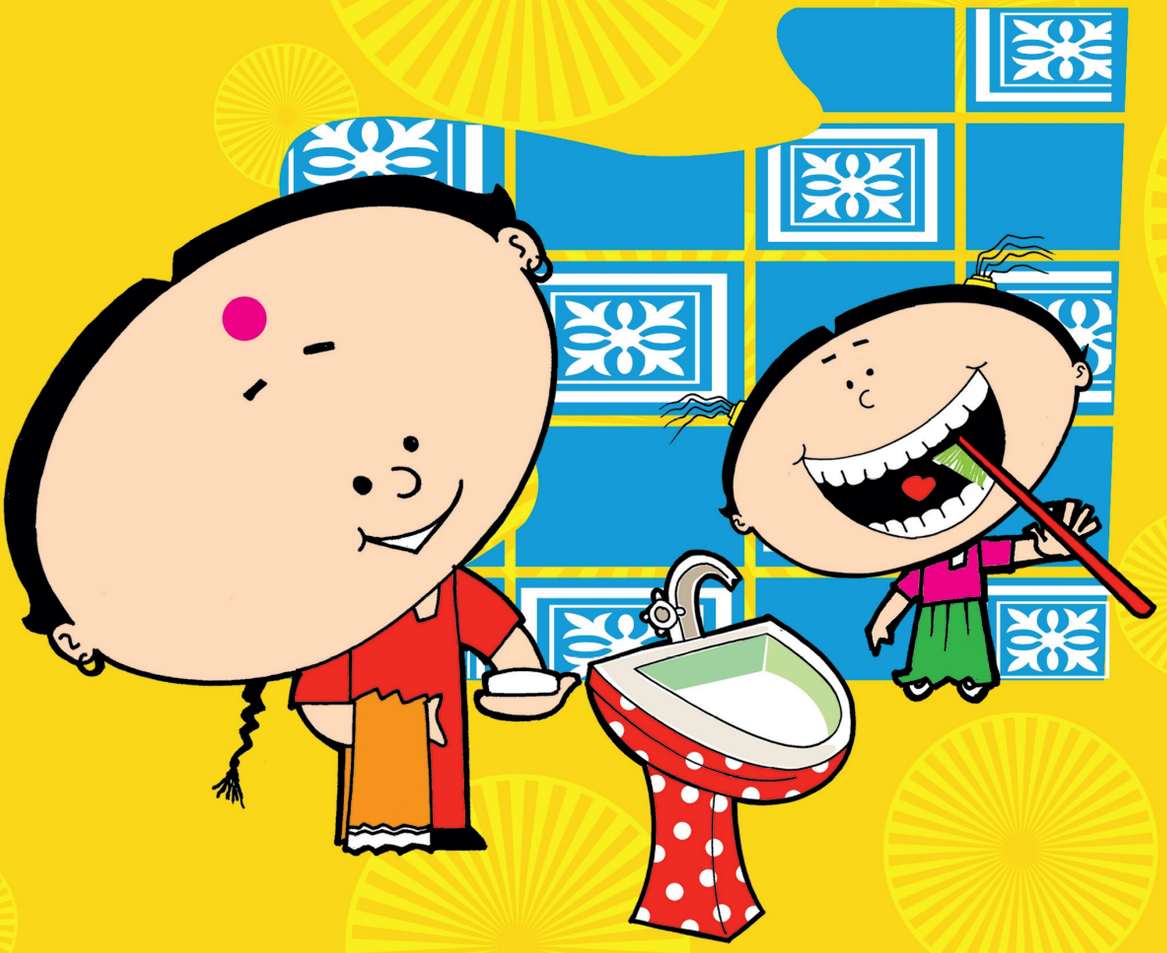

क़िले को कीटाणुओं ने घेर लिया है। सबने क़िले पर हमला कर दिया। कीटाणु बंटी के पीछे पड़ गए। वह जान बचाने के लिए भागी। तभी साबुन राजा अपनी झाग की सेना लेकर वहाँ पहुँच गए। साबुन राजा ने कीटाणुओं पर हमला बोल दिया। साबुन राजा ने कीटाणुओं का सफ़ाया कर दिया। आजकल बंटी को नहाने में मज़ा आता है। वह दाँत साफ़ करती है और मल-मल कर नहाती है।

चित्रांकनः सोरित गुप्तो

लेखनः सोरित गुप्तो

आज बहुत ठंड है

सुबह बहुत ठंड थी। घना कोहरा भी था। छुट्टी के बाद स्कूल खुलने वाला था। चुनमुन अभी भी सोना चाहती थी। उसका उठने का मन नहीं कर रहा था। माँ ने आवाज़ भी नहीं लगाई। पता नहीं माँ ने क्यों नहीं जगाया? चुनमुन ने सोचा – लगता है माँ भूल गई है। कुछ देर और सो लिया जाए। थोड़ी देर बाद चुनमुन को लगा कि अब



तो देर हो ही जाएगी। ख़ुद ही उठ जाना चाहिए। आँख मलते हुए चुनमुन माँ के पास दूसरे कमरे में पहुँची। उसने बड़ी मासूमियत से माँ से पूछा - आज आपने जगाया क्यों नहीं? माँ ने प्यार से सिर पर हाथ फेरते हुए कहा - दो दिन छुट्टी बढ़ गई है। फिर क्या था चुनमुन दुबक गई फिर से रज़ाई में।

चित्रांकनः शुभाश्री माथुर

लेखनः रिचा चिंतन



नकलची मूमू

एक थी मूमू। वह जब भी किसी को कुछ करते देखती, खुद भी वही करने लगती। एक दिन वह तालाब पर गई। वहाँ एक लड़की नाव चला रही थी। तालाब के किनारे कुछ बच्चे खेल रहे थे। तभी उसकी नज़र दो बत्तख़ों पर पड़ी। वे दोनों तालाब में तैर रही थीं। बत्तख़ों की माँ किनारे पर टहल रही थी। मूमू उन्हें ग़ौर से देखने लगी। उन्हें देखकर उसका भी मन तैरने को किया। मूमू ने बत्तख़ों की माँ से पूछा–मैं भी

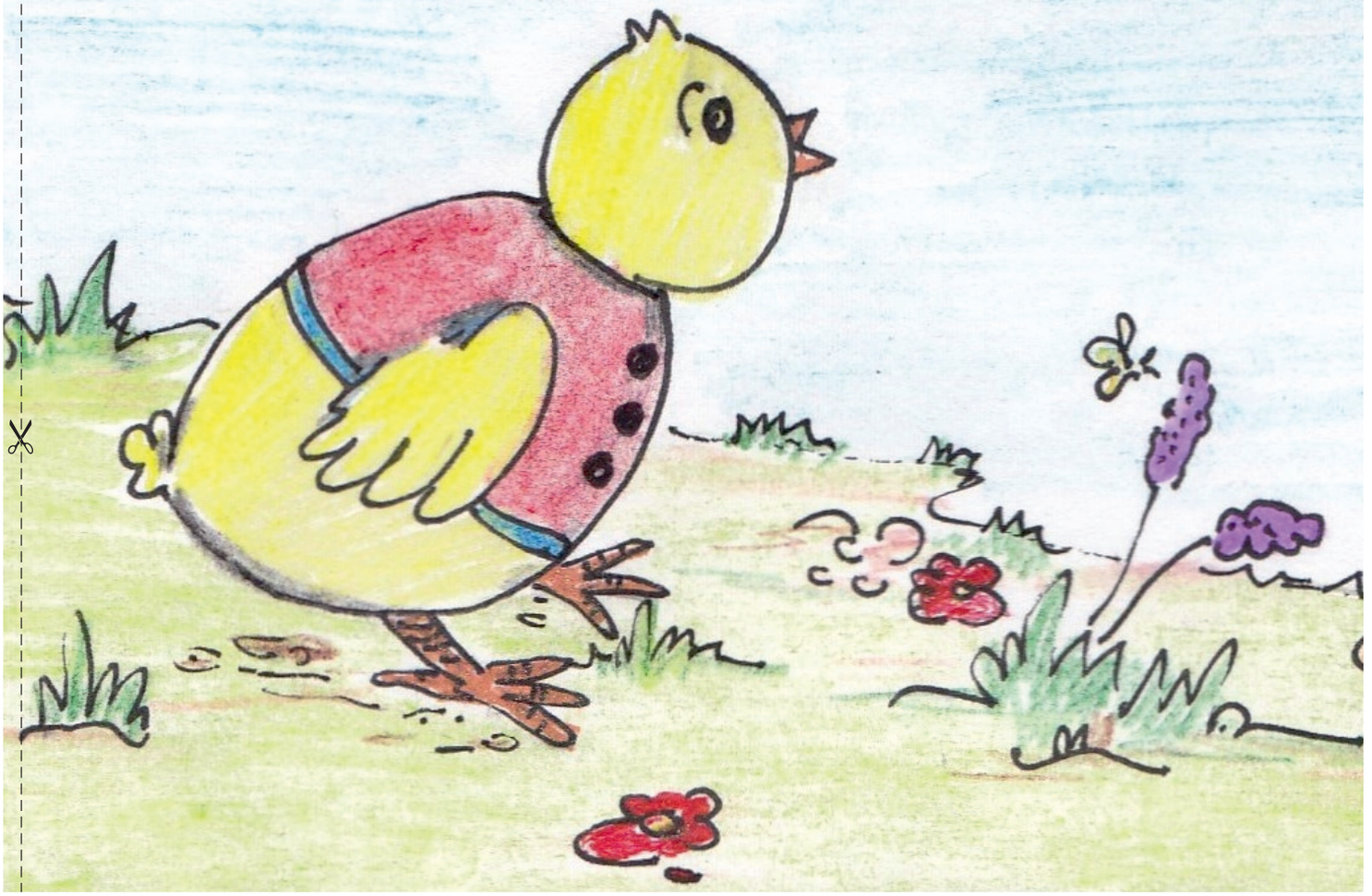

पानी में तैर सकती हूँ। बत्तख़ की माँ ने कहा – तुम्हें तैरना आता हो तो तैर सकती हो। मूमू दौड़कर पानी में कूद गई। उसे तैरना नहीं आता था। वह पानी में डूबने लगी। वह ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगी। 'बचाओ बचाओ।' बत्तख़ की माँ पानी में गई। वह मूमू को बचा कर बाहर ले आई। अब मूमू किसी की नक़ल नहीं करती।

चित्रांकनः चिंग चिंग ली, मेरी वून

लेखनः एनी बेसेंट



चाँद का तोहफ़ा

हम सब मेला देखने गए। पापा ने चिन्टू के लिए खुबसूरत चश्मा खरीदा। मेरे लिए एक चमकती नीली टोपी खरीदी। घर जाते समय ज़ोर की हवा चली। हवा मेरी टोपी उड़ा ले गई। टोपी पीपल की डाल पर लटक गई। मैं खूब रोया।

मैंने रात का खाना भी नहीं खाया। देर रात में, चाँद निकला।





उसने मेरी टोपी पहन रखी थी। वह खुशी से मुस्कराया। मैं भी मुस्कराया। अगले दिन माँ ने मुझे एक नई लाल टोपी दी। उस रात चाँद और मैंने अपनी-अपनी टोपियाँ पहनीं और मुस्कराए। हम खुश थे। आपका क्या ख्याल है? क्या सूरज को टोपी की ज़रूरत है?

चित्रांकनः अंगी और उपेश

लेखनः रोहिणी नीलकानी

सूरज और शेर सिंह

सूरज के पास एक गेंद है। वह गेंद शेर के जैसी दिखती है। वह उसे शेर सिंह बुलाता है। एक दिन सूरज और शेर सिंह खेल रहे थे। तभी शेर सिंह हवा में उछला। फिर सीधे पानी में गिर गया। छपाक!

एक कुत्ते ने शेर सिंह को मुँह में दबोच लिया। शेर सिंह ने अपने दोनों हाथों से कुत्ते का मुँह खोला और बाहर कूद



गया। वह एक फिसलपट्टी पर जा गिरा। वह ज़ूँ ... से नीचे फिसल गया। उसके पीछे एक मोटा लड़का भी फिसल रहा था। धम्म! मोटा लड़का शेर सिंह पर आ गिरा। शेर सिंह पिचक गया। शेर सिंह ने मोटू को चुटकी काटी! फिर शेर सिंह एक सुरंग में जा गिरा। वहाँ वह गोल-गोल घूमा।

सुरंग से बाहर निकलते ही उसे सूरज मिल गया। सूरज ने शेर सिंह को गोद में उठा लिया।

चित्रांकनः सुविधा मिस्त्री

लेखनः अनुपा लाल



अभी नहीं, अभी नहीं!

राहुल ने दादा से पूछा – क्या मैं कुछ लड्डू खा लूँ? अभी नहीं बेटा, कल खा लेना। राहुल ने माँ से पूछा – क्या मैं ये नए कपड़े पहन लूँ? अभी नहीं बेटा, कल पहन लेना। मैं कल तक रुकना नहीं चाहता।

उसने पापा से पूछा – क्या मैं उस सुंदर से डिब्बे को खोल लूँ? नहीं, नहीं। तुम्हें थोड़ा रुकना पड़ेगा। लेकिन

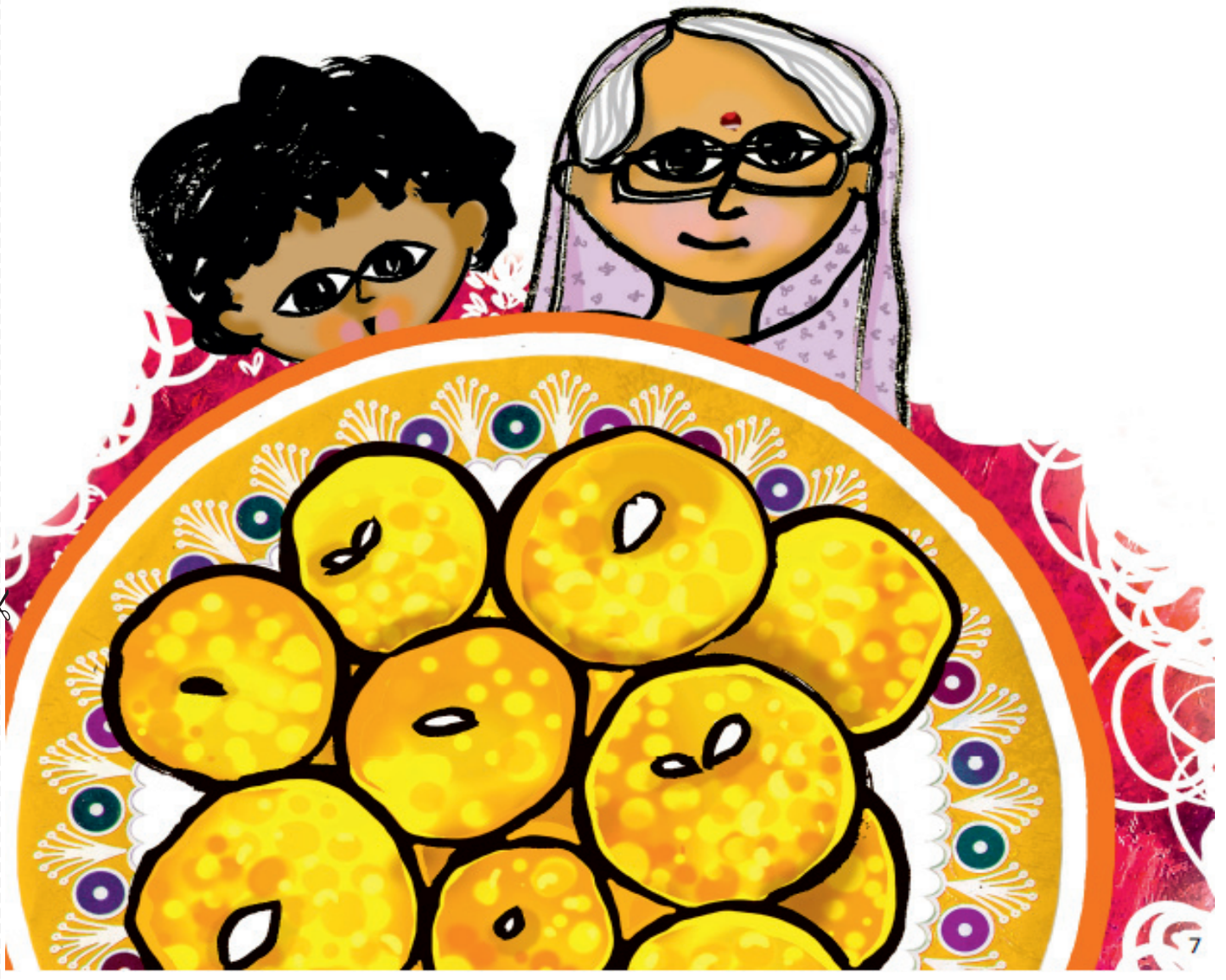

मैं रुकना नहीं चाहता। बड़े हमेशा क्यों कहते हैं, अभी नहीं, अभी नहीं?

उस रात राहुल ग़ुस्से में सो गया। अगले दिन दादी ने कहा – तुम ये लड्डू खा सकते हो। माँ ने कहा – अब तुम ये कपड़े पहन सकते हो। पापा ने कहा – तुम यह डिब्बा खोल सकते हो। सभी एक साथ बोले – राहुल जन्मदिन बहुत-बहुत मुबारक हो।

चित्रांकनः रूचि शाह

लेखनः रोहिणी नीलकानी



भीमा गधा

आज भीमा को फिर से डाँट पड़ी। उसकी आँख आज भी नहीं खुली थी। इसलिए भीमा गधा बहुत उदास था। पड़ोस की गाय गौरी ने पूछा - भीमा तुम उदास क्यों हो? भीमा ने बताया - मेरी नींद नहीं खुलती। गौरी ने समझाया - कोई बात नहीं, मैं तुझे उठा दूँगी। दूसरे दिन

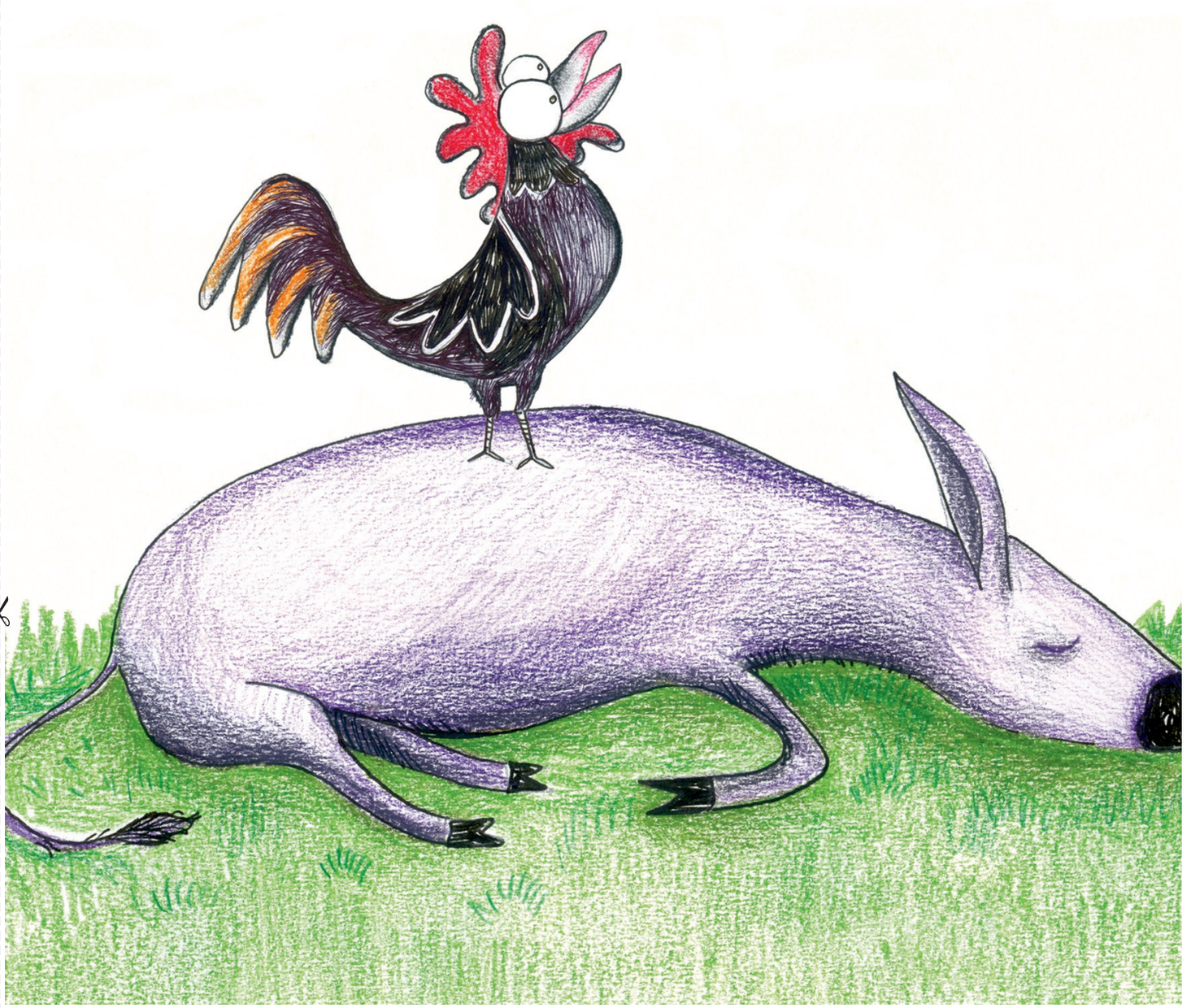

गौरी रंभाती रही पर भीमा नहीं जागा। भीमा चीनू मुर्ग़े से मिला। भीमा बोला - तुम्हारी आवाज़ से तो सुबह सभी जाग जाते हैं। तुम मुझे भी जगा देना। चीनू बोला-ठीक है। अगली सुबह चीनू 'कुक़ड़ू-कूँ, कुक़ड़ू-कूँ' बाँग लगाता रहा। मगर भीमा पर कोई असर नहीं हुआ। भीमा निराश हो गया। अगले दिन सुबह-सुबह एक मक्खी उसकी नाक पर जा बैठी। आ...आ... आक छीं! छींक आते ही भीमा की नींद खुल गई।

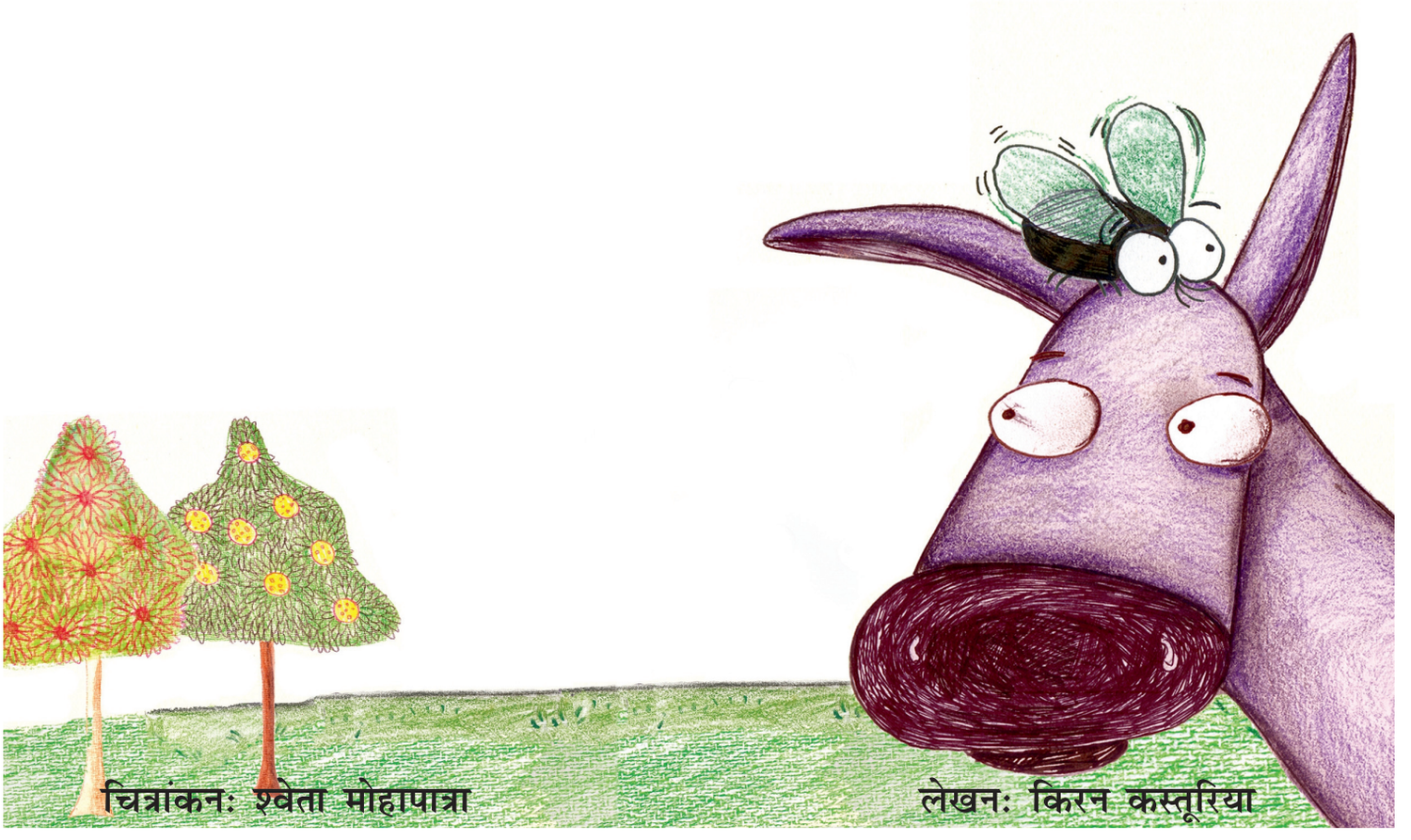

चित्रांकनः श्वेता मोहापात्रा

लेखनः किरन कस्तूरिया

मेरी, नहीं, मेरी मछली

एक सुबह सोनू जल्दी उठा। उसने कहा – चल कर थोड़ी मछलियाँ पकड़ी जाए। तालाब के रास्ते में उसे मोनू मिल गया। वे दोनों दोस्त थे। सारा दिन एक साथ खेलते थे। मुनिया ने उन्हें मछली पकड़ने की बंसी ले जाते हुए देखा।

हम मछली पकड़ने तालाब जा रहे हैं। तुम हमारे साथ चलोगी? छोटी मुनिया ने कुछ देर सोचा और बोली – बिना पानी के तो मछलियाँ मर जाएँगी। उन्होंने मुनिया की बात नहीं मानी। वे सीधे तालाब पर गए।



मछलियाँ तैरती हुई दिखीं। तभी उन्हें एक बड़ी-सी मछली दिखाई दी। दोनों ने अपनी-अपनी बंसी कस कर पकड़ ली। सोनू चिल्लाया - मेरी मछली। मोनू भी चिल्लाया - नहीं, मेरी मछली। सोनू ने ज़ोर से खींचा, मोनू ने भी ज़ोर से खींचा। दोनों की बंसी टूट गई। सोनू ज़मीन पर गिर पड़ा। मोनू पानी में गिर गया।

यह कैसे हुआ? मछलियों ने दोनों की रस्सियाँ बाँध दी थीं।

चित्रांकनः सौम्या मेनन

लेखनः सूरज जे मेनन

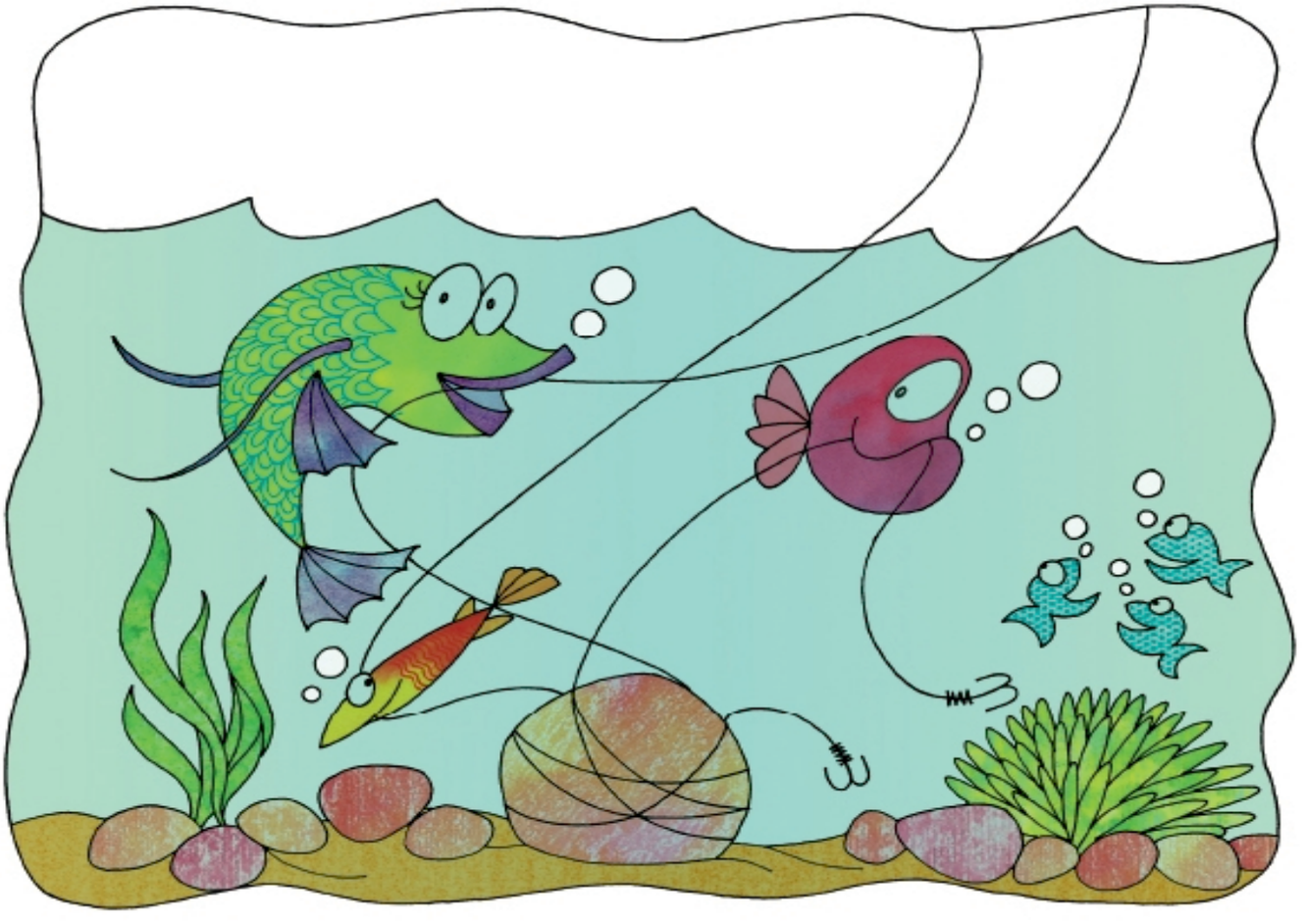

मुझे वह वाला चाहिए!

माँ की आज छुट्टी थी। वह एक पुस्तक पढ़ रही थीं। अनिल की भी छुट्टी थी। वह माँ से बोला – उस नीले बक्से में क्या है? मुझे वह देखना है। माँ बोलीं – बाद में देख लेना। अनिल कुर्सी पर चढ़कर बक्सा उतारने लगा। माँ चिल्लाईं। माँ अनिल को लेकर बाज़ार गईं। अनिल बाज़ार में गुस्से में था। उसने एक संतरे की ओर इशारा किया – मुझे वह वाला चाहिए। सभी संतरे नीचे गिर जाएँगे – दुकानदार बोला।





अनिल का मन ख़राब हो गया। तभी उसे फूलों की टोकरी दिखी। वह फूल लेने दौड़ा। बेटा, फूलों को हाथ नहीं लगाना! फूल मुरझा जाएँगे - फूलवाली ने कहा। अनिल ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा। पास ही में टोकरी में बहुत सारे पिल्ले थे। काला पिल्ला नीचे था। तभी अम्मा बोली - मुझे काला पिल्ला चाहिए। अनिल ने अचानक से रोना बंद कर दिया। नहीं, अम्मा वह वाला नहीं यह भूरा वाला ले लेते हैं। अनिल ने बड़े प्यार से पिल्ला उठाया। मैं तुम से बहुत गुस्सा हूँ, अम्मा! सारे पिल्ले ही नीचे गिरा देतीं। अम्मा मुस्कराने लगीं।

चित्रांकनः सोम्या मेनन

लेखनः माला कुमार



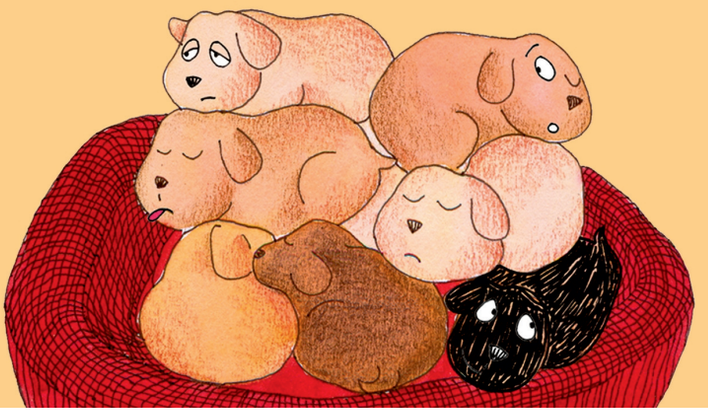

बारहखड़ी कार्ड

अ	आ	इ	ई	उ	न्न	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः
क	का	कि	की	कु	कू	के	कै	को	कौ	कं	कः
ख	खा	खि	खी	खु	खू	खे	खै	खो	खौ	खं	खः
ग	गा	गि	गी	गु	गू	गे	गै	गो	गौ	गं	गः
च	चा	चि	ची	चु	चू	चे	चै	चो	चौ	चं	चः
छ	छा	छि	छी	छु	छू	छे	छै	छो	छौ	छं	छः
ज	जा	जि	जी	जु	जू	जे	जै	जो	जौ	जं	जः
ट	टा	टि	टी	टु	टू	टे	टै	टो	टौ	टं	टः
ठ	ठा	ठि	ठी	ठु	ठू	ठे	ठै	ठो	ठौ	ठं	ठः
ड	डा	डि	डी	डु	डू	डे	डै	डो	डौ	डं	डः
त	ता	ति	ती	तु	तू	ते	तै	तो	तौ	तं	तः
थ	था	थि	थी	थु	थू	थे	थै	थो	थौ	थं	थः

द	दा	दि	दी	दु	दू	दे	दै	दो	दौ	
दं	दः									
प	पा	पि	पी	पु	पू	पे	पै	पो	पौ	
पं	पः									
फ	फा	फि	फी	फु	फू	फे	फै	फो	फौ	फं
फः										
य	या	यि	यी	यु	यू	ये	यै	यो	यौ	
यं	यः									
र	रा	रि	री	रु	रू	रे	रै	रो	रौ	
रंरः										
श	शा	शि	शी	शु	शू	शे	शै	शो	शौ	शं
शः										
ष	षा	षि	षी	षु	षू	षे	षै	षो	षौ	
षं	षः									

भाग–2

निष्ठा

सब उस बिल्ली की ग़लती है?

नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। आप इन में से कितने शब्दों के अर्थ जानते हैं या इनसे परिचित हैं। उन शब्दों के सामने सही (✓) का निशान लगाएँ और उनके अर्थ लिखें।

शब्द	पहले से जानते हैं	समूह में बातचीत के बाद जाना	शब्द के अर्थ लिखें
ग़लती			
टुलटुल			
होम वर्क			
मिस			
ज़रूरत			
मरम्मत			
रसोई			
मुर्ग़ी			
गोश्त			
सालन			
रोटियाँ			
दुकान			
बंदर			
ज़रूरत			
फँसना			
मैडम			
दुकान			

निर्देश : प्रिय दोस्तो, पाठ पढ़ने से पहले इन शब्दों को ज़रूर पढ़ें और इनके अर्थ जानने का प्रयास करें। अब आप अपने–अपने समूह में इन शब्दों पर बातचीत करें। ये प्रक्रिया पाठ को पढ़कर समझने में आपकी सहायता करेगी।

सब उस बिल्ली की ग़लती है?

कक्षा में मैडम ने टुलटुल से पूछा, "तुमने अपना होम वर्क क्यों नहीं किया?" "मिस, सब उस बिल्ली की ग़लती है। अगर वह उस पेड़ पर नहीं फँसी होती तो मुझे चढ़ने के लिए सीढ़ी की ज़रूरत नहीं पड़ती। सीढ़ी की मरम्मत की ज़रूरत भी नहीं पड़ती। मैं मरम्मत नहीं करता तो छोटी जागती नहीं। छोटी अगर जागी नहीं होती तो माँ रसोई से बाहर भागी न होतीं। माँ बाहर नहीं भागतीं तो बंदर अंदर नहीं घुसा होता। न ही बंदर ने सारा खाना खाया होता। अगर बंदर ने सारा खाना न खाया होता तो मेरे पिताजी दुकान



से मुर्ग़ी के गोश्त का सालन और रोटियाँ नहीं लाए होते। अगर पिताजी ने दुकान से मुर्गी के गोश्त का सालन और रोटियाँ नहीं लाए होते तो कुत्ता उनके पीछे-पीछे घर तक नहीं आया होता। अगर कुत्ता उनके पीछे-पीछे घर नहीं आया होता तो कुत्ते ने होम वर्क नहीं खाया होता।"

तो तुम कह रहे हो कि कुत्ते ने तुम्हारा 'होम वर्क' खा लिया?

"जी मिस, सब उस बिल्ली की ग़लती है।"



Translated by Manisha
Original story It's All the Cat's Fault! by Anushka Ravishankar
Illustrated by Priya Kuriyan

सब उस बिल्ली की ग़लती है

1. मैडम ने टुलटुल से क्या पूछा?

2. कुत्ता पिताजी के पीछे–पीछे घर तक क्यों आया?

3. टुलटुल की तरह आपने भी कभी न कभी कोई बहाना बनाया होगा, ज़रा सोचकर बताएँ कि आपने किन–किन कार्यों के लिए बहाना बनाया है?

4. 'होम वर्क' शब्द सुनकर आपके मन में जो शब्द आ रहे हैं, उन्हें लिखें।

5. आपको क्या लगता है कि टुलटुल सच बोल रहा है या बहाना बना रहा है? कारण सहित अपनी राय लिखें?

6. इस कहानी से आपने कौन–से नए शब्द सीखे? नीचे लिखें।

बाँस

नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। आप इन में से कितने शब्दों के अर्थ जानते हैं या इनसे परिचित हैं। उन शब्दों के सामने सही (✓) का निशान लगाएँ और उनके अर्थ लिखें।

शब्द	पहले से जानते हैं	समूह में बातचीत के बाद जाना	शब्द के अर्थ लिखें
द्वार			
पर्व			
शादी–ब्याह			
अवसर			
अंतिम संस्कार			
मौजूद			
बाँसुरी			
उपयोग			
लचीला			
तेज़			
बाल–बाँका			
नस्ल			
सामान			
पौधा			
घास			
लंबा			
पेड़			
हवा			
घर			
जगह			

निर्देश : प्रिय दोस्तो, पाठ पढ़ने से पहले इन शब्दों को ज़रूर पढ़ें और इनके अर्थ जानने का प्रयास करें। अब आप अपने–अपने समूह में इन शब्दों पर बातचीत करें। ये प्रक्रिया पाठ को पढ़कर समझने में आपकी सहायता करेगी।

बाँस

घर हो या द्वार, पर्व हो या त्योहार, शादी-ब्याह का अवसर हो या अंतिम संस्कार का, मैं हर जगह मौजूद रहता हूँ। बाँसुरी भी मुझसे बनती है और घर में उपयोग होने वाले बहुत सारे सामान भी मुझसे बनते हैं।



मैं बहुत लंबा होता हूँ। मैं इतना लचीला होता हूँ कि तेज़ हवा भी मेरा बाल-बाँका नहीं कर सकती। लोग मुझे पेड़ कहते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि मैं पौधा हूँ। मगर मैं घास की नस्ल का हूँ और एक घास ही हूँ। सभी मुझे बाँस के नाम से जानते हैं।



Written by: Faiyaz Ahmed, Photographs by: Sitaram

बाँस

1. बाँस के बारे में कोई दो बातें लिखें जो कहानी में बताई गई हैं?

2. बाँस का उपयोग किन–किन कार्यों के लिए किया जाता है?

3. 'बाल बाँका नहीं होता' इस वाक्य का मतलब अपने शब्दों में लिखें।

4. इन शब्दों के अर्थ लिखें और वाक्य में प्रयोग करें।

   द्वार –

   मौजूद –

5. 'बाँस को हवा का तेज़ झोंका भी नहीं तोड़ पाता है।' ऐसा क्यों कहा गया है?

7. पाठ में एक वाक्यलिखा हुआ है, 'मगर मैं घास की नस्ल का हूँ' इसका अर्थ क्या है? अपने शब्दों में लिखें।

निराली चिड़ियाँ

नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। आप इन में से कितने शब्दों के अर्थ जानते हैं या इनसे परिचित हैं। उन शब्दों के सामने सही (✓) का निशान लगाएँ और उनके अर्थ लिखें।

शब्द	पहले से जानते हैं	समूह में बातचीत के बाद जाना	शब्द के अर्थ लिखें
निराली			
चिड़ियाँ			
चोंच			
दुनिया			
अजीब			
अनुमान			
ज़मीन			
लगभग			
प्रजातियाँ			
अंडे से़ने			
तरीके			
पत्तों			
तिनकों			
ढेरों			
कारण			
पंख			
अंडा			
गेनेट			
उमस			

निर्देश : प्रिय दोस्तो, पाठ पढ़ने से पहले इन शब्दों को ज़रूर पढ़ें और इनके अर्थ जानने का प्रयास करें। अब आप अपने–अपने समूह में इन शब्दों पर बातचीत करें। ये प्रक्रिया पाठ को पढ़कर समझने में आपकी सहायता करेगी।

निराली चिड़ियाँ

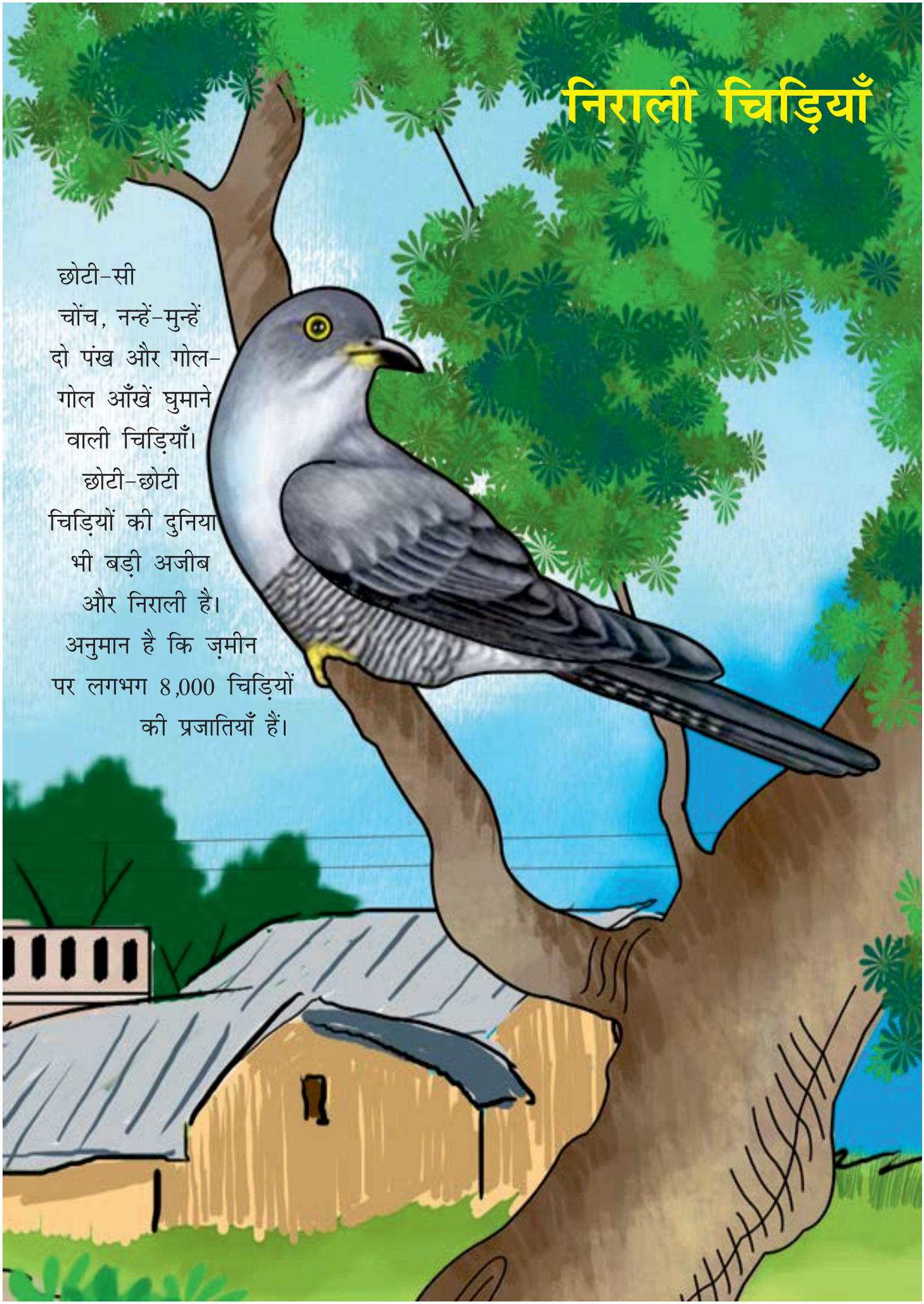

छोटी-सी
चोंच, नन्हें-मुन्हें
दो पंख और गोल-
गोल आँखें घुमाने
वाली चिड़ियाँ।
छोटी-छोटी
चिड़ियों की दुनिया
भी बड़ी अजीब
और निराली है।
अनुमान है कि ज़मीन
पर लगभग 8,000 चिड़ियों
की प्रजातियाँ हैं।



वेसै तो सभी चिड़ियाँ अंडे देती हैं और उन अंडों से बच्चे निकलते हैं। लेकिन अंडों को से़ने के चिड़ियों के अलग-अलग और निराले तरीके हैं। 'गेनेट' नामक चिड़िया भी अपने पावँ में रखकर अंडे से़ती है।

चिड़ियों की कुछ ऐसी भी प्रजातियाँ हैं जो अपने अंडों को पत्तों, तिनकों और मिट्टी के बड़े-बड़े ढेरों के बीच रख देती हैं। सूर्य की गर्मी और ढेर में रखे पत्तों की उमस के कारण अंडे अच्छी तरह से गर्म रहते हैं।

Written by: Pratham Resource Centre, Illustrated by: **Mitrarun Haldar**

निराली चिड़ियाँ

1. दुनिया में चिड़ियों की कितनी प्रजातियाँ हैं?

2. गेनेट नामक चिड़िया के बारे में पाठ में क्या बताया गया है? पाठ से ढूँढकर लिखें।

3. आप कितनी तरह की चिड़ियों को जानते हैं? उनके नाम लिखें।

4. अर्थ बताकर शब्द से वाक्य बनाएँ।

   निराली –

   अनुमान –

   प्रजातियाँ –

5. अपनी सबसे पसंदीदा चिड़िया के बारे में पाँच वाक्य लिखें।

6. 'अंडे से़ने' से आप क्या समझते हैं? अपने शब्दों में लिखें।

हँसना मना है

नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। आप इन में से कितने शब्दों के अर्थ जानते हैं या इनसे परिचित हैं। उन शब्दों के सामने सही (✓) का निशान लगाएँ और उनके अर्थ लिखें।

शब्द	पहले से जानते हैं	समूह में बातचीत के बाद जाना	शब्द के अर्थ लिखें
शांति			
मित्र			
हमेशा			
उदास			
उपस्थित			
ख़रगोश			
बुख़ार			
तबीयत			
तरफ़			
पालतू			
सवालों			
बस्ता			
चीज़			
फ़िसलना			
लपकना			
ज़ोर–ज़ोर			
बाक़ी			
ग़ायब			
पुकारना			
झुकाना			

निर्देश : प्रिय दोस्तो, पाठ पढ़ने से पहले इन शब्दों को ज़रूर पढ़ें और इनके अर्थ जानने का प्रयास करें। अब आप अपने–अपने समूह में इन शब्दों पर बातचीत करें। ये प्रक्रिया पाठ को पढ़कर समझने में आपकी सहायता करेगी।

हँसना मना है



शांति और अरुण अच्छे मित्र हैं। वे एक साथ खेलते-कूदते हैं। घर के रास्ते में दौड़ लगाते हैं। शांति हमेशा ख़ुश रहती है। एक दिन शांति धीरे से अपनी कक्षा में घुसी। उसका सिर झुका हुआ था। वह उदास दिख रही थी। "क्या तुम्हें किसी ने डाँटा?" अरुण ने शांति से पूछा। शांति ने अपना सिर हिलाया और अपनी जगह पर जाकर बैठ गई। सिर उठाकर भी नहीं देखा। सोना दीदी के नाम पुकारने पर उसने उपस्थित भी नहीं कहा। "शांति कुमारी!" सोना दीदी ने फिर पुकारा, इस बार थोड़ा ज़ोर से। शांति ने अपना हाथ खड़ा कर दिया। "क्या तुम्हारे गले में ख़राश है?" दीदी ने पूछा। शांति ने सिर हिलाकर नहीं कहा। उसके गाल लाल हो गए ऐसा लगने लगा मानो उसे बुख़ार हो। सोना दीदी ने

पूछा, “तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है?” शांति ने फिर सिर हिला दिया, लेकिन उनकी तरफ़ देखा नहीं। “शांति! इतनी उदास क्यों लग रही हो? तुम्हारा छोटा भाई ठीक है?”, “तुम्हारा पालतू कुत्ता तो ठीक है ना?”, “क्या तुम्हारी दादी ठीक हैं?” शांति सभी दोस्तों के सवालों पर सिर हिलाती रही, लेकिन उसने सिर नहीं उठाया। अरुण को एक उपाय सूझा। उसने अपना बस्ता खोला और उसमें से कुछ निकाला। जैसे ही वह उसे शांति को दिखाने के लिए दौड़ा, वह चीज़ उसके हाथ से फ़िसल गई। शांति ने देखा कि कोई चीज़ उड़कर उसके पास आ रही है। उसने देखा, एक बड़ा-सा हरे रबड़ का मेंढक आ रहा है! उसने लपककर उसे पकड़ लिया। उसकी आँखें खुली की खुली रह गईं और उसका मुँह भी। वह ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगी। तब अरुण और बाक़ी सबने देखा कि क्यों वह पूरे दिन, हँस नहीं रही थी और न ही बातें कर रही थी! चार दाँत जो ग़ायब हो गए थे उसके!





Translated by Arti Smit
Original story No Smiles Today by Cheryl Rao
Illustrated by Saurabh Pandey

हँसना मना है

1. शांति क्यों उदास दिख रही थी?

2. सोना दीदी और सभी दोस्तों ने शांति से क्या–क्या सवाल पूछे?

3. शांति के कुछ दोस्तों के नाम लिखें।

4. आप कब–कब उदास हो जाते हैं? और क्यों?

5. जब आप उदास होते हैं तो क्या आपको कोई हँसाने की कोशिश करता है? किसी एक घटना के बारे में लिखें।

कभी भी, कहीं भी

नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। आप इन में से कितने शब्दों के अर्थ जानते हैं या इनसे परिचित हैं। उन शब्दों के सामने सही (✓) का निशान लगाएँ और उनके अर्थ लिखें।

शब्द	पहले से जानते हैं	समूह में बातचीत के बाद जाना	शब्द के अर्थ लिखें
भाता			
ग़रीब			
अमीर			
हमेशा			
दूर–देश			
पोटली			
बाँध			
पैकेट			
चटपटा			
गुड़			
सत्तू			
लिट्टी			
मकई			
ज़्यादा			
ताक़त			
ज़ायक़ा			
फुर्ती			
सेहत			
सत्य			
गुण			

निर्देश : प्रिय दोस्तो, पाठ पढ़ने से पहले इन शब्दों को ज़रूर पढ़ें और इनके अर्थ जानने का प्रयास करें। अब आप अपने–अपने समूह में इन शब्दों पर बातचीत करें। ये प्रक्रिया पाठ को पढ़कर समझने में आपकी सहायता करेगी।

कभी भी, कहीं भी

मैं बिहार के लोगों को बहुत भाता हूँ। क्या ग़रीब, क्या अमीर। सभी के बीच मेरी पहुँच है। सुबह हो या शाम, दिन हो या रात, मेरी पूछ हमेशा होती है। घर हो या बाहर या जाना हो दूर-देश, मुझे ले जाना नहीं भूलते।



मुझे पोटली में बाँध कर या पैकेट में रख कर, कोई भी कहीं भी ले जा सकता है। नमक-मिर्च के साथ मैं चटपटा, तो गुड़-घी के साथ मीठा हो जाता हूँ।

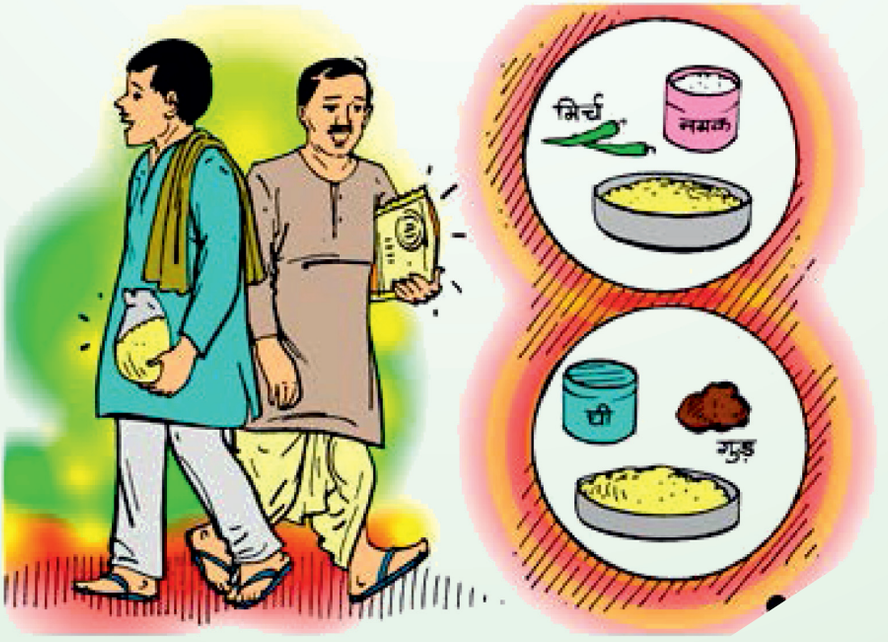

अब तो मुझे आप पहचान ही गए होंगे? नहीं पहचाना? बहुत ही आसान नाम है मेरा। लोग मुझे सत्तू कहते हैं। मुझे बिना पकाए भी खा सकते हैं और पका कर भी। पराठे की तरह भी और लिट्टी बनाकर भी।



कुछ लोग चाहते हैं कि मैं मकई से बनूँ, मगर ज़्यादा लोग चाहते हैं कि मैं चने का ही रहूँ। मैं ताकत भी देता हूँ और ज़ायका भी। मैं फुर्ती भी लाता हूँ और सेहत भी। सत्य ही गुण है और मेरा यानी सत्तू का भी यही गुण है।



Written by: Sarita Singh, Illustrated by: Neerad

कभी भी, कहीं भी

1. यह पाठ कौन सुना रहा है?

2. सत्तू किस–किस अनाज से बनता है?

3. सत्तू से कौन–कौन सी चीज़ें बनाई जा सकती हैं?

4. सत्तू के खाने से क्या–क्या फ़ायदे हैं? सोचकर लिखें।

5. दिए गए अनाजों से बनने वाली चीज़ों के नाम लिखें।

गेहूँ	चना	चावल

पक्षी

नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। आप इन में से कितने शब्दों के अर्थ जानते हैं या इनसे परिचित हैं। उन शब्दों के सामने सही (✓) का निशान लगाएँ और उनके अर्थ लिखें।

शब्द	पहले से जानते हैं	समूह में बातचीत के बाद जाना	शब्द के अर्थ लिखें
पक्षी			
आकाश			
आसपास			
उड़ान			
बाज़			
आवाज़			
बनावट			
पंखों			
पंजों			
सम्बंधी			
आदत			
शाकाहारी			
माँसाहारी			
चुगना			
गिद्ध			
तेज़			
घोंसले			
शोभा			
ज़माना			

निर्देश : प्रिय दोस्तो, पाठ पढ़ने से पहले इन शब्दों को ज़रूर पढ़ें और इनके अर्थ जानने का प्रयास करें। अब आप अपने–अपने समूह में इन शब्दों पर बातचीत करें। ये प्रक्रिया पाठ को पढ़कर समझने में आपकी सहायता करेगी।

पक्षी

ऊपर आकाश में हमें तरह-तरह के पक्षी उड़ते हुए दिखाई देते हैं। हमारे घर के आसपास भी कई पक्षी रहते हैं। कुछ पक्षी ऊँचा नहीं उड़ सकते हैं, जैसे-मोर, मुर्गा और बत्तख़ आदि। कुछ पक्षियों की उड़ान तेज़ होती है, जैसे-चील, बाज़, कौआ, कबूतर, तोता और उल्लू।

पक्षियों के दाँत नहीं होते, चोंच होती हैं। हर पक्षी की आवाज़, चोंच की बनावट, पंखों का रंग और पंजों की बनावट अलग-अलग होती है। सभी पक्षियों की भोजन सम्बंधी आदतें भी अलग-अलग होती हैं। कुछ पक्षी शाकाहारी होते हैं तो कुछ माँसाहारी। कबतूर चोंच से दाना चुगते हैं। तोते चोंच से फल व सब्ज़ी काटकर खाते हैं। चील, गिद्ध और बाज़ माँसाहारी पक्षी हैं। इनकी चोंच नुकीली और तेज़ होती है, जिससे वे माँस को नोच-नोच कर खाते हैं। सभी पक्षी घोंसले बनाकर उनमें अंडे देते हैं। हम कुछ पक्षियों को घरों में भी पालते हैं।



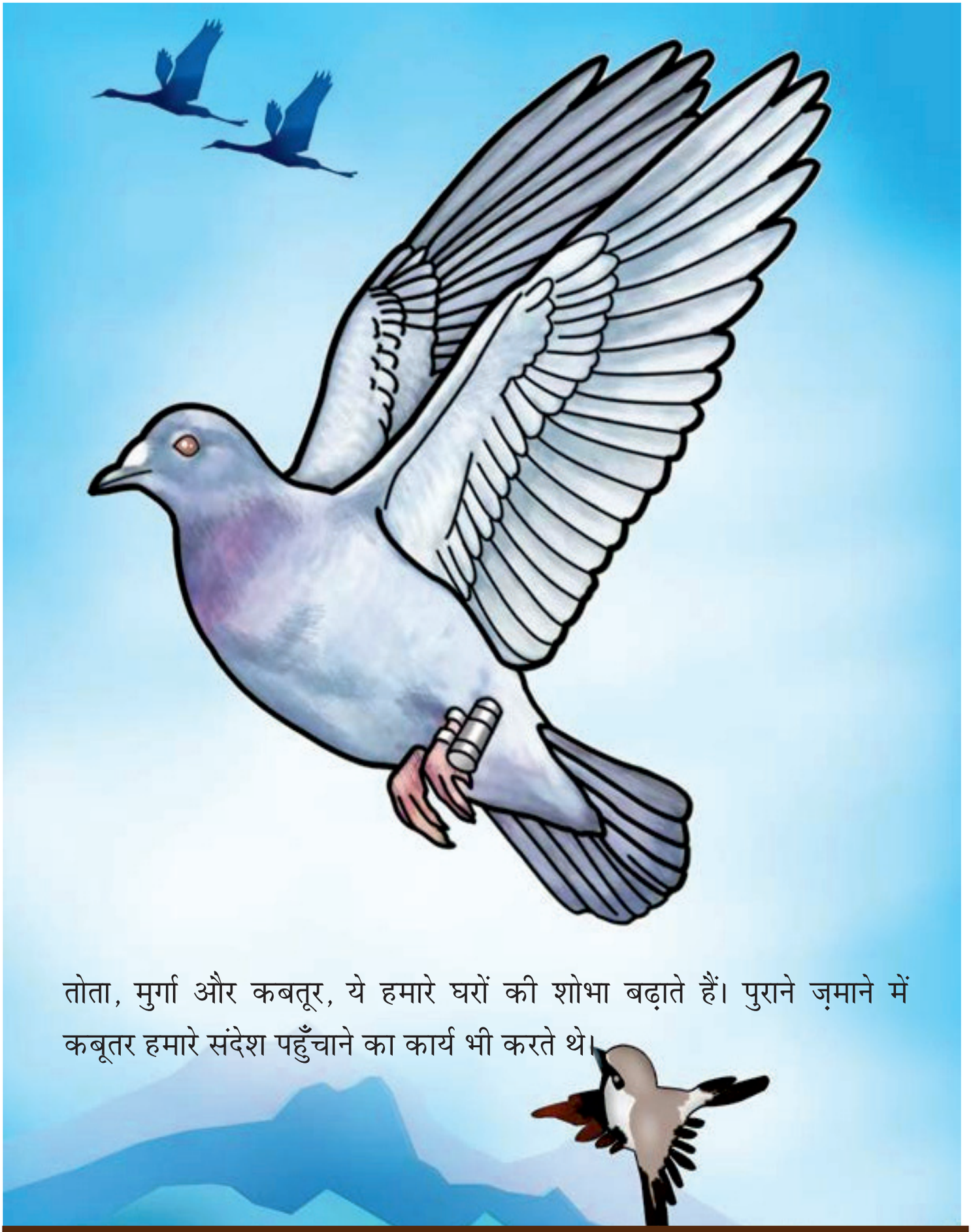

तोता, मुर्गा और कबतूर, ये हमारे घरों की शोभा बढ़ाते हैं। पुराने ज़माने में कबूतर हमारे संदेश पहुँचाने का कार्य भी करते थे।

Illustrated by: Mitrarun Haldar
Written by : Pratham Resource Centre

पक्षी

1. पाठ में ऐसे कुछ पक्षियों के बारे में बताया गया है, जिन्हें हम पाल सकते हैं। उनके नाम लिखें।

_____ _____ _____ _____

_____ _____ _____ _____

_____ _____ _____ _____

2. इस पाठ को पढ़कर आपको क्या–क्या नई जानकारियाँ मिलीं?

_____

_____

_____

_____

3. आपने किस–किस तरह के पक्षी देखे हैं? उन पक्षियों के नाम तालिका में भरें।

पानी में तैरने वाले	फूलों का रस पीने वाले	बहुत ऊँचा उड़ने वाले	थोड़ा ऊँचा उड़ने वाले	माँस खाने वाले (माँसाहारी)	अनाज, फल खाने वाले (शाकाहारी)

4. इन पक्षियों को पहचानें और उनके व्यवहार के अनुसार नाम लिखें।

1. मनुष्यों की नकल करता है _____
2. मीठा गाती है _____
3. संदेश पहुँचाने के काम आता है _____
3. पंख फैला कर नाचता है _____

5. हमें पक्षियों को पालना चाहिए या नहीं? अपनी राय कारण के साथ लिखें।

_____

_____

_____

_____

_____

लाल बरसाती

नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। आप इन में से कितने शब्दों के अर्थ जानते हैं या इनसे परिचित हैं। उन शब्दों के सामने सही (✓) का निशान लगाएँ और उनके अर्थ लिखें।

शब्द	पहले से जानते हैं	समूह में बातचीत के बाद जाना	शब्द के अर्थ लिखें
बरसाती			
ख़रीद			
पहनना			
सोमवार			
मंगलवार			
आसमान			
सिर्फ़			
जल्दी			
पिकनिक			
शुक्रवार			
बारिश			
ज़ोर–ज़ोर			
कड़कना			
आवाज़			
बुधवार			
बादल			
शनिवार			
दौड़ना			

निर्देश : प्रिय दोस्तो, पाठ पढ़ने से पहले इन शब्दों को ज़रूर पढ़ें और इनके अर्थ जानने का प्रयास करें। अब आप अपने–अपने समूह में इन शब्दों पर बातचीत करें। ये प्रक्रिया पाठ को पढ़कर समझने में आपकी सहायता करेगी।

लाल बरसाती

रविवार को माँ-बाबा ने मनु को लाल रंग की एक बरसाती ख़रीद कर दी। "माँ, क्या मैं इसे अभी पहन सकता हूँ?" मनु ने पूछा। माँ ने कहा, "नहीं, बेटे! जब बारिश होगी तब पहनना।"

सोमवार को धूप थी। "माँ, क्या आज बारिश होगी?" मनु ने पूछा। "नहीं मनु, आज नहीं होगी।" माँ बोलीं। मंगलवार को आसमान नीला था। "माँ, कब होगी पूरी मेरे मन की बात?" मनु ने पूछा। "आज नहीं बेटा! आज तो आसमान में सिर्फ़ एक छोटा-सा बादल है," माँ बोलीं। बुधवार को बहुत गर्मी थी। "माँ, बारिश क्यों नहीं हो रही?" मनु ने पूछा।

"मुझे लगता है बारिश जल्दी होगी।" माँ बोलीं। गुरुवार को मनु पिकनिक पर गया। "माँ, अगर बारिश हुई तो? क्या मैं अपने साथ बरसाती ले जाऊँ?" मनु ने पूछा।



“नहीं मनु, आज बारिश नहीं होगी। आज बादल नहीं हैं,” माँ बोलीं। शुक्रवार को घटा थी। “माँ, आज ज़रूर बारिश होगी, है ना!” मनु ज़ोर से बोला। “हाँ, हो सकती है बारिश, मेरे मनु! आज आसमान में कुछ काले बादल दिखाई दे रहे हैं।”

शनिवार को बिजली के ज़ोर-ज़ोर से कड़कने की आवाज़ हुई। “माँ, क्या यह बिजली के कड़कने की आवाज़ है, क्या अभी बारिश होगी?” मनु ने पूछा। और फिर सच में बारिश होने लगी।

“अरे बारिश हो रही है, बारिश हो रही है,” मनु गाना गाते हुए बाहर भाग गया। “मनु! तुम अपनी बरसाती भूल गए।” माँ उसके पीछे दौड़ती हुई बोलीं।



Translated by Pooja Jeet
Original story The Red Raincoat by Kiran Kasturia
Illustrated by Zainab Tambawalla

लाल बरसाती

1. मनु रोज़ बरसाती पहनने के बारे में माँ से क्यों पूछता था?

2. माँ ने मनु को बरसाती पहनने से क्यों मना कर दिया?

3. शनिवार को ऐसा क्या हुआ कि बारिश होने लगी?

4. बारिश होते समय छतरी और बरसाती इस्तेमाल करने के क्या–क्या फ़ायदे हैं?

छतरी	बरसाती

5. आपको कैसे पता चलता है कि बारिश होने वाली है?

6. माँ ने बारिश ना होने के क्या कारण बताए?

   सोमवार –

   मंगलवार –

   गुरुवार –

खड़िया

नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। आप इन में से कितने शब्दों के अर्थ जानते हैं या इनसे परिचित हैं। उन शब्दों के सामने सही (✓) का निशान लगाएँ और उनके अर्थ लिखें।

शब्द	पहले से जानते हैं	समूह में बातचीत के बाद जाना	शब्द के अर्थ लिखें
इनाम			
प्रकार			
नुकीली			
मज़ा			
उत्सव			
समान			
लिपटी			
चमचमाते			
मोह			
जोखिम			
सिवा			
उपाय			
हिम्मत			
स्लेट			
अटकना			
पत्थर			
टुकड़ा			
गोली			
डिब्बा			
मुट्ठी			

निर्देश : प्रिय दोस्तो, पाठ पढ़ने से पहले इन शब्दों को ज़रूर पढ़ें और इनके अर्थ जानने का प्रयास करें। अब आप अपने–अपने समूह में इन शब्दों पर बातचीत करें। ये प्रक्रिया पाठ को पढ़कर समझने में आपकी सहायता करेगी।

खड़िया

आज अदिति यानी मेरी बेटी को 100 रुपये की क़लम इनाम में मिली। इनाम लेते हुए मुझे अपने बचपन की खड़िया याद आ गई। खड़िया यानी स्लेट पर लिखने के लिए बनाई गई पत्थर की सफ़ेद पेंसिल।

यह खड़िया छोटी, बड़ी, मोटी, पतली, लंबी यानी कई प्रकार की होती थी। आगे से वह नुकीली होती थी। काली स्लेट पर सफ़ेद खड़िया से लिखने में बड़ा मज़ा आता था। इस पेंसिल की दूसरी ओर चाँदी, सोने या अन्य रंग का काग़ज़ लिपटा होता था। इस खड़िया और रंगबिरंगे काग़ज़ में हमारी जान अटकी होती थी। माँ से पाँच पैसे लेकर 'मार्कन्ड' चाचा की दुकान से खड़िया लाना उत्सव समान होता था।



'मार्कन्ड' चाचा की दुकान एक जादूभरी दुनिया थी। वहाँ क्या नहीं मिलता था? रंगीन क़ाग़ज में लिपटी गोलियाँ, चमचमाते क़ाग़ज में लिपटी टॉफ़ी, जीरा गोली, चॉकलेट और खट्टी-मीठी गोलियाँ एक ही डिब्बे में रखी होती थीं। कोई उस डिब्बे से बस चार गोलियाँ लेकर चल देता। तब लगता खड़िया छोड़, गोली ही ले लूँ। पर हाथ में होते बस पाँच पैसे। गोली और खड़िया के बीच की लड़ाई में खड़िया के मोह की जीत होती थी। मुट्ठी में उसे सँभालकर लाना बड़ा जोखिम भरा काम था। रास्ते में वह अगर गिर पड़ती तो टूट जाती और मेरी आँखें भर आतीं। मुझे दो टूटे टुकड़ों से लिखना पसंद नहीं था। मगर इसके सिवा कोई उपाय भी नहीं होता। नई खड़िया के लिए माँ से दोबारा पैसे माँगने की हिम्मत भी नहीं होती थी।



Written by: Alka Ranade, Illustrated by: Partha Sengupta

खड़िया

1. 'मार्कन्ड' चाचा की दुकान बच्चों के लिए जादू भरी दुनिया क्यों लगती थी?

2. किस–किस तरह की खड़ियाँ बाज़ार में मिलती हैं?

3. खड़िया गिरते ही क्यों टूट जाती हैं?

4. आजकल आप लिखने के लिए किन–किन चीज़ों का इस्तेमाल करते हैं? उनके नाम लिखें।

5. दिए गए शब्दों के अर्थ लिखें व उनसे वाक्य भी बनाएँ।

   मोह –

   हिम्मत –

6. स्लेट पर लिखने के क्या–क्या फ़ायदे हैं? सोचकर लिखें।

बिल्लियों की दावत

नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। आप इन में से कितने शब्दों के अर्थ जानते हैं या इनसे परिचित हैं। उन शब्दों के सामने सही (✓) का निशान लगाएँ और उनके अर्थ लिखें।

शब्द	पहले से जानते हैं	समूह में बातचीत के बाद जाना	शब्द के अर्थ लिखें
दावत			
पेठा			
पकवान			
खुशबू			
मुखिया			
अनुमति			
होशियार			
दुश्मन			
सावधान			
संगीन			
तुरी			
परेशान			
स्वादिष्ट			
गाँव			
चूहे			
मोटी			
सूँघना			
ढोल			
मतलब			

निर्देश : प्रिय दोस्तो, पाठ पढ़ने से पहले इन शब्दों को ज़रूर पढ़ें और इनके अर्थ जानने का प्रयास करें। अब आप अपने–अपने समूह में इन शब्दों पर बातचीत करें। ये प्रक्रिया पाठ को पढ़कर समझने में आपकी सहायता करेगी।

बिल्लियों की दावत

दूर एक गाँव में कुछ मोटी बिल्लियाँ रहती थीं। उसी गाँव में कुछ चूहे भी रहते थे। आपको क्या लगता है वे आपस में दोस्त थे?

एक दिन मोटी बिल्लियों ने दावत करने की सोची। उन्होंने हलवाई को बुलवाया। उसने बड़ी-सी आग जलाई और भात, पेठा और कई पकवान पकाए। बड़े-बड़े देगों में से अच्छी खुशबू सब जगह फैल गई। सब के मुँह में पानी आ गया। अब मोटी बिल्लियों ने चूहों को भी दावत में बुलाया। चूहे खुशबू सूँघ ही रहे थे, इसलिए वे बड़े खुश हुए। उन्होंने अपने मुखिया से दावत में जाने की अनुमति माँगी।

उनके होशियार मुखिया ने कहा, "तुम जा सकते हो पर याद रखना कि बिल्लियाँ हमारी दुश्मन हैं। उनके आसपास सावधान रहना। किसी को चोट नहीं

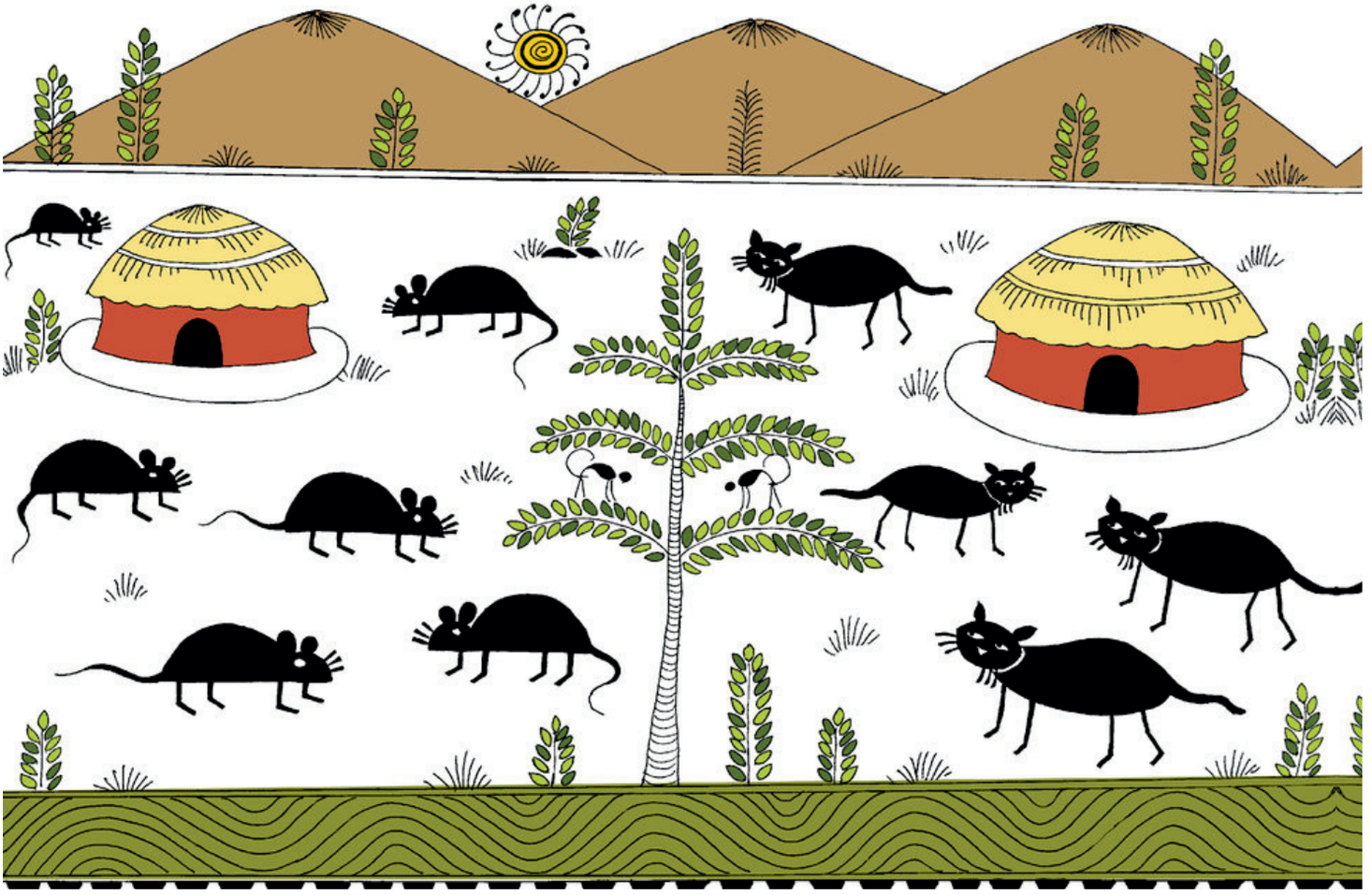

आनी चाहिए। पहले वहाँ अपने नीचे एक बिल खोद लेना। अगर कुछ गड़बड़ हो तो उस राह से भाग निकलना।" चूहे दावत में गए। उन्होंने इधर-उधर देखा और थोड़ा पेठा खाया। चुपचाप से अपने नीचे बिल भी बनाते रहे। संगीत बज रहा था और बिल्ली व चूहे मिलकर नाच रहे थे। ढम-ढम बजा ढोल और पीं-पीं बजी तुरी। "नाचो गाओ पकड़ो खाओ," मोटी बिल्लियों ने गाया। चूहों को इसका मतलब पता था! "नाचो गाओ भाग जाओ," उनका जवाब था। गाते-गाते वह अपने बिलों के रास्ते से भाग निकले। मोटी बिल्लियों को हार माननी पड़ी। भूखी और परेशान वे चली गईं... क्योंकि बिना स्वादिष्ट चूहों के भला दावत कैसी!



Translated by Rajesh Khar
Original story by Saura Writers' Group
Illustrated by Kusha Kumar Barik

बिल्लियों की दावत

1. बिल्लियों ने खाना बनाने के लिए किसे मनाया?

2. चूहों ने अपने मुखिया से किस बारे में अनुमति माँगी?

3. मुखिया ने चूहों को सावधान करते हुए क्या कहा? अपने शब्दों में लिखें।

4. इस कहानी में आप बिल्ली की जगह होते तो चूहों को कैसे फँसाते? सोचकर लिखें।

5. बिल्लियों ने चूहों को दावत पर बुलाया। आपको क्या लगता है बिल्ली और चूहे दोस्त हैं? कारण भी बताएँ।

छाता

नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। आप इन में से कितने शब्दों के अर्थ जानते हैं या इनसे परिचित हैं। उन शब्दों के सामने सही (✓) का निशान लगाएँ और उनके अर्थ लिखें।

शब्द	पहले से जानते हैं	समूह में बातचीत के बाद जाना	शब्द के अर्थ लिखें
चित्र			
हमेशा			
छत्र			
आभास			
खुद			
हालाँकि			
मौसम			
उपयोग			
पाठशाला			
शान			
धनुर्धारी			
अजीबोगरीब			
सहारा			
कड़ाके			
कारण			
भौंकते			
बिस्कुट			
पैकेट			
नज़र			
रंगीन			

निर्देश : प्रिय दोस्तो, पाठ पढ़ने से पहले इन शब्दों को ज़रूर पढ़ें और इनके अर्थ जानने का प्रयास करें। अब आप अपने–अपने समूह में इन शब्दों पर बातचीत करें। ये प्रक्रिया पाठ को पढ़कर समझने में आपकी सहायता करेगी।

छाता



चित्रों में हमेशा राजा और रानी के सिर पर छत्र होता है। इसलिए बारिश में छाता लेकर चलते समय मुझे ऐसा आभास होता है जैसे मैं ख़ुद कोई राजकुमारी हूँ। हालाँकि छाता मुझे ही पकड़ना पड़ता है।

पहले छाता केवल बरसात में दिखता था मगर अब वह किसी भी मौसम में दिख जाता है। गर्मी में धूप से बचने के लिए भी उसका उपयोग होता है। मेरे पिताजी हमेशा कहा करते थे कि उनके बचपन में लंबे डंडे वाला काले रंग का ही छाता होता था। उसका इतना वज़न होता था कि पाठशाला पहुँचने तक हाथों में दर्द होने लगता था। ऐसा लगता था कि छाता ढोने से बेहतर है बारिश में भीग जाना। छाता इतना बड़ा होता था कि 3 से 4 लोग उसके नीचे आराम से चल पाते थे। मैंने अपने

दादाजी को ऐसा एक छाता उल्टा लटकाकर चलते देखा था। जब वे छाता खोलते तब उनकी शान किसी धनुर्धारी से कम नहीं होती थी। बाज़ार में बटन वाला छाता आने से अब वह शान जाती रही।

तेज़ बारिश होने पर हम चट से बटनवाला छाता खोलते हैं और वह झट से बंदूक की गोली की तरह जाकर किसी से टकरा जाता है और हमारे हाथों में बस डंडा बच जाता है। आस-पास के लोग ऐसे घूरने लगते हैं मानो यह दुनिया की पहली अजीबोग़रीब घटना है।

छाते के कई उपयोग होते हैं। बड़े-बूढ़े इसका सहारा लेकर चलते हैं और अगर आपको सामने वाले से छिपना हो तो छाता मुँह के सामने ले आने से काम हो जाता है। एक बार कड़ाके की सर्दी में पड़ोस के चाचाजी सुबह-सुबह छाता लेकर बाहर जाने लगे। कारण पूछने पर बताया, "अरे कुत्ते पीछे पड़ते हैं। भौंकते हैं। हमला करते हैं। छाते से उन्हें भगा सकते हैं।" एक बार तो मैंने उन्हें चाचीज़ी के लिए बिस्कुट का पैकेट छाते में छुपाकर रखते देखा। मुझे छाते का ऐसा उपयोग पहली बार नज़र आया।

पहले के ज़माने का काला लंबे डंडे वाला छाता अब रंगीन हो गया है। एक फ़ोल्ड की जगह अब दो फ़ोल्ड होते हैं। डंडे वाला छाता अब छोटा होकर लड़कियों के पर्स में आराम से समा जाता है। लेकिन महिलाओं के छाते छोटे क्यों बनते हैं? अब तक इस सवाल का जवाब नहीं मिला।

Written by: **Sarika Raut**, Illustrated by: **Partha Sengupta**

छाता

1. पाठ में छाते के किस–किस तरह के उपयोगों के बारे में बात की गई है? क्रमानुसार लिखें।

2. बटन वाले छाता के क्या–क्या फ़ायदे हैं?

3. पाठ में कितनी तरह के छातों का ज़िक्र किया गया है?

4. पाठ के अनुसार समय के साथ–साथ छातों में क्या–क्या बदलाव आए? लिखें।

5. पाठ में बताए गए उपयोगों के अलावा छाते के और क्या–क्या उपयोग हो सकते हैं?

समझदार कौन?

नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। आप इन में से कितने शब्दों के अर्थ जानते हैं या इनसे परिचित हैं। उन शब्दों के सामने सही (✓) का निशान लगाएँ और उनके अर्थ लिखें।

शब्द	पहले से जानते हैं	समूह में बातचीत के बाद जाना	शब्द के अर्थ लिखें
शुरू			
हनुमान			
तन्दुरुस्त			
ज़्यादा			
तगड़ा			
कमज़ोर			
फ़ैसला			
आँगनवाड़ी			
कार्यक्रम			
दौरान			
वज़न			
ग्रोथ चार्ट			
चिन्हित			
विकास			
जानकारी			
केन्द्र			
मापा			
कुपोषण			
शाबाशी			
ख़्याल			

निर्देश : प्रिय दोस्तो, पाठ पढ़ने से पहले इन शब्दों को ज़रूर पढ़ें और इनके अर्थ जानने का प्रयास करें। अब आप अपने–अपने समूह में इन शब्दों पर बातचीत करें। ये प्रक्रिया पाठ को पढ़कर समझने में आपकी सहायता करेगी।

समझदार कौन?

सोनू की बहन है मीना। दोनों का खेल आँख खुलने से पहले ही शुरू हो जाता। कभी सोनू हनुमान बन जाता तो मीना सीता। कभी टीवी सीरियल का भीम तो कभी बलराम। उन्हें खेलते देख उनकी माँ रमा बहुत खुश होती।

एक दिन खेलते-खेलते सोनू और मीना में झगड़ा होने लगा कि दोनों में से ''तन्दुरुस्त कौन?'' दोनों ही अपने आप को तगड़ा कह कर लड़ रहे थे! सोनू ने अपना पेट बाहर निकालते हुए कहा, ''मैं मीना से ज़्यादा तगड़ा हूँ माँ!'' मीना ने अपनी बाँह दिखा कर कहा कि ''मुझमें है ज़्यादा दम!'' अब माँ करती क्या, किसको तगड़ा बोलती और किसे कमज़ोर! तभी सोनू-मीना के पिता आशीष आ गए। बच्चों की ऐसी बातें सुनकर हँसने लगे और दोनों बच्चों को गले लगा लिया! आशीष ने रमा को बोला कि इन बच्चों में से कौन जीतेगा इसका फ़ैसला आँगनवाड़ी दीदी करेंगी। फिर आशीष ने रमा को बताया कि दूसरे गाँव में चल रहे कार्यक्रम के दौरान उसे पता चला है कि बच्चों का वज़न पहले तीन साल तक हर महीने और फिर पाँच साल तक तीन महीने में एक बार करवाना चाहिए।

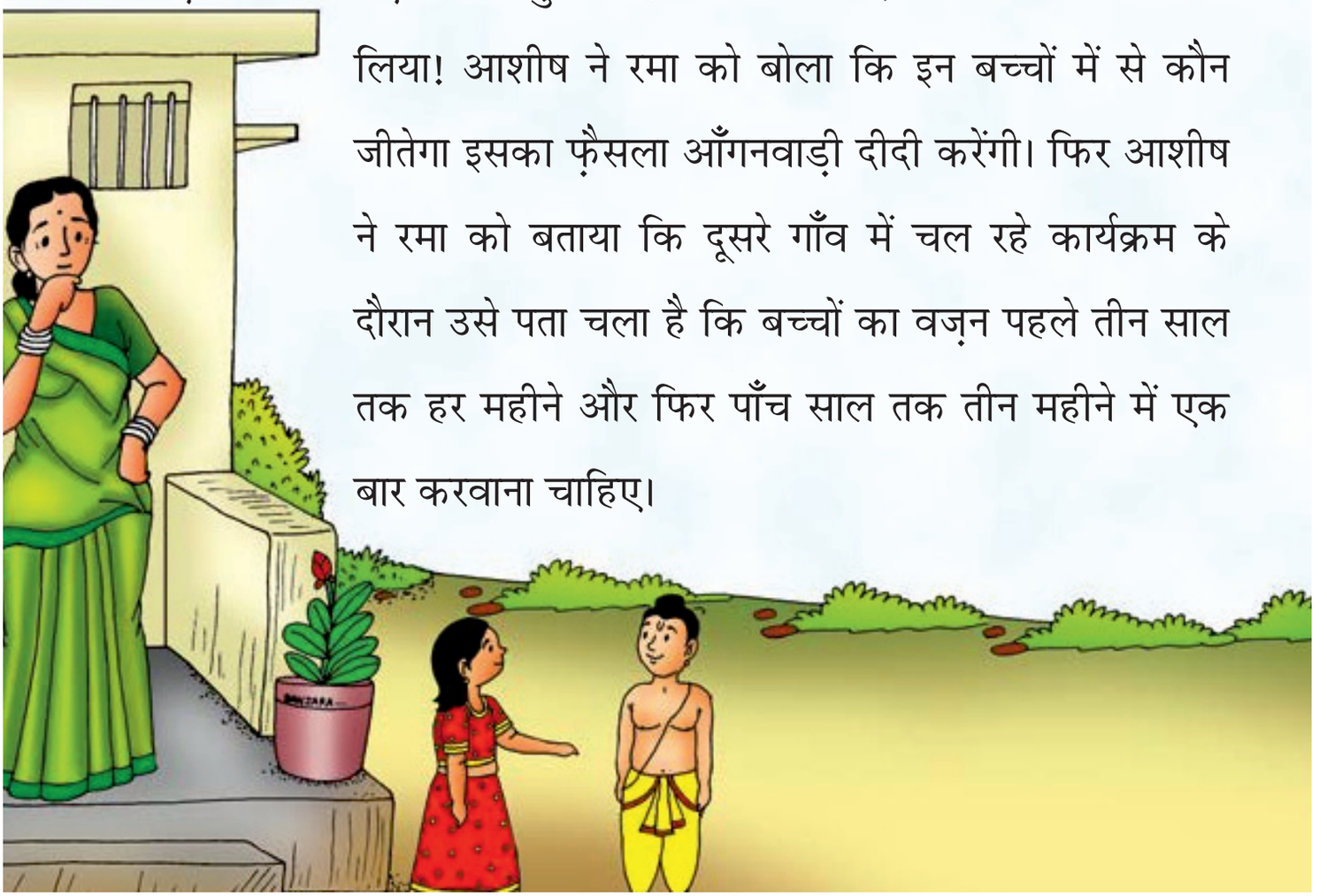

यह वज़न जब बच्चे के 'ग्रोथ चार्ट' पर चिन्हित किया जाता है तभी बच्चे के विकास का पता चलता है। इसलिए बच्चों के विकास की सही जानकारी के लिए आँगनवाड़ी केन्द्र चलते हैं। आँगनवाड़ी केन्द्र पर आँगनवाड़ी दीदी ने सोनू और मीना का वज़न मापा और 'ग्रोथ चार्ट' पर चिन्हित किया। वज़न देखकर पता चला कि मीना का विकास सही हो रहा है परन्तु सोनू कुपोषण की तरफ़ बढ़ चुका है। तब आँगनवाड़ी दीदी ने रमा और आशीष को मीना के सही विकास के लिए शाबाशी दी और सोनू को खाने पीने का सही ख़्याल रखने अथवा बिमारियों से बचाने की पूरी सलाह भी दी। दीदी ने यह भी बताया कि अभी से ही सोनू का ध्यान रखने से उसे कुपोषण के ख़तरे से बचाया जा सकता है। रमा और आशीष ने आँगनवाड़ी दीदी से वादा किया कि वह दोनों बच्चों का ध्यान रखेंगे और नियमित रूप से वज़न करवाएंगे।

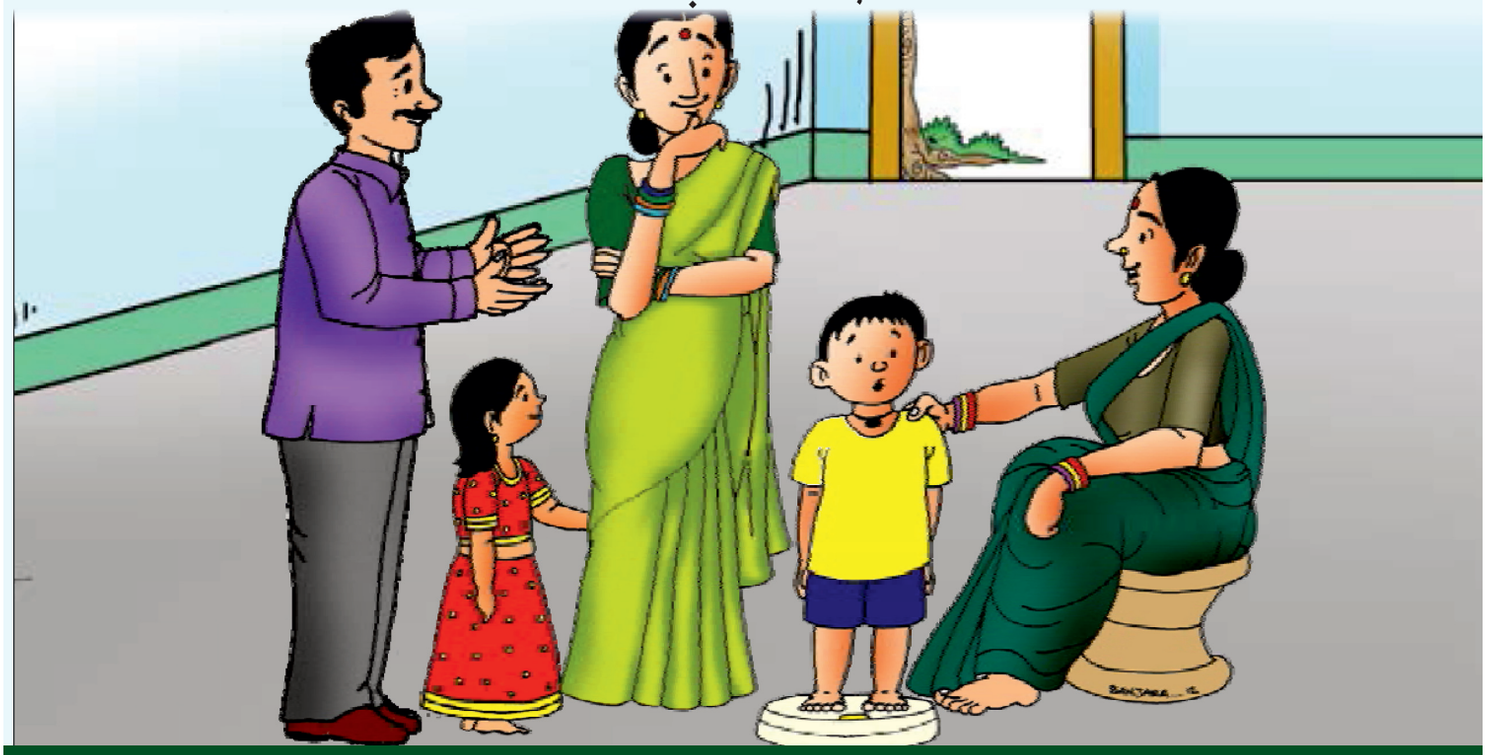

Written by: Sakshi, Illustrated by: Rajeev Verma 'Banjara'
Reviewed by: Sakshi Dudeja, Aser Centre

समझदार कौन

1. सोनू और उसकी बहन किस–किस का अभिनय करते थे?

2. सोनू और मीना में किस बात पर झगड़ा हो रहा था?

3. कुपोषण क्या है? समझकर लिखें।

4. मीना ने अपनी बाँह दिखाकर कहा कि "मुझमें है ज़्यादा दम!" यदि आपको भी अपनी तन्दुरुस्ती का प्रमाण देना होता तो आप क्या कहते हैं?

5. शब्दों का अर्थ बताएँ और वाक्य में उपयोग करें?

   तन्दुरुस्ती

   वज़न

   झगड़ा

6. 'ग्रोथ चार्ट' से आप क्या समझते हैं?

कवच

नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। आप इन में से कितने शब्दों के अर्थ जानते हैं या इनसे परिचित हैं। उन शब्दों के सामने सही (✓) का निशान लगाएँ और उनके अर्थ लिखें।

शब्द	पहले से जानते हैं	समूह में बातचीत के बाद जाना	शब्द के अर्थ लिखें
कवच			
परिचित			
प्राणी			
सुरक्षित			
अंदरूनी			
केरोटीन			
ख़तरा			
आभास			
समुद्र			
मुलायम			
सख़्त			
जीव			
तैयार			
ज़िंदगी			
वज़न			
छिलका			
बाकी			
प्रकृति			
वरदान			
घोंघा			

निर्देश : प्रिय दोस्तो, पाठ पढ़ने से पहले इन शब्दों को ज़रूर पढ़ें और इनके अर्थ जानने का प्रयास करें। अब आप अपने–अपने समूह में इन शब्दों पर बातचीत करें। ये प्रक्रिया पाठ को पढ़कर समझने में आपकी सहायता करेगी।

कवच

कछुआ कवच वाला परिचित प्राणी है। उसका कवच उसकी पीठ है। यह पीठ कछुए की रीढ़ की हड्डी तथा शरीर को सुरक्षित रखता है। कवच का अंदरूनी भाग हड्डियों का बना हुआ होता है और ऊपरी भाग हमारे नाखूनों जैसे केरोटीन से। ख़तरे का आभास होते ही कछुआ अपना सिर, चारों पैर तथा पूँछ कवच के अदंर कर लेता है। जैसे-जैसे कछुआ बड़ा होता है वैसे-वैसे उसका कवच बड़ा होता जाता है।

कवच नदी तथा समुद्र किनारे रहने वाले केकड़े का भी होता है। लेकिन वह अलग प्रकार का होता है। केकड़े के बड़े होने पर उसका कवच बड़ा नहीं होता। उसे कवच निकालना पड़ता है। केकड़े को अपना सिर, पैर तथा आँखें पुराने कवच से छुड़ाने पड़ते हैं। इसलिए वह कवच में पानी भरकर उसे फुलाता है, फोड़ता है और धीरे-धीरे खुद को छुड़ाता है। इस तरह उसकी पीठ पर नया मुलायम कवच तैयार होता है। कवच थोड़ा सख़्त होने तक वह पानी में छिपा रहता है।

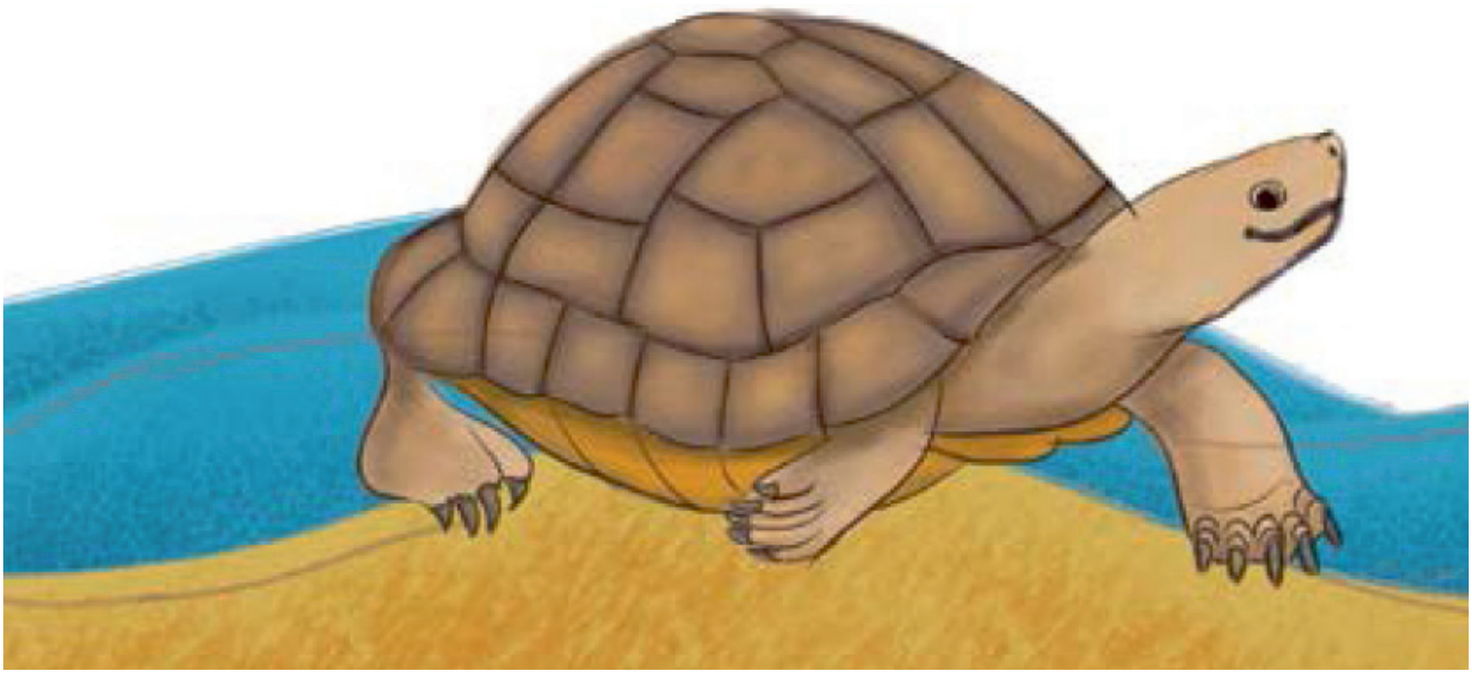

पानी में रहने वाला एक और जीव है, सीप। सीप पानी में रहकर भी मछली नहीं होता। अंडे से बाहर आकर यह नन्हा जीव अपनी चारों तरफ़ कवच तैयार करता है। उसी कवच में वह ज़िंदगी भर रहता है। कवच के वज़न की वजह से सीप यहाँ से वहाँ बहकर नहीं जाता। अपने कवच के साथ जन्म लेने वाला जीव है, घोंघा। अंडे से बाहर निकलते ही उस पर कवच होता है लेकिन यह कवच बहुत ही मुलायम होता है। उसे सख़्त बनाने के लिए घोंघा जिस अंडे से निकलता है उसी के छिलके को खा जाता है। घोंघे का कवच उसके साथ-साथ बड़ा होता है। जन्म के समय जो कवच होता है वह घोंघे की पीठ के बीच में रहता है। बाकी कवच उसके चारों ओर बढ़ता है। प्रकृति ने उसे यह वरदान दिया है।

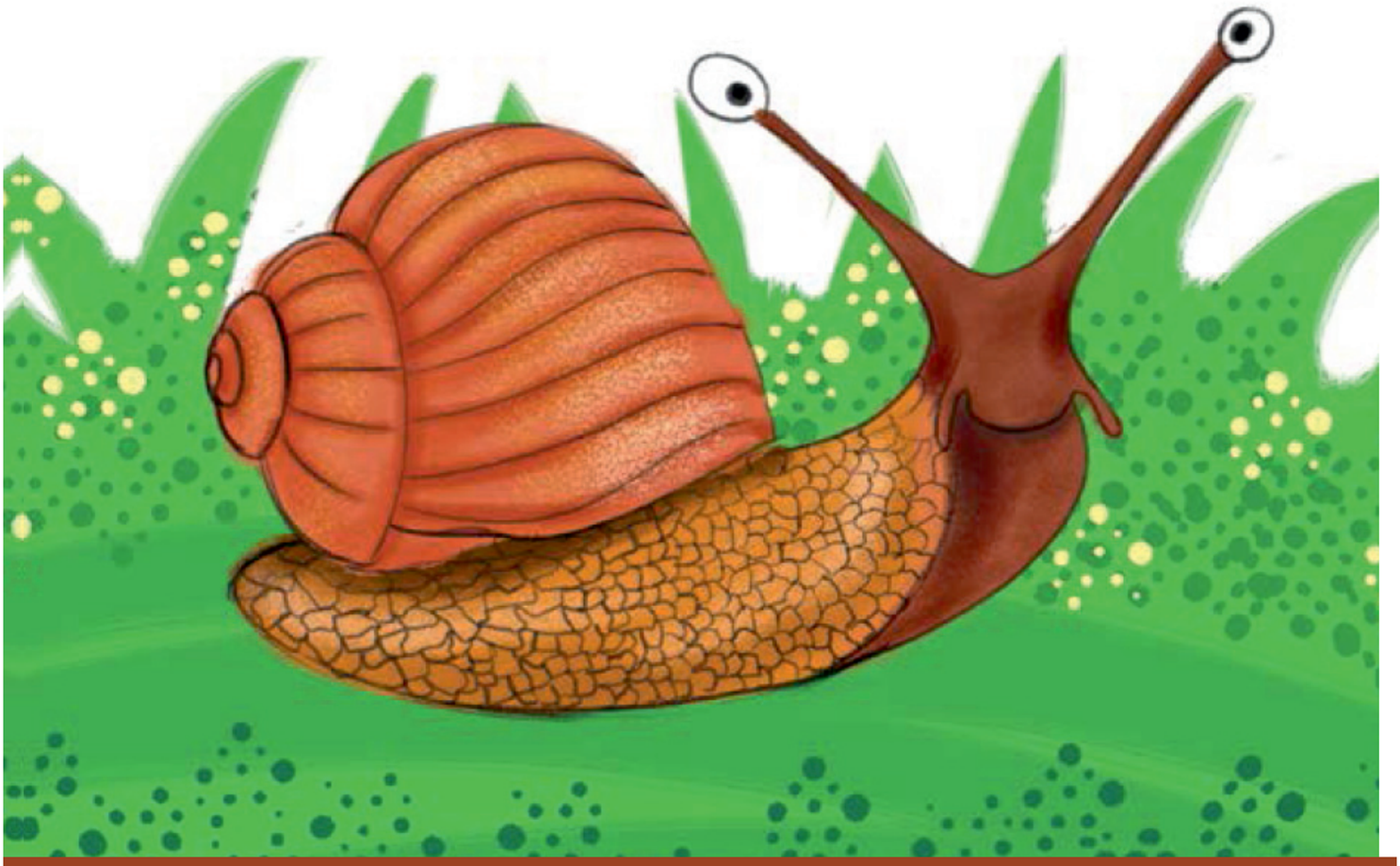

Illustrated by: **Suvidha Mistry**

कवच

1. कछुए के लिए कवच क्यों ज़रूरी है?

2. केकड़े के बड़ा होने पर उसका कवच बड़ा क्यों नहीं होता?

3. घोंघा अपने कवच को सख़्त बनाने के लिए क्या करता है?

4. इस पाठ से आपको कौन–कौन सी नई जानकारियाँ मिलीं?

5. नीचे दिए गए शब्दों से वाक्य बनाएँ।

   परिचित –

   आभास –

   मुलायम –

6. क्या कवच सिर्फ़ समुद्री जीवों के ही होते हैं? अगर हाँ तो दूसरे जीव–जन्तु अपनी सुरक्षा कैसे करते हैं? सोचकर लिखें।

कछुआ और ख़रगोश

नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। आप इन में से कितने शब्दों के अर्थ जानते हैं या इनसे परिचित हैं। उन शब्दों के सामने सही (✓) का निशान लगाएँ और उनके अर्थ लिखें।

शब्द	पहले से जानते हैं	समूह में बातचीत के बाद जाना	शब्द के अर्थ लिखें
राज्य			
आलस			
कारण			
मंज़िल			
लगातार			
इतराना			
अपमानित			
महसूस			
जलन			
ज़रूरी			
तुरंत			
संभव			
संदेश			
मुश्किल			
योजना			
तैयार			
प्रशंसा			
जवाब			
पड़ोसी			

निर्देश : प्रिय दोस्तो, पाठ पढ़ने से पहले इन शब्दों को ज़रूर पढ़ें और इनके अर्थ जानने का प्रयास करें। अब आप अपने–अपने समूह में इन शब्दों पर बातचीत करें। ये प्रक्रिया पाठ को पढ़कर समझने में आपकी सहायता करेगी।

कछुआ और ख़रगोश

कछुए और ख़रगोश की दौड़ तो याद है न? उस दौड़ के बाद जानवरों के पूरे राज्य में सभी कछुए और ख़रगोश के बारे में चर्चा करने लगे। आलस के कारण ख़रगोश दौड़ हार गया। अपनी मंज़िल की ओर लगातार चलकर कछुआ जीत गया। अपनी जीत पर कछुआ इतराया नहीं। अपनी हार पर ख़रगोश ने भी खुद को अपमानित महसूस नहीं किया, न ही उसे कछुए के प्रति जलन हुई।

कुछ दिनों बाद उस जंगल के राजा को पड़ोसी जंगल के राजा के साथ ज़रूरी काम पड़ा। उनकी बातचीत तुरंत होनी ज़रूरी थी। लेकिन बहुत सारे कार्यों में उलझे होने के कारण राजा के लिए पड़ोसी राज्य जाना संभव नहीं था। अतः राजा ने ख़रगोश और कछुए को बुलाया और कहा, "तुम दोनों में से किसी एक को पड़ोसी राज्य जाना पड़ेगा। मेरा संदेश उन्हें देकर उनका जवाब लेकर एक दिन के अन्दर वापस आना होगा।"



पड़ोसी राज्य पहुँचने का रास्ता काँटों और पत्थरों से भरा था। बीच में दो नदियाँ भी थीं। कछुए और ख़रगोश दोनों के लिए रास्ता आसानी से तय करना मुश्किल था। दोनों ने मिलकर एक योजना बनाई।

अगले दिन तड़के दोनों तैयार हो गए। राजा का संदेश लेकर दोनों साथ निकल पड़े। जंगल के रास्ते में ख़रगोश कछुए को अपनी पीठ पर बैठाकर तेज़ी से दौड़ा। रास्ते में जब नदी आई तब कछुए ने ख़रगोश को अपनी पीठ पर बैठाकर नदी पार कराई। फिर से ख़रगोश ने कछुए को पीठ पर बैठाकर दौड़ लगाई। दूसरी नदी आते ही कछुए ने अपना काम किया। इस तरह दोनों साथ मिलकर बहुत जल्दी अपनी मंज़िल तक पहुँच गए। राजा से बातचीत करके वे वापस समय से पहले ही लौट आए। राजा ने दोनों की ख़ूब प्रशंसा की।



Translated by K. Vijaya
Original story by Venkatramana Gowda
Illustrated by Padmanabh

कछुआ और ख़रगोश

1. कछुआ और ख़रगोश की पुरानी दौड़ में ख़रगोश क्यों हार गया था?

2. राजा पड़ोसी राज्य में क्यों नहीं जा पा रहा था? सोचकर लिखें।

3. कहानी में आए शब्दों को सही करके बक्से में लिखें।

कछवा –		पड़ौसी–		चरचा–	
नहि –		मजिल–		सदेश–	

4. रास्ते को पार करने के लिए कछुए व ख़रगोश ने क्या योजना बनाई?

5. निम्न शब्दों का अर्थ बताकर इन शब्दों से वाक्य बनाएँ।

मंज़िल		
अपमान		
इतराया		

6. इस कहानी में आप होते तो एक दिन मैं राजा का संदेश कैसे पहुँचाते?

अकाल

नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। आप इन में से कितने शब्दों के अर्थ जानते हैं या इनसे परिचित हैं। उन शब्दों के सामने सही (✓) का निशान लगाएँ और उनके अर्थ लिखें।

शब्द	पहले से जानते हैं	समूह में बातचीत के बाद जाना	शब्द के अर्थ लिखें
अकाल			
भूगोल			
ख़त्म			
उपयोग			
उत्साह			
ज़्यादा			
समुद्र			
खेती–बाड़ी			
भाप			
हमेशा			
उपाय			
उपयोग			
सँभलना			
रिसना			
अकालग्रस्त			
इलाका			
उपयोग			
लगभग			
पृथ्वी			
आँगन			

निर्देश : प्रिय दोस्तो, पाठ पढ़ने से पहले इन शब्दों को ज़रूर पढ़ें और इनके अर्थ जानने का प्रयास करें। अब आप अपने–अपने समूह में इन शब्दों पर बातचीत करें। ये प्रक्रिया पाठ को पढ़कर समझने में आपकी सहायता करेगी।

अकाल

पिंटू के मन में हज़ारों सवाल उठते हैं। भूगोल का पाठ ख़त्म होते ही पिंटू के मन में प्रश्न उठे। भूगोल के मास्टरजी ने बताया कि पृथ्वी के लगभग तीन चौथाई हिस्से में पानी है।

स्कूल के बाद पिंटू भागकर घर पहुँचा और उसने पिताजी से पूछा, "हमारे मास्टरजी ने कहा है कि पृथ्वी के तीन चौथाई हिस्से में पानी है। फिर हमारे यहाँ अकाल कैसे पड़ा? हम उस पानी को क्यों नहीं ले आते?"

"अरे! वह समुद्र का पानी है! अकाल में ऐसे पानी का उपयोग नहीं होता।" इतना कहकर पिताजी अपने काम के लिए बाहर चले गए। पिंटू का उत्साह ज़्यादा ही बढ़ गया था। उसने अपने दादाजी के पास जाकर फिर वही प्रश्न किया।

दादाजी पिंटू को अकाल के बारे में बताने लगे। उन्होंने कहा, "समुद्र का पानी खारा होता है। उसका पानी पीने के लिए या खेती-बाड़ी के लिए उपयोग नहीं

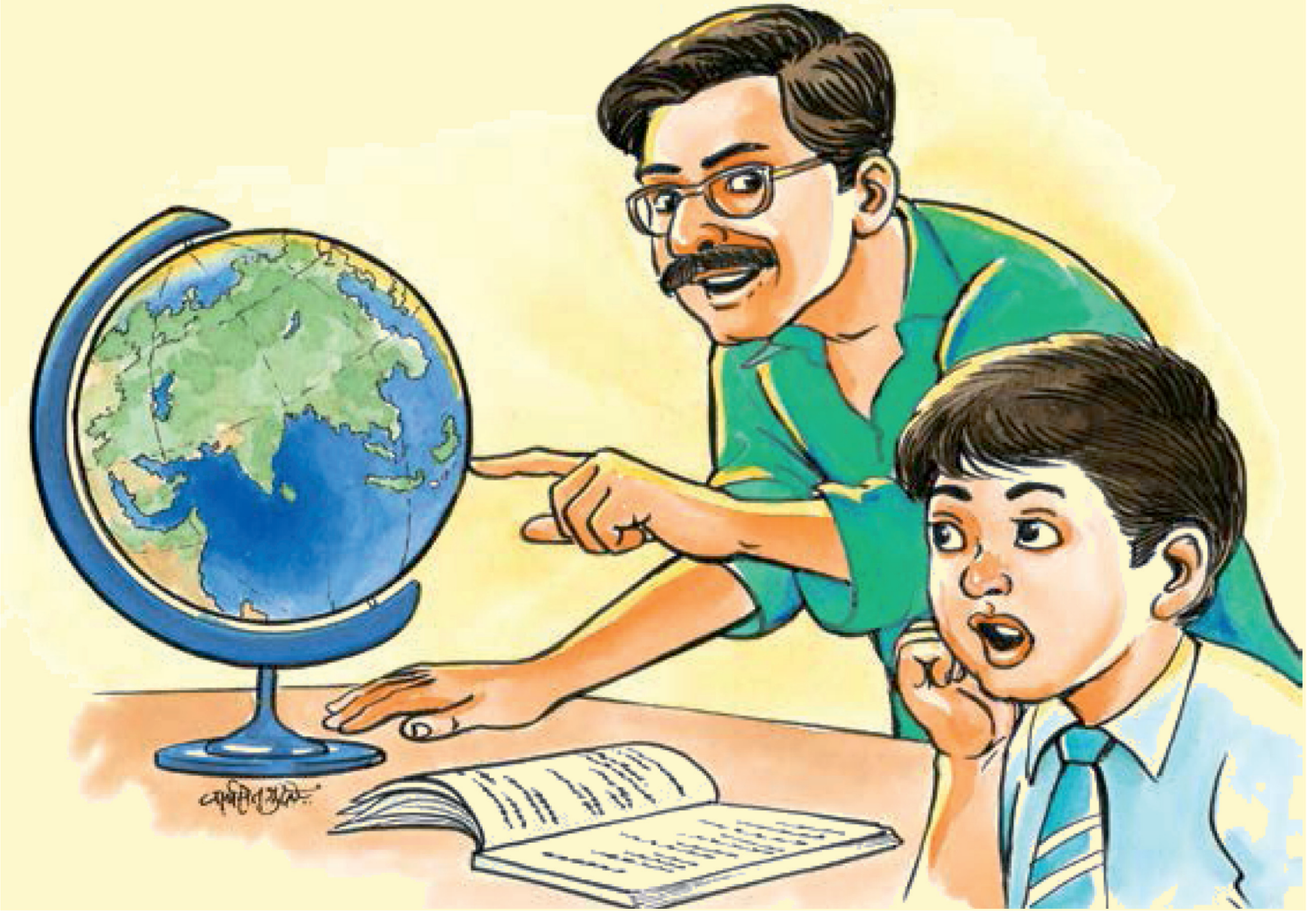

होता। उस पानी की भाप बनती है। भाप ऊपर जाती है। भाप से बादल बनते हैं और फिर भाप ठंडी होने पर बारिश होती है।" उन्होंने आगे बताया, "जहाँ बारिश कम होती है वहाँ अकाल पड़ता है।" पिंटू के मन में सवाल आया, "हमारे यहाँ तो हमेशा कम बारिश होती है तो क्या यहाँ हमेशा अकाल पड़ेगा?"

तब दादाजी ने कहा, "अरे! अकाल को मात दी जा सकती है। इसके कई उपाय हैं। पानी का उपयोग सँभल कर करना चाहिए। बारिश के पानी की हर बँदू को रोकना, उसका ज़मीन में रिसना ज़रूरी है।

बारिश ज़्यादा हो इसके लिए पेड़ लगाने चहिए। हमारे पुराने तालाब अब काम के नहीं रहे। उनको साफ़ करने की ज़रूरत है और जहाँ बारिश अच्छी होती है वहाँ से पानी नहर के रास्ते अकालग्रस्त इलाकों में ले आना चाहिए।" पिंटू ने कहा, "जी दादाजी, अब आई बात समझ में" और वह खेलने के लिए बाहर भागा। आँगन में पहुँचते ही उसके पैर थम गए और एक नया प्रश्न उसके मन में सिर उठाने लगा।

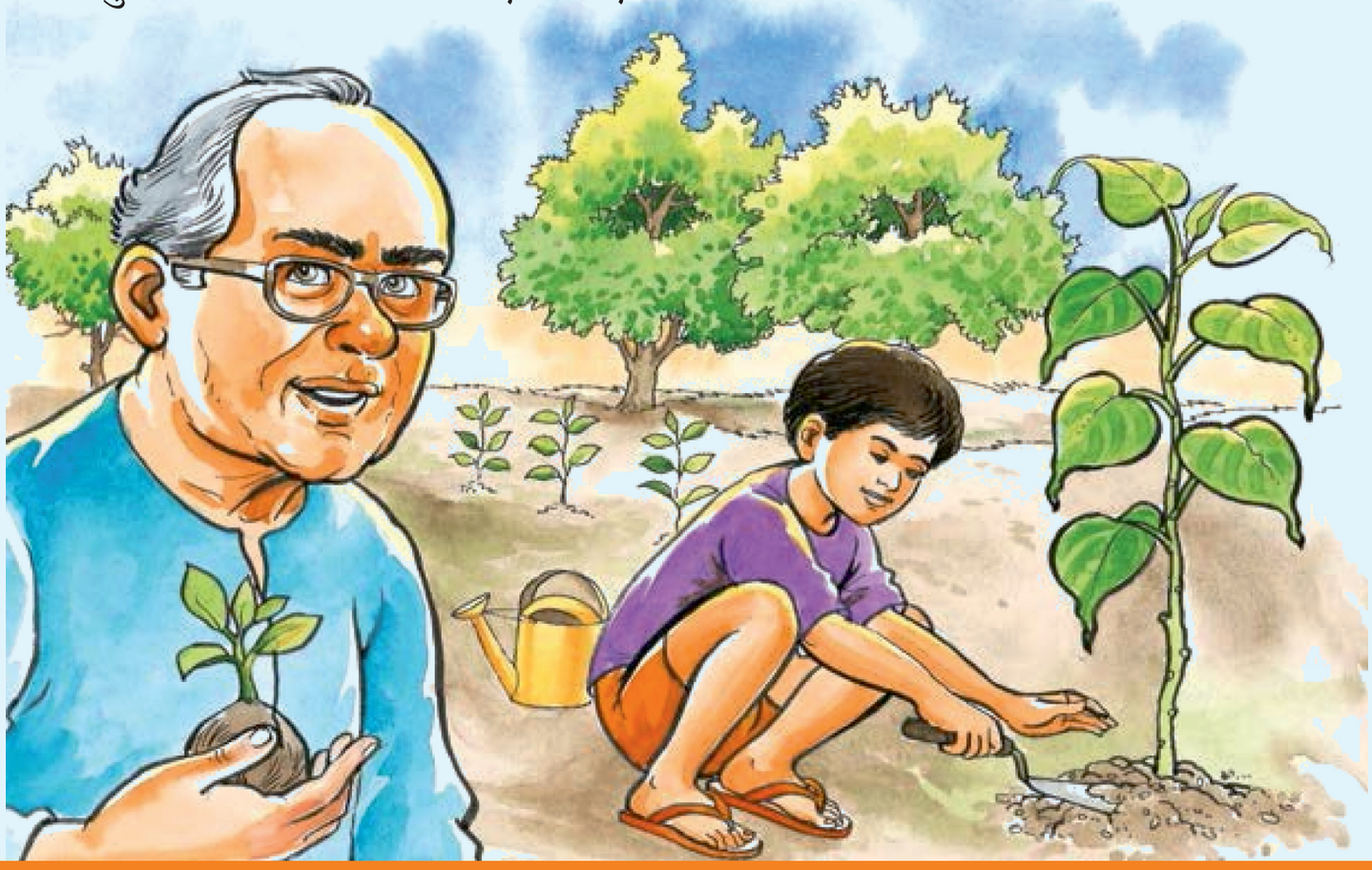

Written by: **Pankaj Dhumale**, Illustrated by: **Partha Sengupta**

अकाल

1. पिंटू के मन में कौन–कौन से सवाल उठ रहे थे?

2. दादाजी ने पिंटू को अकाल के बारे में क्या बताया?

3. अकाल से बचने के क्या–क्या उपाय हो सकते हैं?

4. समुद्र का पानी पीने और सिचाँई के लिए इस्तेमाल क्यों नहीं होता?

5. आप पानी का सही इस्तेमाल कैसे करेगें? चार तरीके लिखें।

6. 'अभाव' शब्द सुनकर आपके दिमाग में कौन–कौन से शब्द आते हैं? उन्हें लिखें।

7. 'पीने योग्य' जल कहाँ–कहाँ से प्राप्त होता हैं?

गुल्ली का ग़ज़ब पिटारा

नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। आप इन में से कितने शब्दों के अर्थ जानते हैं या इनसे परिचित हैं। उन शब्दों के सामने सही (✓) का निशान लगाएँ और उनके अर्थ लिखें।

शब्द	पहले से जानते हैं	समूह में बातचीत के बाद जाना	शब्द के अर्थ लिखें
ग़ज़ब			
अख़बार			
झटसे			
भूरा			
पिटारा			
चमचमाता			
मैगनिफाइंग			
लेंस			
कमाल			
शौक़			
बोतल			
बक्सा			
चाबी			
ढक्कन			
चुम्बक			
धन्यवाद			
माथा			
चूमना			
खोना			
थकना			

निर्देश : प्रिय दोस्तो, पाठ पढ़ने से पहले इन शब्दों को ज़रूर पढ़ें और इनके अर्थ जानने का प्रयास करें। अब आप अपने–अपने समूह में इन शब्दों पर बातचीत करें। ये प्रक्रिया पाठ को पढ़कर समझने में आपकी सहायता करेगी।

गुल्ली का ग़ज़ब पिटारा

"दादाजी, आज आप अख़बार नहीं पढ़ रहे हैं?" एक सुबह गुल्ली ने दादाजी से पूछा। "मेरा चश्मा टूट गया है और उसके बिना मैं पढ़ नहीं सकता," दादाजी समझाते हुए बोले। दादाजी की बात सुनकर गुल्ली झट से कमरे में गया और अपना भूरा बक्सा ले आया।

टन-टना टन! धड़ाम-धूम! गुल्ली के ग़ज़ब पिटारे से एक चमचमाता, मैगनिफाइंग लेंस निकला! "अगर दादाजी आप इससे देखेंगे, तो आपको सब कुछ बड़ा और साफ़ दिखेगा।" "अरे यह तो कमाल हो गया। जब तक मेरा चश्मा नहीं बनता मैं इसी से अख़बार पढ़ूँगा," दादाजी मुस्कराते हुए बोले। गुल्ली को तरह-तरह की चीज़ें इकट्ठा करने का बहुत शौक़ था। चाहे वह नई चीज़ हो या टूटी फूटी हो, जैसे - ताले की चाबी, बोतलों का ढक्कन, टूटा चश्मा। उसे जो भी चीज़ मिलती अपने भूरे बक्से में रख लेता।

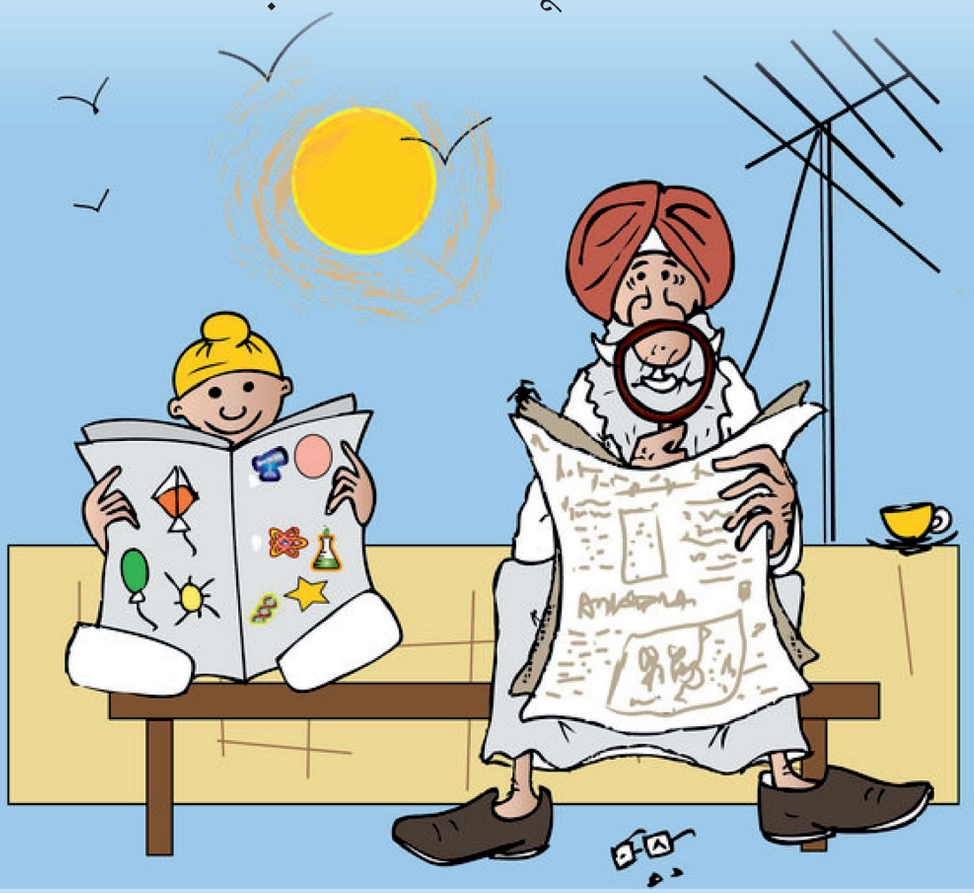

शाम का समय था। दादी, दादाजी की ऊन की टोपी की सिलाई कर रही थीं। तभी उनके हाथ से सुई नीचे गिर गई। दादी ढूँढ-ढूँढकर थक गई मगर सुई नहीं मिली। तब दादी ने गुल्ली को आवाज़ लगाई और सुई ढूँढने को कहा। गुल्ली झट से अपना पिटारा ले आया।

टन-टना टन! धड़ाम-धूम! इस बार गुल्ली ने बक्से से चुम्बक निकाला। उसमें लोहे की चीज़ें चिपक जाती हैं। "अब मैं इसे ज़मीन पर घुमाऊँगा और जल्द ही आपकी सुई मिल जाएगी।" गुल्ली दादी से बोला। थोड़ी देर चुम्बक घुमाने पर सुई मिल गई। साथ ही और बहुत-सी खोई हुई चीज़ें भी चुम्बक पर चिपक गई!

"धन्यवाद गुल्ली बेटा, तुम तो बहुत सयाने हो। तुम्हारा यह छोटा, भूरा बक्सा सचमुच ग़ज़ब का है।" दादी गुल्ली के माथे को चूमते हुए बोलीं।

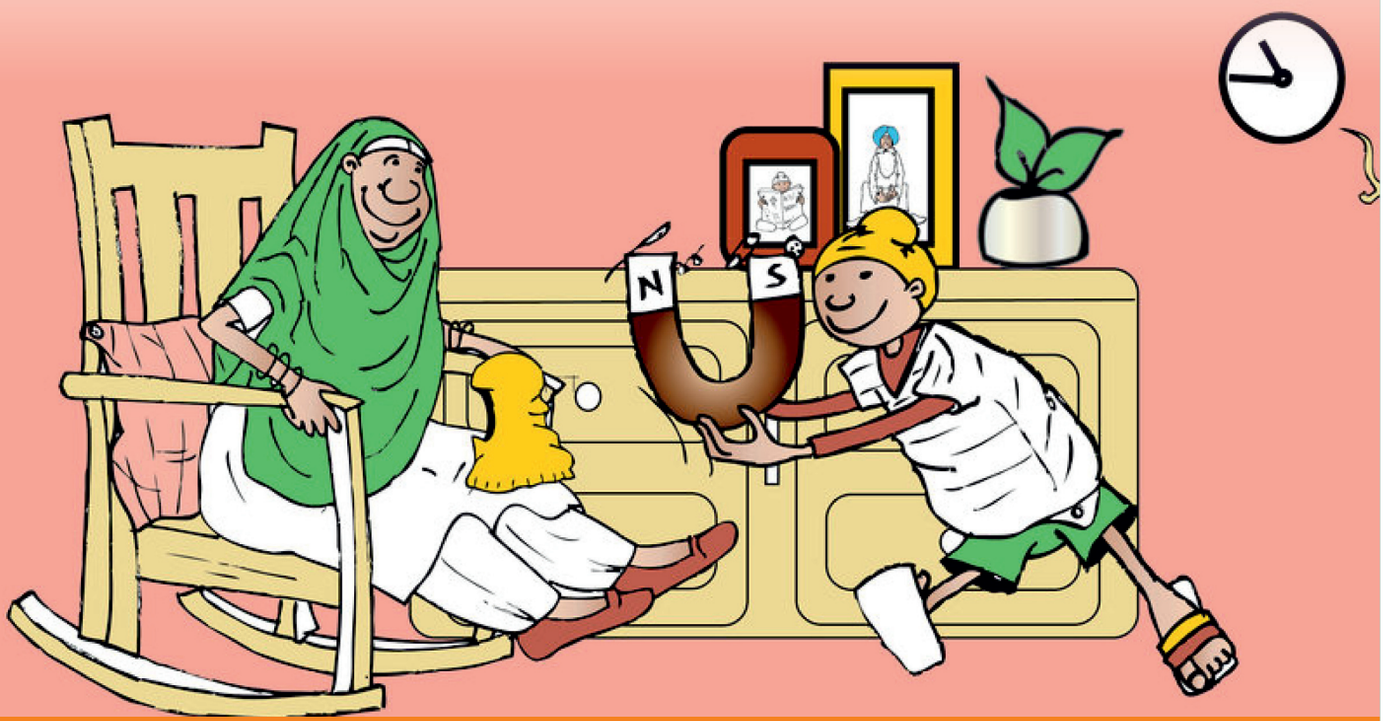

Translated by Mamta Naini
Original story Gulli's Box of Things by Anupama Ajinkya Apte
Illustrated by Anupama Ajinkya Apte

गुल्ली का ग़ज़ब पिटारा

1. दादाजी अख़बार क्यों नहीं पढ़ पा रहे थे?

2. गुल्ली के भूरे बक्से में क्या–क्या सामान था?

3. गुल्ली ने दादी की सुई कैसे ढूँढ निकाली?

4. गुल्ली ने चुम्बक की मदद से सुई कैसे ढूँढ़ी होगी? चुंबक से आप क्या–क्या काम कर सकते हैं?

5. आपको कौन–कौन सी चीज़ें इकट्ठी करने का शौक़ है? उनके नाम लिखें।

7. क्या हमें दूसरों की मदद करनी चाहिए 'हाँ' तो क्यों 'ना' तो क्यों नहीं? अपनी राय लिखें।

नील के दाता

नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। आप इन में से कितने शब्दों के अर्थ जानते हैं या इनसे परिचित हैं। उन शब्दों के सामने सही (✓) का निशान लगाएँ और उनके अर्थ लिखें।

शब्द	पहले से जानते हैं	समूह में बातचीत के बाद जाना	शब्द के अर्थ लिखें
घुटना			
मुस्कराना			
स्वागत			
परिचय			
नज़र			
चम्पारण			
जुल्म			
सहारा			
विनम्रता			
विश्वास			
नील			
विरोध			
ख़िलाफ़			
वासियों			
नियम			
तहत			
बीघा			
बंजर			
मुआवज़ा			
मालामाल			

निर्देश : प्रिय दोस्तो, पाठ पढ़ने से पहले इन शब्दों को ज़रूर पढ़ें और इनके अर्थ जानने का प्रयास करें। अब आप अपने–अपने समूह में इन शब्दों पर बातचीत करें। ये प्रक्रिया पाठ को पढ़कर समझने में आपकी सहायता करेगी।

नील के दाता

कलकत्ता के हावड़ा स्टेशन पर घुटनों तक धोती पहने मुस्कराते हुए एक आदमी गांधी जी का स्वागत करने पहुँचा। जेसै ही गांधी जी उसके करीब पहुँचे उसने जल्दी से अपना परिचय दिया, "जी, मैं राजकुमार शुक्ल।" गांधी जी ने उन्हें एक नज़र देखा और बोले, "जाना ही होगा चम्पारण?"

"अंग्रेज़ों का ज़ुल्म बहुत बढ़ गया है और चम्पारण के लोगों को बस आपका सहारा है," राजकुमार जी बड़ी विनम्रता से बोले लेकिन उनकी बातों में दृढ़ विश्वास था। गांधी जी ना नहीं कर सके और चल पड़े चम्पारण नील की खेती के विरोध में 'अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ लड़ने।'

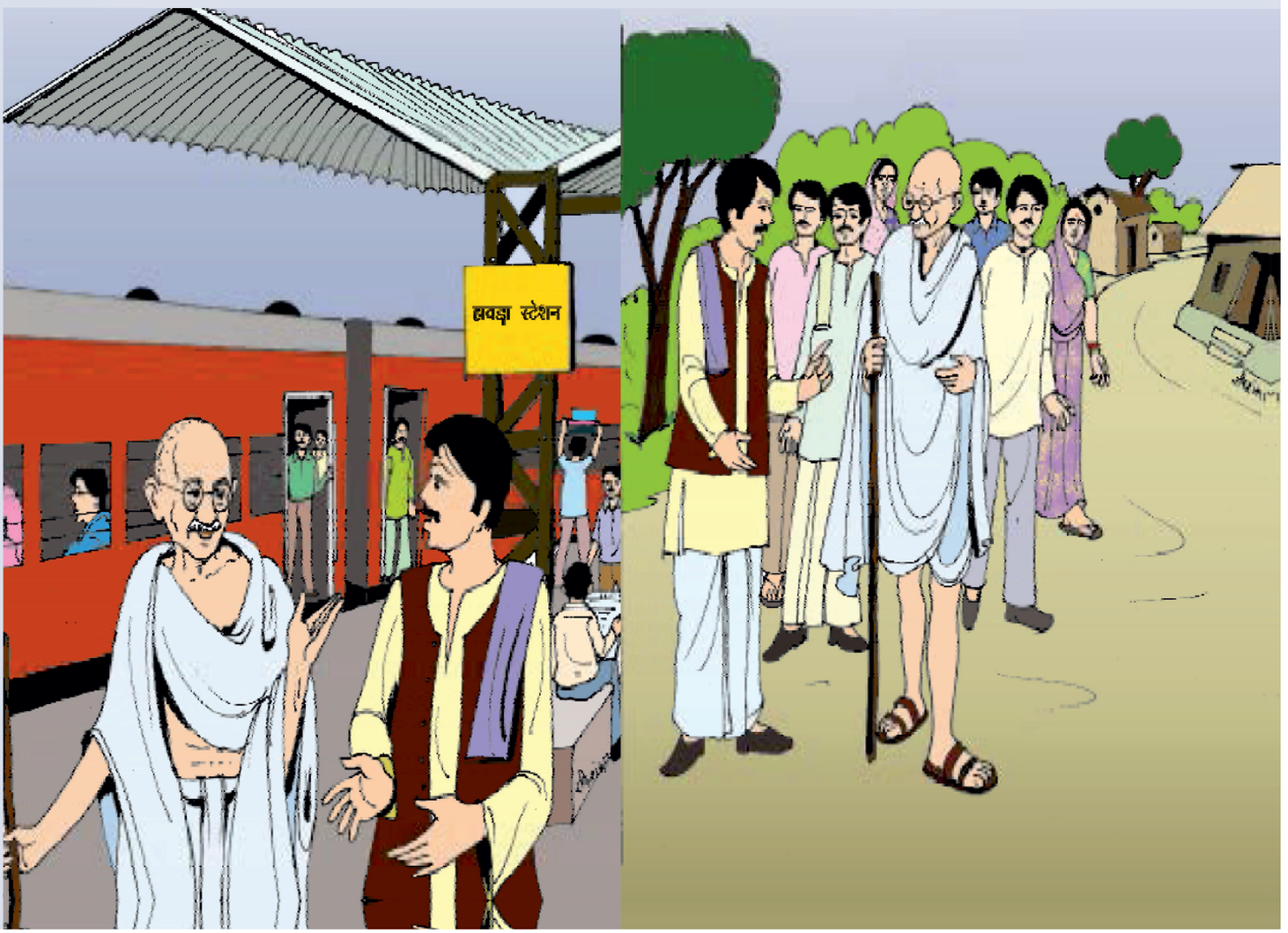

चम्पारण वासियों को 'तीन कठिया' नियम के तहत हर एक बीघा ज़मीन में नील की खेती करना ज़रुरी था। नील की खेती से ज़मीन बंजर होती जा रही थी और मुआवज़ा घटता जा रहा था। अंग्रेज़ मालामाल हो रहे थे और किसान बेहाल। इनकार करने पर कोड़े खाने को मिलते सो अलग।

1917 में गांधी जी चम्पारण के 'भीतिहरण आश्रम' आए और सत्याग्रह आँदोलन से चम्पारण के किसानों को अंग्रेज़ों से आज़ादी दिलाई।

इस आंदोलन में 'सत्वारिया गाँव' के छोटे किसान राजकुमार शुक्ल के योगदान को कभी नहीं भुलाया जा सकता। अगर वह गांधी जी के पीछे नहीं पड़ते और उन्हें चम्पारण आने पर मजबूर नहीं करते तो शायद आज देश का इतिहास कुछ और ही बयान कर रहा होता।

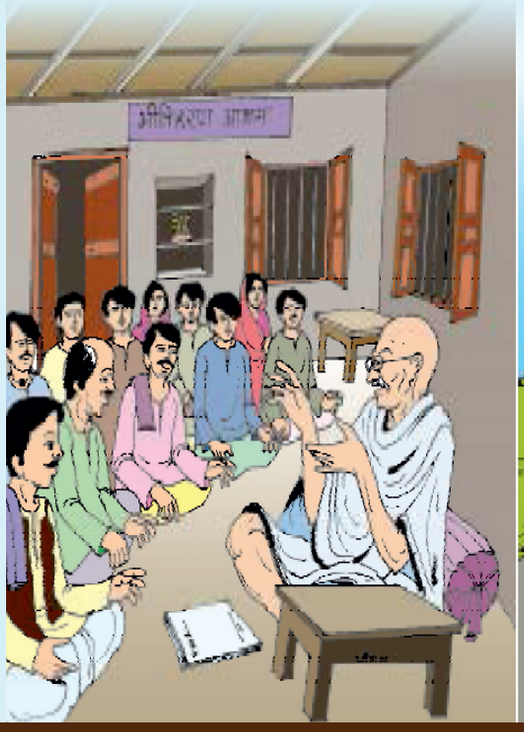

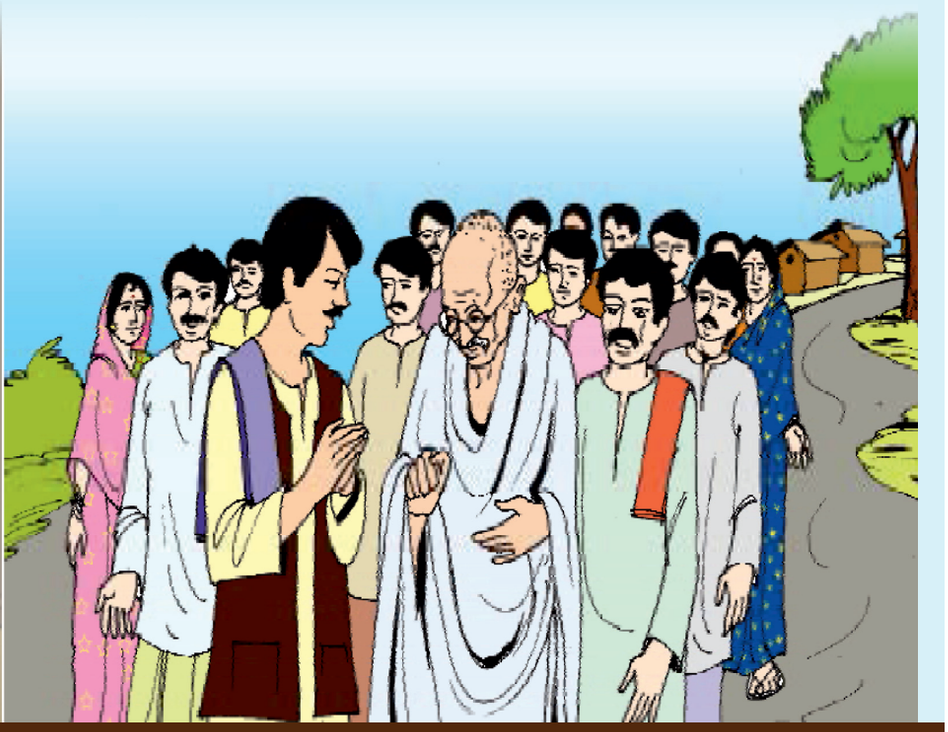

Written by: Purnima Bala Srivastaw, Photographs by: Ravishankar

नील के दाता

1. राजकुमार शुक्ल, गांधी जी को चम्पारण क्यों ले जाना चाहते थे?

2. नील की खेती से चम्पारण में किसानों को क्या नुकसान हो रहा था?

3. चम्पारण में नील की खेती न करने पर किसानों को क्या सज़ा दी जाती थी?

4. नीचे लिखे शब्दों को पढ़कर उनके अर्थ लिखें।

- ज़ुल्म –
- बेहाल –
- आश्रम –

5. "चम्पारण के लोगों को बस आपका सहारा है" राजकुमार शुक्ल ने गांधी जी से ऐसा क्यों कहा था? अपने विचार लिखें।

6. यह पाठ किसके बारे में है? क्या आप उनके बारे में दो बातें बता सकते हैं?

‘मेरी मछली!’ ‘नहीं मेरी मछली!’

नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। आप इन में से कितने शब्दों के अर्थ जानते हैं या इनसे परिचित हैं। उन शब्दों के सामने सही (✓) का निशान लगाएँ और उनके अर्थ लिखें।

शब्द	पहले से जानते हैं	समूह में बातचीत के बाद जाना	शब्द के अर्थ लिखें
मछली			
किच्चू			
जम्हाई			
तालाब			
चोरु			
बंसी			
सुबह			
रास्ता			
मुनिया			
दोस्त			
पकड़ना			
तैरना			
अप्पा			
पैर			
ज़ोर			
रस्सी			
खींचना			
चिल्लाना			
बाँधना			
टूटना			

निर्देश : प्रिय दोस्तो, पाठ पढ़ने से पहले इन शब्दों को ज़रूर पढ़ें और इनके अर्थ जानने का प्रयास करें। अब आप अपने–अपने समूह में इन शब्दों पर बातचीत करें। ये प्रक्रिया पाठ को पढ़कर समझने में आपकी सहायता करेगी।

‘मेरी मछली!’ ‘नहीं मेरी मछली!’

एक सुबह किच्चू जल्दी उठा। उसने जम्हाई लेते हुए कहा, “चलकर थोड़ी मछलियाँ पकड़ी जाए।” तालाब के रास्ते में उसे चोरु मिल गया। वे दोनों पक्के दोस्त हैं। सारा दिन एक साथ खेलते हैं। मुनिया ने उन्हें मछली पकड़ने की बंसी लेकर जाते हुए देखा।

“हम मछली पकड़ने तालाब जा रहे हैं। अगर तुम चाहो तो साथ आ सकती हो।” मुनिया ने कुछ देर सोचा और बोली, “ऐसा मत करो, बिना पानी के मछलियाँ तो मर जाएँगी।” उन्होंने मुनिया की बात नहीं सुनी। वे सीधे तालाब की ओर चल पड़े। मुनिया भी उनके पीछे-पीछे चल पड़ी। किच्चू और चोरु

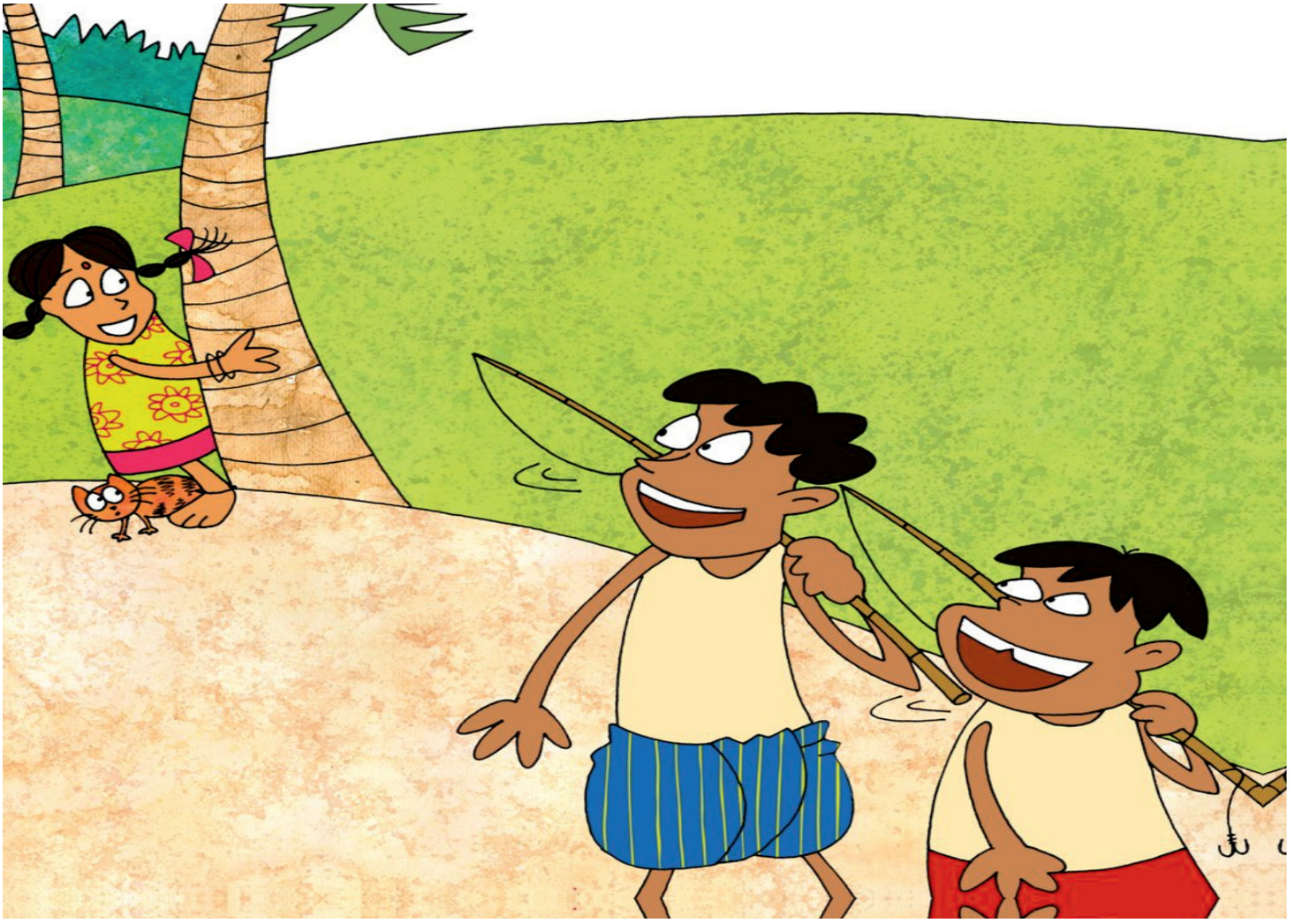

तालाब के किनारे बैठ गए। दो मछलियाँ सामने से तैरती हुई निकल गईं, एक पतली और दूसरी गोल। फिर तीसरी मछली आई। मुनिया चिल्लाई, "यह तो अप्पा के पैरों से भी बड़ी है।" आज तक उन्होंने इतनी बड़ी मछली नहीं देखी थी! किच्चू और चोरु ने अपनी-अपनी मछली पकड़ने की बंसी कस कर पकड़ ली। किच्चू चिल्लाया, "मेरी मछली!" चोरु भी चिल्लाया, "नहीं... मेरी मछली!" किच्चू ने ज़ोर से खींचा... चोरु ने और ज़ोर से खींचा... फट! दोनों की बंसी टूट गई। धम्म! किच्चू ज़मीन पर गिर पड़ा। गुड्डुब! चोरु पानी में गिर गया। यह कैसे हुआ? आपको क्या लगता है, मछलियों ने दोनों की रस्सियाँ आपस में बाँध दी थीं?

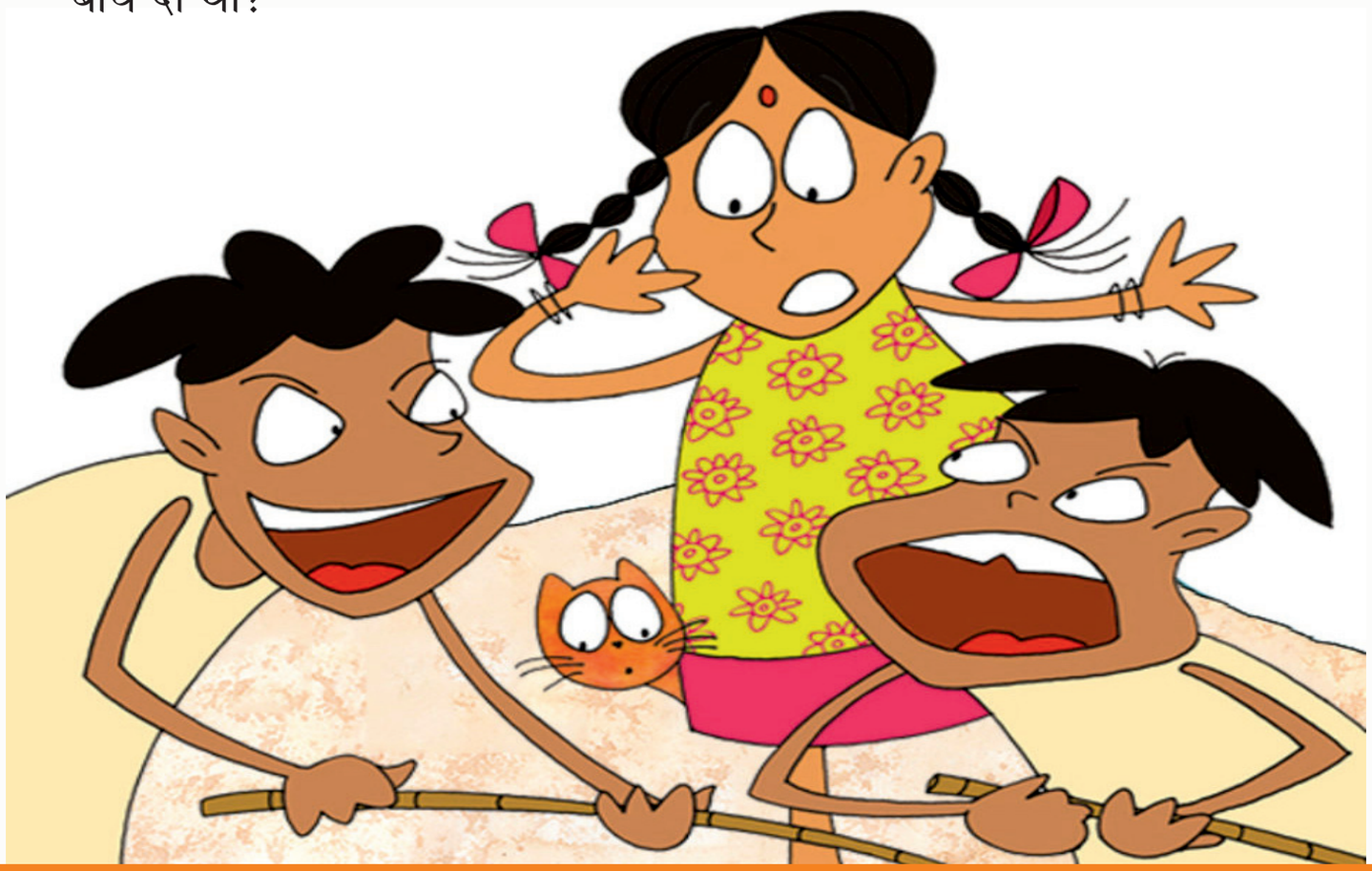

Translated by Rituparna Ghosh
Original story "My fish!" "No, my fish!" by Suraj J Menon
Illustrated by Soumya Menon

‘मेरी मछली!’ ‘नहीं मेरी मछली!’

1. किच्चू ने सुबह उठकर क्या सोचा?

2. मुनिया ने किच्चू व चोरु को क्या सलाह दी?

3. आप मुनिया की जगह होते तो क्या करते?

4. किच्चू व चोरु दोनों की बंसी कैसे टूट गईं?

5. क्या मछलियाँ पकड़ना ठीक है? अपनी राय दें।

6. यदि मछलियाँ बोल सकतीं तो किच्चू और चोरु को क्या बोलतीं?

सीधा साधा सर्पी

नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। आप इन में से कितने शब्दों के अर्थ जानते हैं या इनसे परिचित हैं। उन शब्दों के सामने सही (✓) का निशान लगाएँ और उनके अर्थ लिखें।

शब्द	पहले से जानते हैं	समूह में बातचीत के बाद जाना	शब्द के अर्थ लिखें
सर्पी			
घना			
अक्सर			
सीधी			
रेखा			
केवल			
रेंगना			
आड़ा			
तिरछा			
ज़िग–ज़ैग			
नज़र			
सरकना			
दर्जन			
पंख			
फ़ायदा			
सदा			
औरों			
चिंता			
पंख			
क़तार			

निर्देश : प्रिय दोस्तो, पाठ पढ़ने से पहले इन शब्दों को ज़रूर पढ़ें और इनके अर्थ जानने का प्रयास करें। अब आप अपने–अपने समूह में इन शब्दों पर बातचीत करें। ये प्रक्रिया पाठ को पढ़कर समझने में आपकी सहायता करेगी।

सीधा साधा सर्पी

एक घने जंगल में एक साँप रहता था। नाम था सर्पी।

अक्सर साँपों के बारे में आपने पढ़ा होगा कि साँपों की टाँगें नहीं होतीं। वे चल नहीं सकते, दौड़ भी नहीं सकते। साँपों के पंख नहीं होते। वे उड़ नहीं सकते। एक सीधी रेखा में वे तैर भी नहीं सकते। लेकिन सर्पी चलना चाहता था, दौड़ना चाहता था, उड़ना चाहता था और सीधी रेखा में तैरना भी चाहता था। वह हर पल यही सोचता रहता था। "अगर मेरी टाँगें होतीं तो मैं सीधी रेखा में चल पाता। अगर मेरे पंख होते तो मैं सीधी रेखा में उड़ पाता। लेकिन मैं कितना अजीब हूँ। न तो सीधे चल सकता हूँ, न सीधे दौड़ पाता हूँ। न सीधे उड़ सकता हूँ और न सीधे तैर पाता हूँ! मैं केवल रेंगता हूँ– आड़े, तिरछे, आड़े, तिरछे! ज़िग–ज़ैग, ज़िग–ज़ैग।"

एक दिन सर्पी ने कुछ पक्षियों को उड़ते हुए देखा। वे ऊपर, नीचे, दाएँ, बाएँ, गोल, गोल उड़ रहे थे। एक भी सीधी रेखा में नहीं उड़ रहा था। फिर सर्पी की

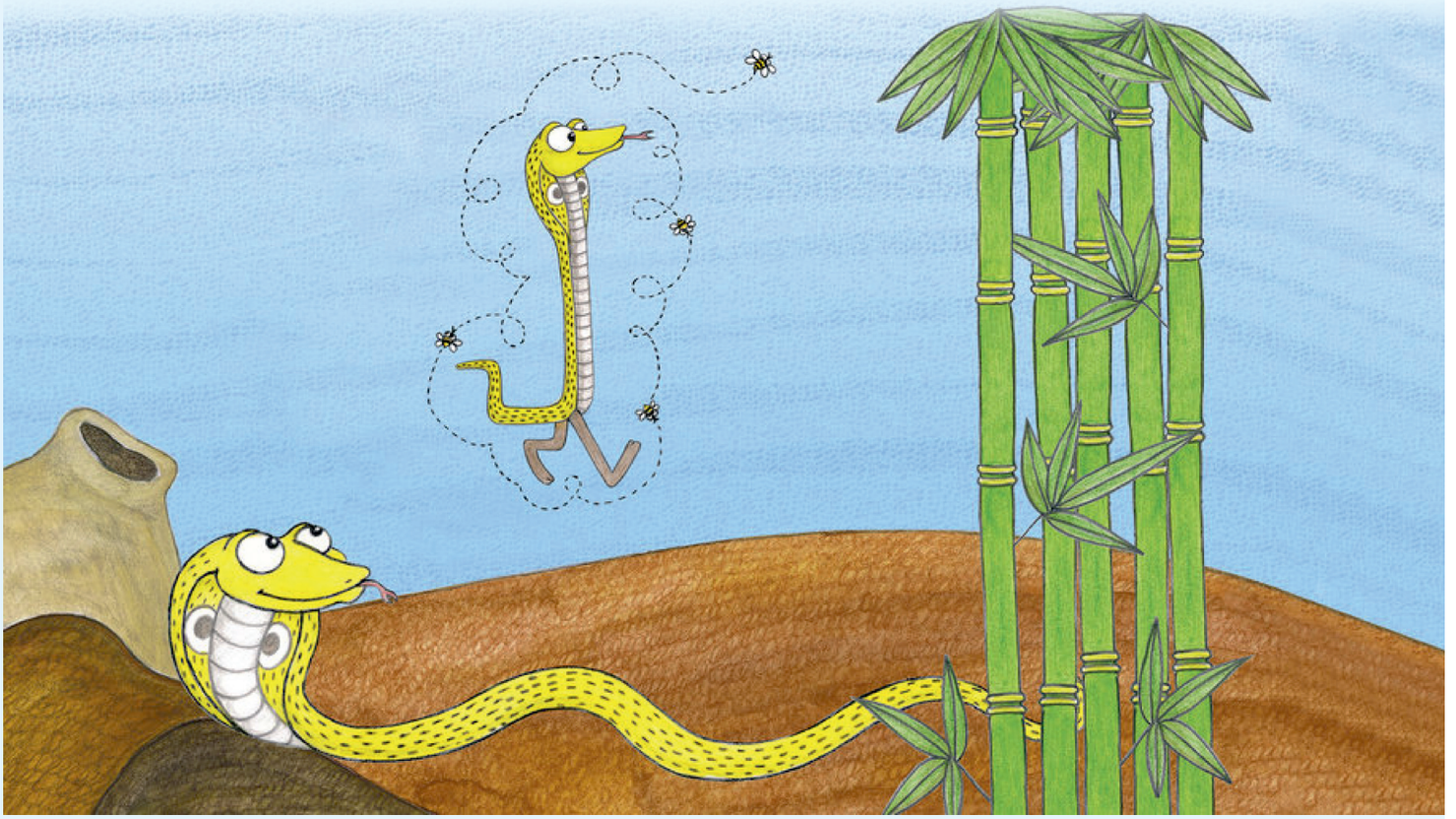

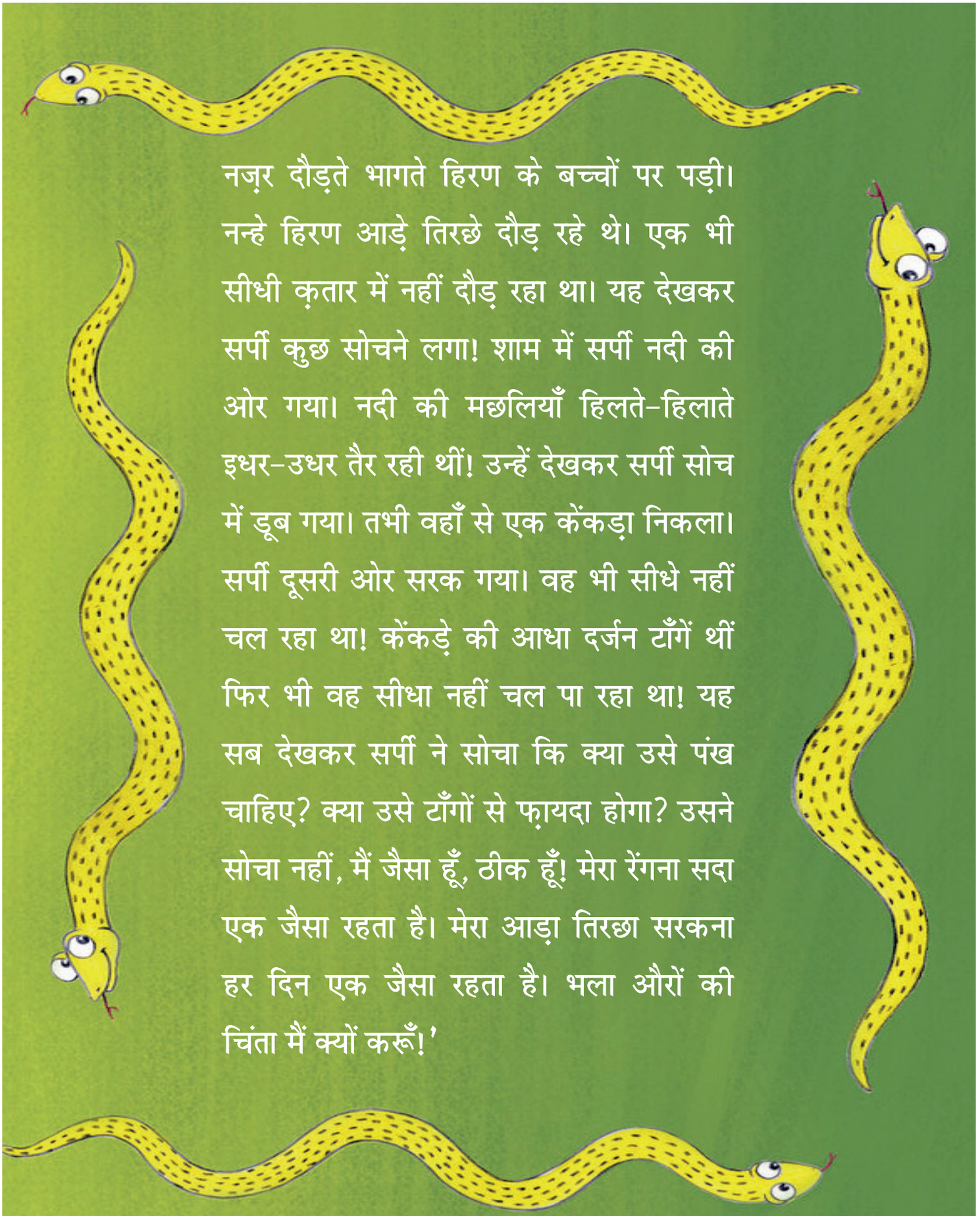

नज़र दौड़ते भागते हिरण के बच्चों पर पड़ी। नन्हे हिरण आड़े तिरछे दौड़ रहे थे। एक भी सीधी क़तार में नहीं दौड़ रहा था। यह देखकर सर्पी कुछ सोचने लगा! शाम में सर्पी नदी की ओर गया। नदी की मछलियाँ हिलते-हिलाते इधर-उधर तैर रही थीं! उन्हें देखकर सर्पी सोच में डूब गया। तभी वहाँ से एक केंकड़ा निकला। सर्पी दूसरी ओर सरक गया। वह भी सीधे नहीं चल रहा था! केंकड़े की आधा दर्जन टाँगें थीं फिर भी वह सीधा नहीं चल पा रहा था! यह सब देखकर सर्पी ने सोचा कि क्या उसे पंख चाहिए? क्या उसे टाँगों से फ़ायदा होगा? उसने सोचा नहीं, मैं जैसा हूँ, ठीक हूँ! मेरा रेंगना सदा एक जैसा रहता है। मेरा आड़ा तिरछा सरकना हर दिन एक जैसा रहता है। भला औरों की चिंता मैं क्यों करूँ!'

Translated by Rajesh Khar
Original story Serpy, the Snake by Rajiv Tambe
Illustrated by Rijuta Ghate

सीधा-साधा सर्पी

1. कहानी में साँप के बारे में बताई गई किन्हीं दो बातों के बारे में बताएँ।

2. सर्पी अपने बारे में अक्सर क्या सोचता रहता था?

3. सर्पी की सीधे चलने या उड़ने की इच्छा क्यों बदल गई?

4. सर्पी के अलावा इस कहानी में और किस–किस के बारे में बताया गया है?

5. निम्नलिखित वर्गों में आने व जीवों के नाम लिखें।

	उड़ना	तैरना	रेंगना
(क)			
(ख)			
(ग)			
(घ)			

6. आपको मौक़ा मिले तो आप कौन–सा जीव, जानवर या पक्षी बनना चाहेंगे और क्यों?

शहीद पीर अली

नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। आप इन में से कितने शब्दों के अर्थ जानते हैं या इनसे परिचित हैं। उन शब्दों के सामने सही (✓) का निशान लगाएँ और उनके अर्थ लिखें।

शब्द	पहले से जानते हैं	समूह में बातचीत के बाद जाना	शब्द के अर्थ लिखें
शहीद			
लगातार			
धमाचौकड़ी			
थकान			
भाँपकर			
सुस्ताना			
गटागट			
पार्क			
तैयार			
अचकचाकर			
दोहराया			
इंकलाबी			
गुलाम			
हुकूमत			
ज़ुल्म			
मर्ज़ी			
वक़्त			
ख़िलाफ़			
आज़ादी			
द्वारा			

निर्देश : प्रिय दोस्तो, पाठ पढ़ने से पहले इन शब्दों को ज़रूर पढ़ें और इनके अर्थ जानने का प्रयास करें। अब आप अपने–अपने समूह में इन शब्दों पर बातचीत करें। ये प्रक्रिया पाठ को पढ़कर समझने में आपकी सहायता करेगी।

शहीद पीर अली

लगातार दो घंटे से पार्क में धमाचौकड़ी मचाने के बाद चंदा थोड़ी थक गई थी। पापा तो पहले से ही थक कर पेड़ की छाया में बैठे थे। चंदा की थकान को भाँपकर पापा ने उसे पुकारा, ''अरे, थोड़ा सुस्ता लो फिर दौड़ लगाना।'' चंदा दौड़कर पापा के पास आ गई। थोड़ी देर रुकी, बोतल निकाल कर गटागट पानी पीने लगी। अचानक चंदा ने पापा से पूछा, ''पापा! इसे शहीद पीर अली पार्क क्यों कहते हैं?'' पापा इस सवाल के लिए तैयार नहीं थे। उन्होंने अचकचाकर चंदा की तरफ़ देखा। चंदा ने फिर से वही सवाल दोहराया तो पापा को बोलना ही पड़ा। ''पीर अली एक इंक़लाबी थे। वह पटना शहर में रहते थे। उनकी किताबों की दुकान थी।

उस समय हमारा देश गुलाम था। हमारे देश पर अंग्रेज़ों की हुकूमत थी। अंग्रेज़ हम हिन्दुस्तानियों पर बहुत ज़ुल्म ढाते थे। कोई भी अपनी मर्ज़ी से कुछ नहीं कर सकता था। उस वक़्त पूरे हिन्दुस्तान में लोग अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ खड़े होने लगे थे। पीर अली को भी अंग्रेज़ों की गुलामी मंजूर नहीं थी। उन्होंने अंग्रेज़ों के



ख़िलाफ़ लड़ाई छेड़ दी। अंग्रेज़ों ने उन पर बहुत जुल्म ढाए। मगर पीर अली न झुके, न टूटे। उनके लिए देश की आज़ादी सबसे ऊपर थी। अंग्रेज़ सिपाहियों द्वारा किया गया हर जुल्म, हर चोट सहते रहे। अंत में अंग्रेज़ी सरकार उनके देश प्रेम के जज़्बे से डर गई और जुलाई 1857 ई. में पीर अली को फाँसी पर चढ़ा दिया गया।''

चंदा ग़ौर से सब सुन रही थी। उसके पापा ने पूछा, ''जानती हो उन्हें कहाँ फाँसी दी गई थी?'' पापा के सवाल से जैसे वह सपने से जागी। उसने पलटकर सवाल किया, ''कहाँ फाँसी दी गई थी?'' पापा ने जवाब दिया, ''यहीं इसी जगह पर जहाँ तुम मज़े से खेल रही हो। उन्हीं की याद में यह पार्क बनाया गया है।'' चंदा कुछ देर के लिए ख़ामोश हो गई। कुछ देर की चुप्पी के बाद चंदा ने सवाल किया, ''पापा। अगर पीर अली जैसे लोग अपनी जान देकर देश को आज़ाद नहीं कराते तो क्या होता?'' पापा ने कहा, ''तो शायद तुम सभी बच्चे यहाँ इतनी खुशी से झूला नहीं झूल रहे होते।''



Written by: **Ghalib, Uday**, Illustrated by: **Sitaram**

शहीद पीर अली

1. चंदा क्यों थम–सी गई थी?

2. 'पार्क' का नाम 'शहीद पीर अली पार्क' क्यों रखा गया था?

3. सब लोग अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ क्यों खड़े हो गए थे?

4. जब देश गुलाम था उस वक़्त क्या हालात रहे होंगे? सोचकर लिखें।

5. यदि हमारा देश आज़ाद नहीं होता तो आज कैसा होता? सोचकर लिखें।

6. इस पाठ को अपने शब्दों में बताएँ?

नई दिशा

नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। आप इन में से कितने शब्दों के अर्थ जानते हैं या इनसे परिचित हैं। उन शब्दों के सामने सही (✓) का निशान लगाएँ और उनके अर्थ लिखें।

शब्द	पहले से जानते हैं	समूह में बातचीत के बाद जाना	शब्द के अर्थ लिखें
दिशा			
समूहगान			
प्रमुख			
अतिथि			
इजाज़त			
अव्वल			
सरपंच			
महोदया			
ध्वजारोहण			
गर्व			
महसूस			
भाषण			
ज़्यादा			
खुशी			
शुरू			
घोषणा			
तैयार			
तिरंगा			
आसमान			
लहराना			

निर्देश : प्रिय दोस्तो, पाठ पढ़ने से पहले इन शब्दों को ज़रूर पढ़ें और इनके अर्थ जानने का प्रयास करें। अब आप अपने–अपने समूह में इन शब्दों पर बातचीत करें। ये प्रक्रिया पाठ को पढ़कर समझने में आपकी सहायता करेगी।

नई दिशा

सुमन दौड़ते हुए पूनम के घर पहुँची। आज स्कूल में समूहगान के लिए जल्दी जाना था। 26 जनवरी के दिन उनकी कक्षा प्रमुख अतिथि के सामने गाना सुनाने वाली थी। पूनम बहुत मनाने के बाद रोज़ स्कूल आ रही थी।

बात ऐसी थी कि गाँव का स्कूल बस सातवीं कक्षा तक था। आगे पढ़ने के लिए बच्चों को बस से 15 किलोमीटर की दूरी तय करके स्कूल जाना पड़ता था। मगर पूनम को सफर करने की इजाज़त नहीं थी। इसलिए वह उदास थी। पढ़ाई में अव्वल होने पर भी अगले साल स्कूल न जाने की बात उसे सता रही थी।

26 जनवरी का दिन आया। इस बार उनके स्कूल में प्रमुख अतिथि को देखकर सारे बच्चे दंग रह गए। उनकी अतिथि गाँव की पहली महिला सरपंच थी।

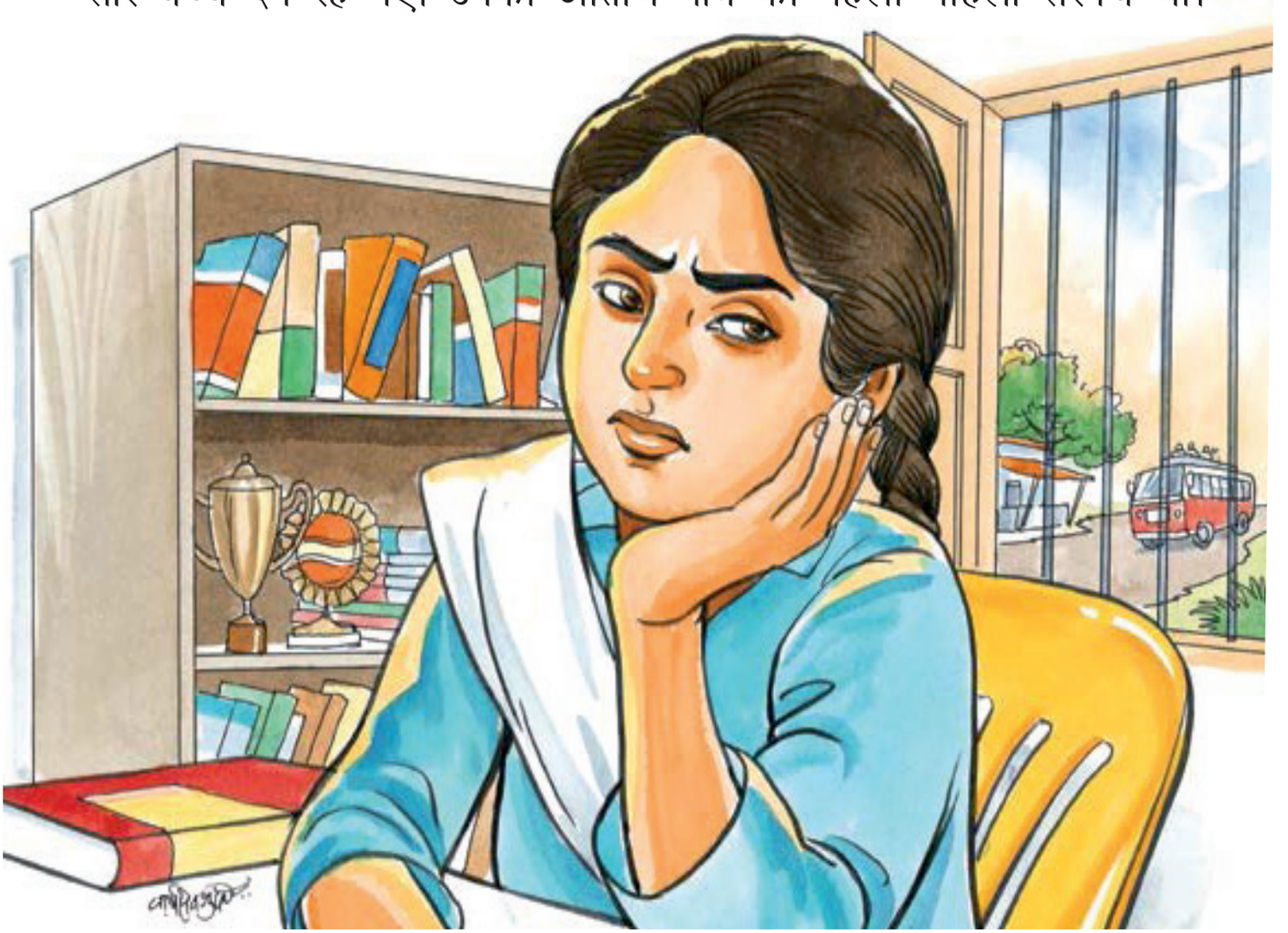

सरपंच महोदया के हाथ से ही ध्वजारोहण हुआ। एक महिला के हाथों हुआ ध्वजारोहण देखकर लड़कियों ने गर्व महसूस किया।

अपने भाषण से तो उन्होंने सभी बच्चों का मन जीत लिया। सबसे ज़्यादा ख़ुशी सुमन को हुई क्योंकि सरपंच महोदया ने आगे की कक्षाएँ गाँव में ही शुरू करने की घोषणा की थी। वह भी अगले साल से। तो अब किसी को न दूर जाना था और न किसी के स्कूल छूटने का डर था। दूसरे दिन पूनम सुमन के आने से पहले ही तैयार थी। अब उसके सपने तिरंगे के साथ ऊँचे आसमान में लहरा रहे थे।



Written by: Meenal Joshi, Illustrated by: Partha Sengupta

नई दिशा

1. सुमन और पूनम को स्कूल जल्दी क्यों जाना था?

2. सुमन क्यों उदास थी?

3. सरपंच महोदया ने क्या घोषणा की थी?

4. शब्दों को सही करें।

पहूची –	सकूल –	परमूख–
गाव –	अववल –	सरपचं–

5. आपके स्कूल में कौन–कौन से कार्यक्रम होते हैं? वे कार्यक्रम किन–किन मौकों पर आयोजित होते हैं?

कार्यक्रम	अवसर पर

6. आपके स्कूल में 26 जनवरी कैसे मनाई जाती है? अपने शब्दों में लिखें।

7. आपको स्कूल कैसा लगता है? सोचकर अपने विचार लिखें।

निबंध की कॉपी

नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। आप इन में से कितने शब्दों के अर्थ जानते हैं या इनसे परिचित हैं। उन शब्दों के सामने सही (✓) का निशान लगाएँ और उनके अर्थ लिखें।

शब्द	पहले से जानते हैं	समूह में बातचीत के बाद जाना	शब्द के अर्थ लिखें
हमेशा			
निबंध			
गहरी			
शत्रुता			
विद्यार्थी			
घबराना			
शिक्षिका			
लिखना			
भूलना			
सुनाना			
आश्चर्य			
अन्य			
दंग			
मज़ा			
अचानक			
शक			
पन्ना			
कोरा			
तैयारी			
सोचना			

निर्देश : प्रिय दोस्तो, पाठ पढ़ने से पहले इन शब्दों को ज़रूर पढ़ें और इनके अर्थ जानने का प्रयास करें। अब आप अपने–अपने समूह में इन शब्दों पर बातचीत करें। ये प्रक्रिया पाठ को पढ़कर समझने में आपकी सहायता करेगी।

निबंध की कॉपी

सरिता को किताबें पढ़ने से ज़्यादा खेलना अच्छा लगता था। बातें करने के लिए भी वह हमेशा तैयार रहती थी। लेकिन पढ़ना और लिखना, ना बाबा ना! इसलिए सरिता को अपनी निबंध की कॉपी से गहरी शत्रुता थी।

एक दिन सभी विद्यार्थी शिक्षिका को अपना निबंध सुनाने वाले थे। सरिता हमेशा की तरह भूल गई थी कि उसे भी निबंध लिखना था। अब? लेकिन सरिता घबराई नहीं। अपनी बारी आने पर उसने् एक बार शिक्षिका की ओर देखा और खड़ी हो गई। उसने् कॉपी हाथ में पकड़ी और निबंध सुनाने लगी।



शिक्षिका आश्चर्य से सुनती रही। कक्षा के अन्य विद्यार्थी भी दंग रह गए। सरिता के निबंध में लिखी बातों में तो बहुत मज़ा आ रहा था। अचानक उसकी दौड़ती गाड़ी रुक गई। शिक्षिका को शक हुआ। उन्होंने कहा, "कॉपी इधर लाना।" सरिता ने कॉपी शिक्षिका को दे दी। शिक्षिका का शक सही निकला। कॉपी का पन्ना कोरा था।

सरिता ने मन ही मन डाँट खाने की तैयारी कर ली। मगर हुआ कुछ और! शिक्षिका ने कहा, "इतना सारा मन में रखती हो तो उसे काग़ज़ पर क्यों नहीं उतार देतीं?" सरिता को झटका लगा। "अरे यह तो सोचा ही नहीं," उसके मुँह से निकला।



Written by: Alka Ranade, Illu~strated by: Ajit Narayan

निबंध की कॉपी

1. कहानी से उन वाक्यों को छाँटें जिससे पता चलता है कि सरिता का पढ़ने लिखने में मन नहीं लगता था।

2. सरिता को पढ़ाई के अलावा और क्या–क्या अच्छा लगता था?

3. "इतना सारा मन में रखती हो तो कॉपी पर क्यों नहीं उतारती" क्या इस वाक्य का सरिता पर कोई प्रभाव पड़ा होगा? अपनी राय बताएँ।

4. पढ़ना–लिखना क्यों ज़रूरी है? अपने विचार लिखें।

5. पढ़ने के अलावा कौन–कौन से काम करने अच्छे लगते हैं?

6. आपको किन–किन कार्यों के लिए शबाशी मिलती है और डाँट पड़ती है?

शाबाशी वाले काम	डाँट पड़ने वाले काम

7. सरिता को अपनी निबंध की कॉपी से गहरी **शत्रुता** थी।
   रेखांकित शब्द को इस तरह बदलें कि उसका अर्थ न बदले।

8. 'दंग रह जाना' मुहावरे का अर्थ समझाते हुए उनसे वाक्य बनाएँ।

9. क्या आपका मन भी सरिता की तरह पढ़ाई में नहीं लगता? उसका कारण लिखें।

10. आप अपने किसी पसंदीदा विषय पर एक निबंध लिखें।

चाय

नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। आप इन में से कितने शब्दों के अर्थ जानते हैं या इनसे परिचित हैं। उन शब्दों के सामने सही (✓) का निशान लगाएँ और उनके अर्थ लिखें।

शब्द	पहले से जानते हैं	समूह में बातचीत के बाद जाना	शब्द के अर्थ लिखें
चाव			
ताज़गी			
स्वाद			
पेय			
तरीक़ा			
अंदाज़			
दुनिया			
दिन			
लगभग			
प्रकार			
देश			
समारोह			
रिवाज			
उबली			
मज़ा			
अमृत			
इरानी			
महाराष्ट्र			
ख़ास			
कुरकुरा			

निर्देश : प्रिय दोस्तो, पाठ पढ़ने से पहले इन शब्दों को ज़रूर पढ़ें और इनके अर्थ जानने का प्रयास करें। अब आप अपने–अपने समूह में इन शब्दों पर बातचीत करें। ये प्रक्रिया पाठ को पढ़कर समझने में आपकी सहायता करेगी।

चाय



पानी के बाद सबसे चाव से दुनिया भर में लोग जो पीना पसंद करते हैं वह है चाय! ताज़गी देने वाली चाय। पानी, मीठे स्वाद के लिए चीनी या गुड़ और चाय-पत्ती डालकर इस पेय को उबाला जाता है। कहने को तो चाय बनाने का तरीक़ा एक ही है, लेकिन हर घर में उसका स्वाद अलग होता है।

ऐसा अंदाज़ा है कि दुनिया में हर दिन लगभग 3000 करोड़ कप चाय पी जाती है। चाय के अनेक प्रकार हैं-हरी, सफ़ेद, पीली, लाल, काली चाय आदि। कटिंग चाय यानी आधी प्याली चाय। यह कोई अलग चाय नहीं होती! हर देश में चाय पीने का अपना अलग तरीक़ा होता है। जापान में चाय पीना अपने आप में एक समारोह होता है।

चाय में दूध और चीनी मिलाकर पीने का रिवाज भारत में अंग्रेज़ लेकर आए। सच तो यह है कि अंग्रेज़ों के आने से पहले हम चाय को जानते ही नहीं थे। रास्ते में ठेले पर जो चाय मिलती है वह कई बार उबली हुई और चाय पतले



कपड़े से छानी हुई होती है। टूटा-फूटा कप इस चाय का मज़ा और बढ़ा देता है। पुणे की अमृत जैसी चाय और इरानी होटलों में मिलने वाली चाय महाराष्ट्र की ख़ास बात है। चाय में डुबोया हुआ लंबा कुरकुरा खारा बिस्कुट, केक या रोटी, बारिश में चाय के साथ प्याज़ के पकोड़े, मेहमानों के स्वागत में पेश करने वाले चाय समोसे, इन सब का स्वाद चाय की लज़्ज़त को दुगुना कर देता है।

चाय का नियंत्रित सेवन स्वास्थ्य के लिए भी अच्छा होता है। इसमें हृदय तथा श्वसन की बीमारियाँ कम करने की और कैंसर के विषाणुओं से लड़ने की शक्ति वाले द्रव्य होते हैं। पूरे विश्व को अपना बनाने वाली, सदाबहार चाय सचमुच एक वरदान है।

Written by: Shahid Anwar, Illustrated by: Amar Soni

चाय

1. दुनिया भर में कितनी प्रकार की चाय पी जाती है?

2. चाय को वरदान क्यों कहा गया है?

3. पाठ के अनुसार चाय कितनी तरह से बनाई जा सकती है?

4. महाराष्ट्र की चाय की क्या ख़ास बात है?

5. चाय का नियंत्रित सेवन करना स्वास्थ्य के लिए अच्छा क्यों होता है?

6. हर घर में चाय का स्वाद अलग होता है? ऐसा क्यों कहा गया है? अपनी राय दें।

7. ऐसी कौन–सी जानकारी है जो आपको बहुत ही महत्त्वपूर्ण लगी। यह जानकारी महत्त्वपूर्ण क्यों लगी, यह भी लिखें।

8. चाय में <u>हृदय</u> आरै <u>श्वसन</u> की बीमारियाँ कम करने की शक्ति होती है। रेखांकित शब्दों की जगह ऐसे दूसरे शब्दों का इस्तेमाल करके नए वाक्य लिखें जिनसे वाक्य का अर्थ न बदले।

बतख़ मियाँ

नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। आप इन में से कितने शब्दों के अर्थ जानते हैं या इनसे परिचित हैं। उन शब्दों के सामने सही (✓) का निशान लगाएँ और उनके अर्थ लिखें।

शब्द	पहले से जानते हैं	समूह में बातचीत के बाद जाना	शब्द के अर्थ लिखें
ख़ानसामा			
खूब			
प्रशंसा			
चम्पारण			
लालच			
ज़हर			
शरबत			
शक			
दावत			
व्यवहार			
संपत्ति			
सताया			
घटना			
स्वतंत्र			
राष्ट्रपति			
सम्मान			
बीघा			
मृत्यु			
महान			
सम्माननीय			

निर्देश : प्रिय दोस्तो, पाठ पढ़ने से पहले इन शब्दों को ज़रूर पढ़ें और इनके अर्थ जानने का प्रयास करें। अब आप अपने–अपने समूह में इन शब्दों पर बातचीत करें। ये प्रक्रिया पाठ को पढ़कर समझने में आपकी सहायता करेगी।

बतख़ मियाँ

एक थे बतख़ मियाँ। बड़े अच्छे ख़ानसामा। अंग्रेज़ों के लिए खाना पकाते थे खाना खाकर अंग्रेज़ उनकी ख़ूब प्रशंसा करते। एक बार गांधी जी चम्पारण आए। अंग्रेज़ों ने बतख़ मियाँ को ढेर सारा लालच दिया और कहा कि ''तमु गांधी जी को ज़हर वाला शरबत पिलाकर मार डालो। तमु पर किसी को शक भी नहीं होगा।''

अंग्रेज़ों ने गांधी जी को दावत पर बुलाया। अकेले में बतख़ मियाँ शरबत लेकर गांधी जी के पास गए और बोले, ''इसमें ज़हर है, अंग्रेज़ों ने आपको मारने के लिए भेजा है, आप इसे मत पीजिएगा।'' गांधी जी ने शरबत लिया और फेंक

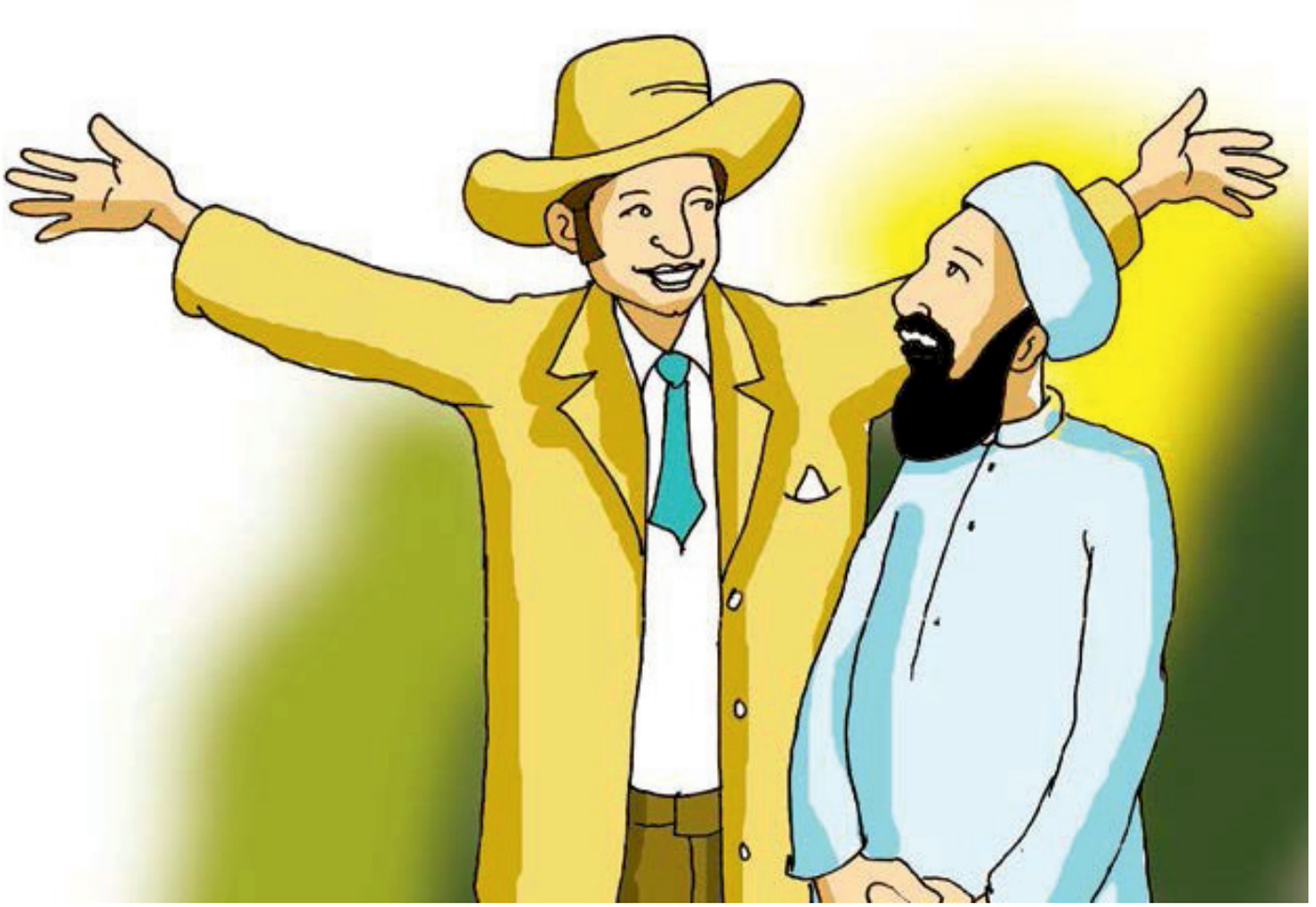

दिया। बतख़ मियाँ के इस व्यवहार से अंग्रेज़ बहुत गुस्सा हुए। उन्होंने बतख़ मियाँ को नौकरी से निकाल दिया। उनकी सारी सपंत्ति छीन ली और उन्हें खूब सताया। परंतु इस घटना की चर्चा बतख़ मियाँ ने किसी से नहीं की। देश स्वतंत्र हो जाने पर जब डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद राष्ट्रपति बनने के बाद चम्पारण आए तो उन्होंने यह घटना सबको बताई और बतख़ मियाँ का सम्मान किया। उन्हें 50 बीघा सरकारी ज़मीन दिलवाई। बतख़ मियाँ की मृत्यु के बाद भी राजेन्द्र बाबू ने उनके बच्चों को दिल्ली बुलाकर अपने घर में ठहराया, फोटो खिंचवाई और सम्मान पत्र दिया। कितने महान एवं सम्माननीय थे बतख़ मियाँ!

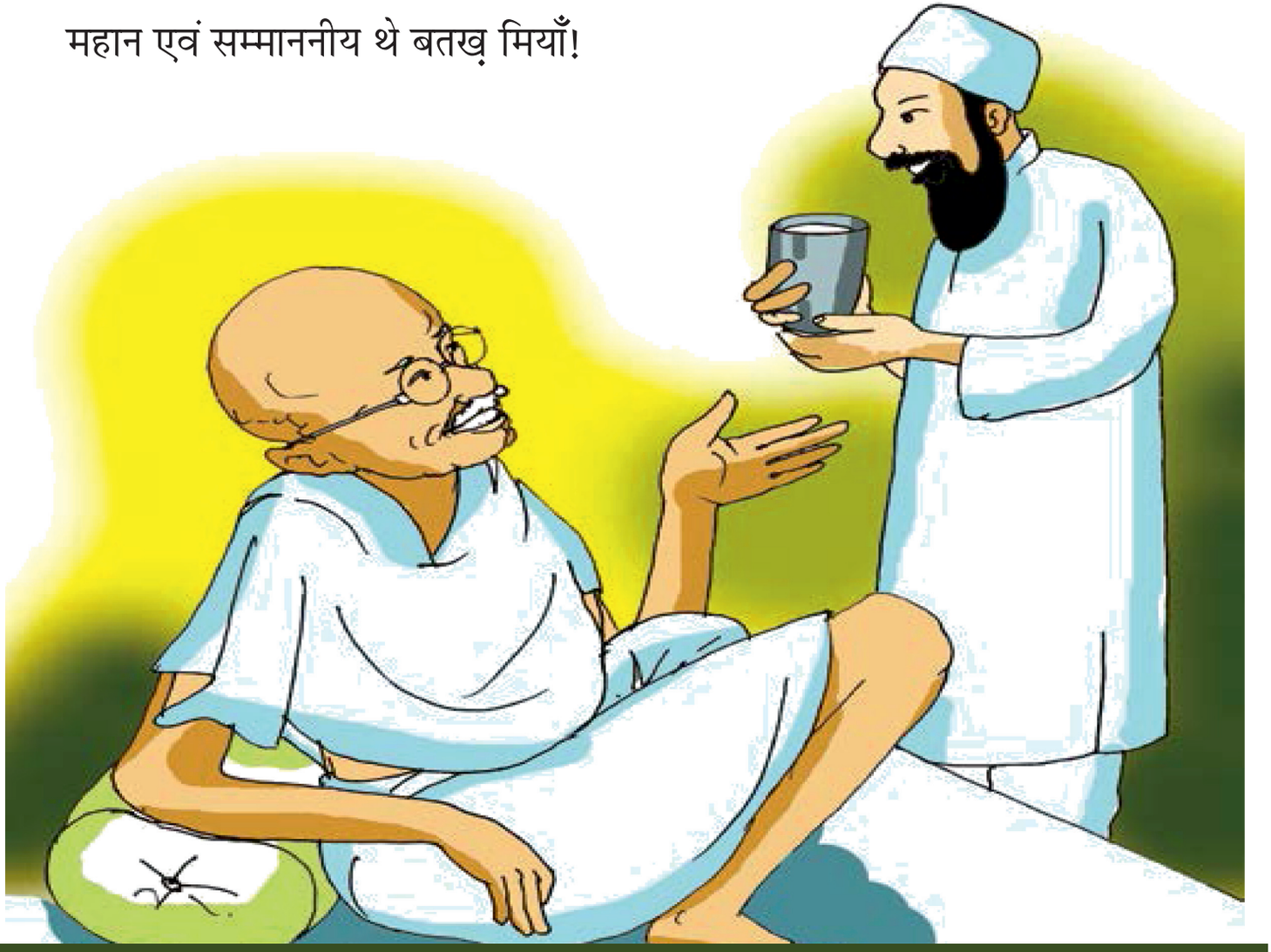

Written by: Jitendra Kumar, Illustrated by: Sitaram
Acknowledgement: Department of Education (SLMA), Government of Bihar

बतख़ मियाँ

1. डॉ.राजेन्द्र प्रसाद ने बतख़ मियाँ को क्या ईनाम दिया?

2. अंग्रेज़ों ने बतख़ मियाँ को क्या लालच दिया था? अपने शब्दों में लिखें।

3. बतख़ मियाँ ने गाँधीजी को कैसे बचाया?

4. अंग्रेज़ों ने बतख़ मियाँ के साथ क्या–क्या बुरे व्यवहार किए?

5. इन शब्दों के अर्थ लिखें और वाक्य में प्रयोग भी करें।

सम्मान		
सम्पत्ति		
प्रशंसा		

6. आपके विचार से बतख़ मियाँ ने अग्रेज़ों की बात न मानकर सही किया या ग़लत? कारण सहित बताएँ।

दादाजी की छींक

नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। आप इन में से कितने शब्दों के अर्थ जानते हैं या इनसे परिचित हैं। उन शब्दों के सामने सही (✓) का निशान लगाएँ और उनके अर्थ लिखें।

शब्द	पहले से जानते हैं	समूह में बातचीत के बाद जाना	शब्द के अर्थ लिखें
बुज़ुर्ग			
छींक			
शांति			
फुहार			
पड़ोस			
चिल्लाना			
दीवार			
फूलना			
पोंछना			
धोती			
शुरुआत			
पढ़ना			
कण			
गुदगुदी			
संदेश			
अनचाही			
माँसपेशी			
आज्ञा			
सुकून			
छुपाना			

निर्देश : प्रिय दोस्तो, पाठ पढ़ने से पहले इन शब्दों को ज़रूर पढ़ें और इनके अर्थ जानने का प्रयास करें। अब आप अपने–अपने समूह में इन शब्दों पर बातचीत करें। ये प्रक्रिया पाठ को पढ़कर समझने में आपकी सहायता करेगी।

दादाजी की छींक

हमारे पड़ोस में एक बुजुर्ग रहते हैं। हम उन्हें दादाजी कहते हैं। वे दिन में कम से कम हज़ार बार छींकते हैं। दादाजी की छींक तीन हिस्सों में पूरी होती है। पहले वे 'आरू हा हा' चिल्लाकर मुँह खोलते हैं और आँखें बंद कर लेते हैं। फिर एक सेकंड के लिए शांति रहती है। उनकी छाती और पेट फूल जाते हैं। हाथ फैल जाते हैं। अगल-बगल के लोग अपना मुँह ढक लेते हैं या मुँह घुमाकर कानों पर हाथ रख लेते हैं या फिर दीवार को पकड़ कर खड़े हो जाते हैं। तभी 'अहहा... हात्छू' जैसी आवाज़ के साथ छींक सब जगह फुहार बरसा देती है। दादाजी की छींक से सारा घर हिल जाता है। फिर दादाजी खुद ही 'हा... वाह! बहुत अच्छे। अह...ख' जैसी आवाज़ें निकालते हुए धोती से आँखें और नाक पोंछने लगते हैं।



छींक की शुरुआत कैसे होती है इस बारे में मैंने कहीं कुछ पढ़ा है। नाक के बालों को जब पानी या ठंडी हवा लगती है या कोई कण उन बालों को गुदगुदी करता है, बस छींक वहीं से शुरू होती है।

दादाजी आँखें बंद करके मुँह खोलते हैं। तब तक दिमाग को संदेश मिल जाता है कि कोई अनचाही चीज़ नाक में है। उसे बाहर निकालना ज़रूरी है। दिमाग, छाती तथा पेट की माँसपेशियों को आज्ञा देता है। दादाजी की छाती फूलती है और फिर हवा गले, नाक और मुँह के रास्ते छींक के रूप में बाहर निकलती है। और तब दादाजी को सुकून मिल जाता है।

लेकिन क्या दादाजी को किसी ने अब तक यह नहीं बताया कि छींकते समय मुँह पर हाथ रखना चाहिए या कोहनी में मुँह छुपा लेना चाहिए?



Written by: Madhav Chavan, Illustrated by: Ajit Narayan

दादाजी की छींक

1. दादाजी की छींक के तीन हिस्से कौन–कौन से हैं?

2. छींक आने पर शरीर में क्या–क्या बदलाव होते हैं?

3. दादाजी के छींक मारने से पहले सब लोग क्या करने लगते हैं? आख़िर वह ऐसा क्यों करते हैं?

4. हमें छींक क्यों आती है?

5. 'छींक मार कर दादाजी को **सुकून** मिल जाता है।' रेखांकित शब्द को इस तरह बदलें कि उस वाक्य का अर्थ न बदले।

6. 'उनकी छींक सब जगह **फुहार बरसा देती है**।' रेखांकित वाक्यांश का अर्थ विस्तार से अपने शब्दों में लिखें।

खाने की जान

नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। आप इन में से कितने शब्दों के अर्थ जानते हैं या इनसे परिचित हैं। उन शब्दों के सामने सही (✓) का निशान लगाएँ और उनके अर्थ लिखें।

शब्द	पहले से जानते हैं	समूह में बातचीत के बाद जाना	शब्द के अर्थ लिखें
स्वादिष्ट			
लज़ीज़			
विभिन्न			
क्षेत्र			
पकवान			
मसाले			
मज़ा			
किरकिरा			
विदेशी			
तलाश			
सैलानी			
ह्येन सांग			
सफ़रनामा			
मार्को पोलो			
ज़िक्र			
शताब्दी			
जायफल			
ग्रीन गोल्ड			
इन्डोनेशिया			
उत्पाद			

निर्देश : प्रिय दोस्तो, पाठ पढ़ने से पहले इन शब्दों को ज़रूर पढ़ें और इनके अर्थ जानने का प्रयास करें। अब आप अपने–अपने समूह में इन शब्दों पर बातचीत करें। ये प्रक्रिया पाठ को पढ़कर समझने में आपकी सहायता करेगी।

खाने की जान

क़िस्म-क़िस्म का स्वादिष्ट खाना किसे पसंद नहीं! हमारे देश में इतने लज़ीज़ खाने पकाए जाते हैं कि नाम लेने भर से मुँह में पानी आ जाता है। विभिन्न क्षेत्रों में बनने वाले पकवानों के पीछे एक चीज़ ऐसी है, जो इन सबको एक धागे से बाँधती है, वे हैं-मसाले। जी हाँ, ये मसाले ही तो हैं, जो खाने को लज़ीज़ बना देते हैं। खाने में अगर सही मात्रा में मसाले न हों, तो खाने का मज़ा किरकिरा हो जाता है, क्या आपने कभी सोचा कि इन मसालों का भी इतिहास है?

मसालों की तलाश में जाने कितने विदेशी हिन्दुस्तान आए। सन् 629 ई. में चीनी सैलानी ह्वेन सांग के सफ़रनामे और 1298 ई. की मार्को पोलो की रचनाओं में



भारत के मसालों का ज़िक्र मिलता है। माना जाता है कि पहली शताब्दी के आसपास जायफल का पौधा पहली बार रोम में देखा गया। वैसे 'ग्रीन गोल्ड' कहलाने वाला यह पौधा मूल रूप से मसालों की धरती 'इन्डोनेशिया' की पैदाइश है। अण्डों के आकार के जायफल गर्म इलाक़ों में फलते-फूलते हैं।

अपना देश, दुनिया में हल्दी का सबसे बड़ा उत्पादक है। इनके अलावा एक और महत्त्वपूर्ण मसाला है काली मिर्च में कभी इतनी ताक़त थी इसने दुनिया के इतिहास को ही बदल डाला। पश्चिम से जितनी समुद्री यात्राएँ हुईं, उनमें ज़्यादातर काली मिर्च की तलाश के लिए हुई थीं। इसे 'काला सोना' भी कहा जाता है।

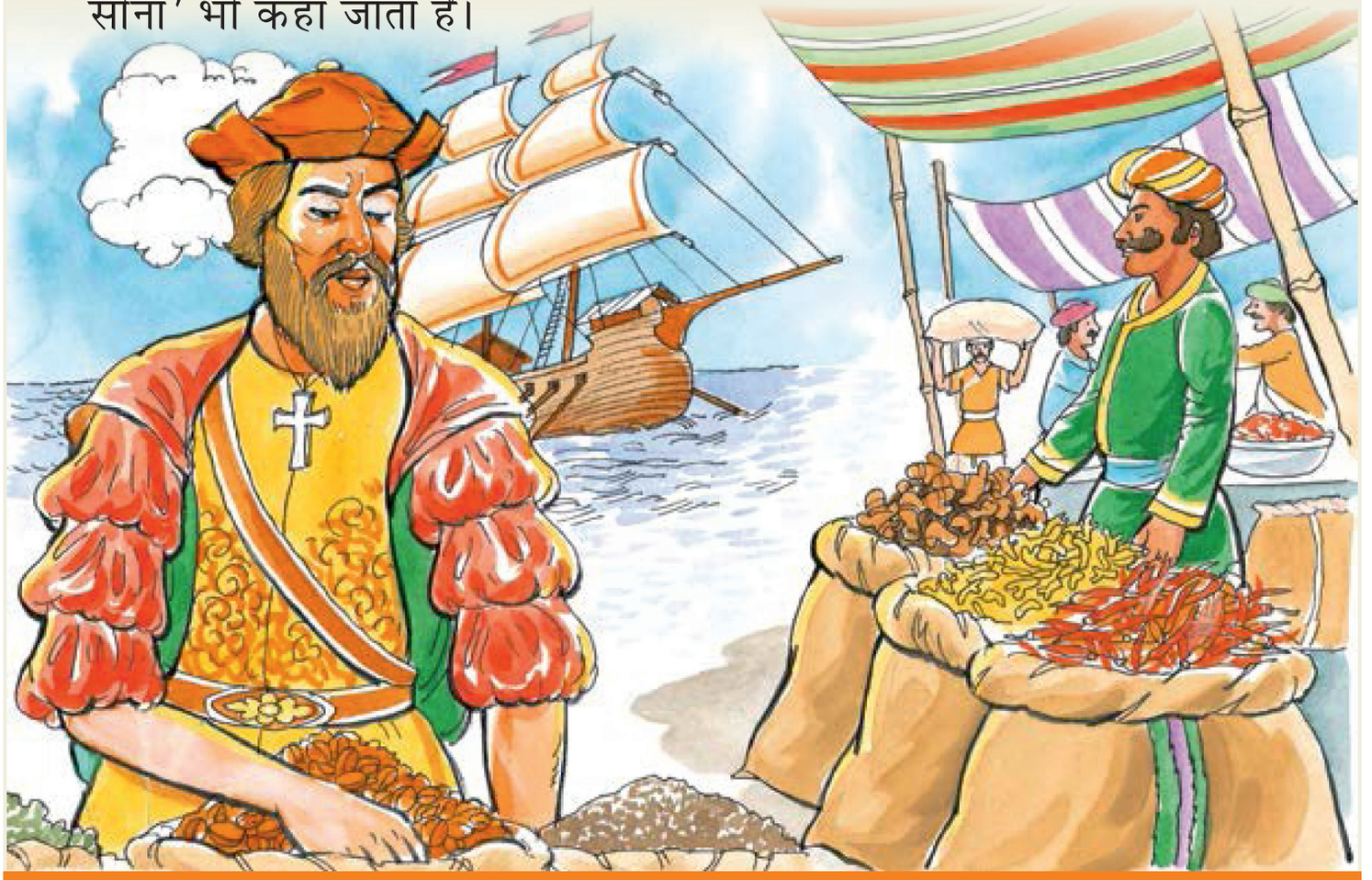

Written by: Faiyaz Ahmed, Illu~strated by: Partha Sengupta

खाने की जान

1. 'काला सोना' किसे कहा गया है?

2. मसालों की तलाश में कौन–कौन से विदेशी सैलानी भारत आए? उनके नाम लिखें।

3. हिन्दुस्तान में हल्दी का कितना उत्पादन होता है?

4. जायफल का पौधा पहली बार कहाँ देखा गया था? इसको दूसरे किस नाम से जाना जाता है?

5. पाठ में दी गई जानकारियों को क्रमवार लिखें।

6. 'मुँह में पानी आना' इस मुहावरे का अर्थ समझाते हुए नया वाक्य बनाएँ।

7. ''विश्व व्यापार में काली मिर्च का विशेष स्थान है।'' रेखांकित शब्दों की जगह ऐसे दूसरे शब्दों का इस्तेमाल करके नए वाक्य लिखें जिनसे वाक्य का अर्थ न बदले।

8. ऐसा क्यों कहा गया कि काली मिर्च ने दुनिया के इतिहास को बदल डाला?

- क्योंकि इसे काला सोना कहते हैं।
- पश्चिम से जितनी भी समुद्री यात्राएँ हुई वे इसी काली मिर्च के लिए ही हुईं।
- वास्कोडिगामा काली मिर्च के लिए ही हिन्दुस्तान आए थे।

9. कौन–कौन से मसालों को इन रूपों में इस्तेमाल कर सकते हैं।

सर्दी दूर करने के लिए	खांसी सुखाने के लिए	चोट लगने पर	खुशबू के लिए	रंग लाने के लिए

10. ''विभिन्न क्षेत्रों में बनने वाले पकवानों के पीछे मसाले ही हैं जो इनको एक धागे में बांधते हैं'', ऐसा क्यों कहा गया है?

दीदी का रंग-बिरंगा ख़ज़ाना

नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। आप इन में से कितने शब्दों के अर्थ जानते हैं या इनसे परिचित हैं। उन शब्दों के सामने सही (✓) का निशान लगाएँ और उनके अर्थ लिखें।

शब्द	पहले से जानते हैं	समूह में बातचीत के बाद जाना	शब्द के अर्थ लिखें
ख़ज़ाना			
बस्ती			
नज़दीक			
अजीब			
क़िस्म			
प्लास्टिक			
रोज़			
घूरना			
करीब			
जवाब			
मज़ा			
इंतज़ार			
आख़िर			
मेहनत			
मुस्कान			
चमक			
मौज–मस्ती			
डॉक्टर			
दवाई			
थैला			

निर्देश : प्रिय दोस्तो, पाठ पढ़ने से पहले इन शब्दों को ज़रूर पढ़ें और इनके अर्थ जानने का प्रयास करें। अब आप अपने–अपने समूह में इन शब्दों पर बातचीत करें। ये प्रक्रिया पाठ को पढ़कर समझने में आपकी सहायता करेगी।

दीदी का रंग-बिरंगा ख़जाना

एक बड़े शहर के किनारे बस्ती में कुछ बच्चे रहते थे। उनके घर के नज़दीक एक बड़ा मैदान था। मैदान अजीब क़िस्म का था। वहाँ न पेड़ थे, न पौधे, बस कचरा ही कचरा था। मैदान पूरे शहर की फेंकी हुई चीज़ों और गन्दगी से भरा हुआ था। बच्चे स्कूल नहीं जाते थे। पूरा दिन मैदान में घूमते थे। प्लास्टिक की बोतलें खोजना, कपड़े के टुकड़े निकालना उनका रोज़ का काम था।

एक दिन एक दीदी उस मैदान में आई। उनके कंधे पर एक झोला था। दीदी ने चारों तरफ़ देखा। फिर वह एक कोने में बैठ गई। बच्चे दीदी को घूर रहे थे। दीदी के झोले में बहुत-सी किताबें थीं। मोटी, पतली, रंग-बिरंगी कहानियों से भरी किताबें। दीदी उनमें से एक किताब निकालकर पढ़ने लगी। बच्चे करीब आ गए। एक बच्चे ने दीदी से पूछा, "आप क्या पढ़ रही हैं?" "कहानी" दीदी ने जवाब दिया। "हमें भी सुनाओ न कहानी" सभी बच्चे एक साथ चिल्लाए। दीदी ने उन्हें कहानी सुनाई। बच्चों को बहुत मज़ा आया।

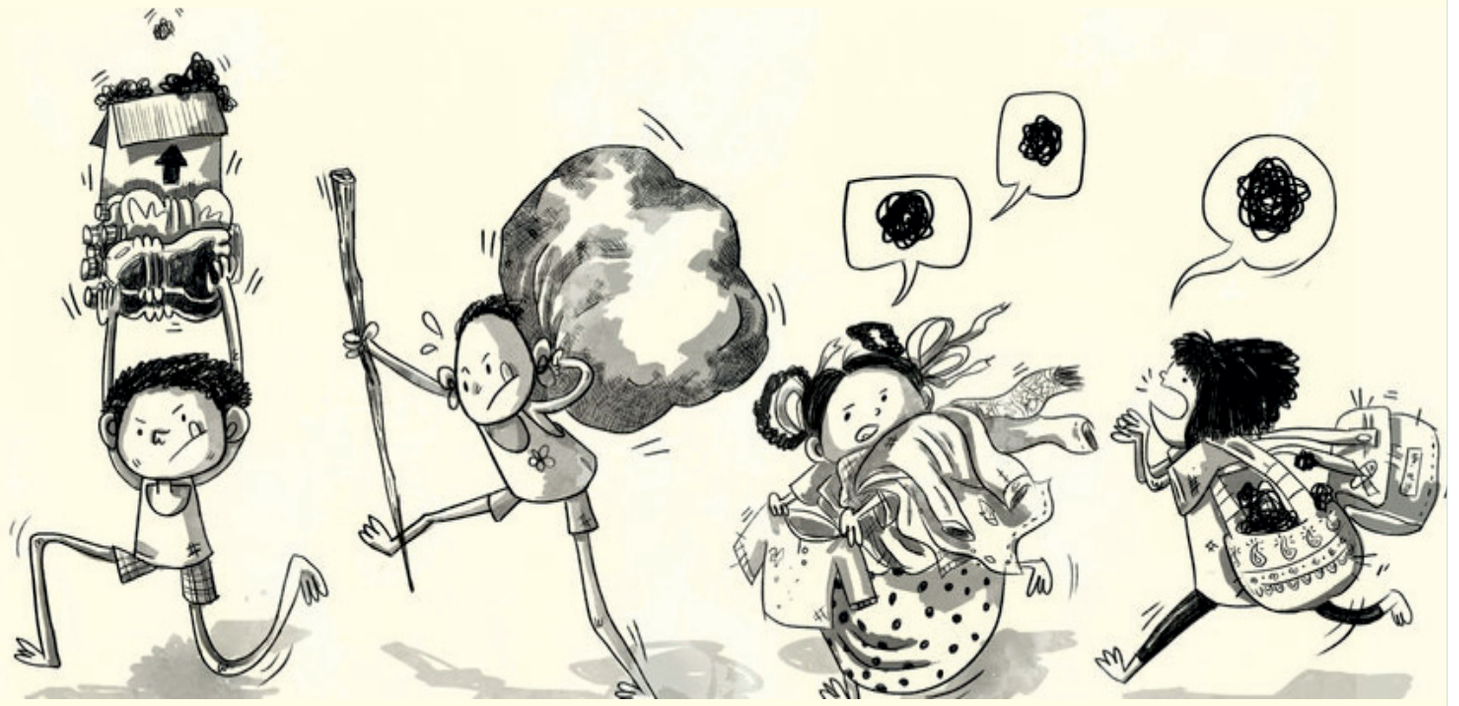

उस दिन के बाद दीदी रोज़ उस मैदान में आने लगी। बच्चे भी रोज़ दीदी के पास कहानियाँ सुनने आने लगे। बच्चे भी कहानियाँ बताने लगे। कुछ-कुछ बच्चे तो पढ़ने भी लगे। सभी बच्चों ने दीदी की जगह को साफ़ कर दिया।

एक दिन दीदी नहीं आई। अगले दिन भी नहीं आई। बच्चे इंतज़ार करते रहे। बच्चे दीदी की खोज में निकल पड़े। साथ में किताबों का थैला भी उठा लिया। दीदी का घर कहाँ है? इधर है कि उधर है? आख़िर कड़ी मेहनत के बाद बच्चों ने दीदी को ढूँढ निकाला। दीदी बिस्तर पर लेटी थी। बीमार और उदास दिख रही थी। चेहरे पर न कोई मुस्कान, न कोई चमक थी। डॉक्टर ने दवाई दी थी। पर दीदी ठीक नहीं हो रही थी। बच्चे दौड़ कर वहाँ पहुँच गए। दीदी ने सबको गले लगाया। बच्चों ने किताबों का थैला उन्हें दिखाया। बच्चों ने कुछ पढ़कर सुनाया। दीदी फिर से मुस्कराने लगी। उनकी आँखों की चमक वापस आ गई।

धीरे-धीरे दीदी ठीक हो गई। अब दीदी फिर से आने लगी है। सब बच्चे मिलकर मौज-मस्ती करने लगे हैं।



Written by Rukmini Banerji
Illu~strated by Kaveri Gopalakrishnan

दीदी का रंग बिरंगा ख़ज़ाना

1. बस्ती के नज़दीक का मैदान कैसा था?

2. बच्चों ने मैदान क्यों साफ़ किया?

3. बच्चे मैदान में क्यों घूमते थे?

4. दीदी के बीमार होने पर बच्चों ने क्या किया?

5. दीदी मैदान में ढेर सारी किताबें लेकर क्यों आईं?

6. शब्दों के अर्थ बताते हुए उनसे वाक्य बनाकर लिखें।

   कचरा –

   अजीब –

   उदास –

7. वाक्य सही करें।

   1. बच्चे इतजार करते रहे सकते –

   2. दिदि की घर कहा ह। –

   3. मेदान गदगी से भरा हूआ था –

   4. बच्चे ने घर ढुढ नीकाला –

8. इस कहानी के जैसा अपना या किसी दोस्त का कोई अनुभव लिखें।

9. आपको क्या लगता है दीदी कैसे ठीक हुई, दवाई से या बच्चों के आने की ख़ुशी में कारण सहित अपनी राय बताएँ।

10. आप अपने सबसे अच्छे शिक्षक/शिक्षिका के बारे में अपने कुछ अनुभव लिखें।

अनाज के दाने

नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। आप इन में से कितने शब्दों के अर्थ जानते हैं या इनसे परिचित हैं। उन शब्दों के सामने सही (✓) का निशान लगाएँ और उनके अर्थ लिखें।

शब्द	पहले से जानते हैं	समूह में बातचीत के बाद जाना	शब्द के अर्थ लिखें
इतिहास			
महत्त्व			
उगाना			
मर्ज़ी			
उपमहाद्वीप			
झुलसना			
मेहरगढ़			
दहाड़ना			
मूलरूप			
कोल्डिहवा			
महागडा			
गुफ़राकल			
बुर्ज़होम			
चिरांद			
स्थित			
बहस			
दिमाग़			
शुरुआत			
फ़सल			
परन्तु			

निर्देश : प्रिय दोस्तो, पाठ पढ़ने से पहले इन शब्दों को ज़रूर पढ़ें और इनके अर्थ जानने का प्रयास करें। अब आप अपने–अपने समूह में इन शब्दों पर बातचीत करें। ये प्रक्रिया पाठ को पढ़कर समझने में आपकी सहायता करेगी।

अनाज के दाने

अनाज के दानों में एक दिन अपने इतिहास को लेकर बहस छिड़ गई। सबसे पहले गेहूँ ने भारी भरकम आवाज़ में बोलना शुरू किया, "इंसानों ने मेरे महत्त्व को पहचानकर मुझे 11 हज़ार साल पहले उगाना शुरू किया। इससे पहले मैं अपनी मर्ज़ी से जहाँ-तहा उगता था। हिंदुस्तानी उपमहाद्वीप में मेरे झुलसे हुए दाने मेहरगढ़ में मिलते हैं। ये दाने लगभग सात हज़ार साल पुराने होंगे। मैं सारे अनाजों में सबसे पुराना हूँ।"

चावल का दाना यानी धान गेहूँ की बात ख़त्म होते ही दहाड़ने लगा, "मैं मूलरूप से हिंदुस्तानी अनाज हूँ। मेरे सबसे पुराने दाने उत्तर प्रदेश के कोल्डिहवा और महागडा से मिले हैं। ये दाने सात हज़ार साल से कम पुराने नहीं होंगे, हाँ।" अब दालों की बारी थी। अरहर ने कहा, "चावल भाई, एक आप ही मूल हिंदुस्तानी अनाज नहीं है। हम लोग कहीं अमेरिका-वमेरिका से नहीं आई हैं। हमारे भी सबसे पुराने दाने हिंदुस्तान में ही पाए गए हैं-गुफ़राकल, बुर्ज़होम और चिरांद जैसी

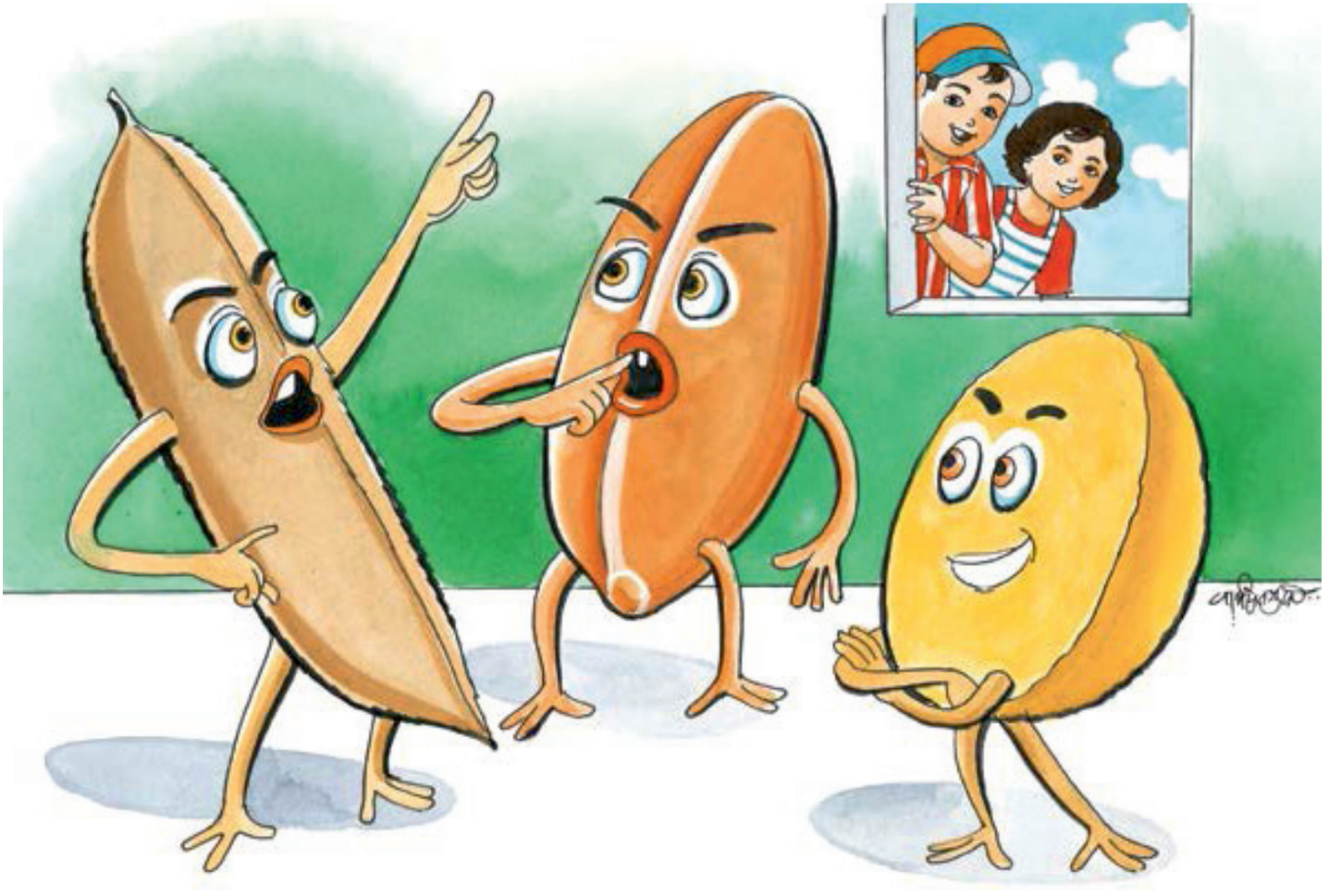

जगहों से 1 गुफ़राकल और बुर्ज़होम कश्मीर में स्थित है और चिरांद बिहार में।"
निधी और गोलू अनाजों की इस बहस को सुन रहे थे। दोनों ने मिलकर अनाजों को डिब्बों में बंद कर दिया। इसके बाद उनसे सम्बंधित पुराने स्थानों का नाम एक पर्ची पर लिखकर डिब्बों के ऊपर चिपका दी।

निधी के दिमाग़ में बार-बार एक बात चुभ रही थी कि इन अनाजों से पहले भी तो इंसान था। उससे पहले वह क्या खाता था? उसने अपनी बात गोलू के सामने रखी। गोलू बोला, "खेती की शुरुआत से पहले इंसान अपने भोजन के लिए जानवरों का शिकार करता था। फल-फूल, दाने, पौधे-पत्तियाँ एवं अण्डे इत्यादि इकट्ठा करता था। इंसान ने फ़सलें उगाना आज से लगभग बारह हज़ार साले पहले शुरू किया। ये अनाज जो आपस में ऊपर बहस कर रहे थे, इनका अस्तित्व पहले भी था, परन्तु उनके उगने पर इंसानों का नियंत्रण नहीं था। जैसे जानवरों को पालतू बनाया गया, वैसे ही इन पौधों को भी इंसान ने समय के साथ पालतू बनाया और इसी पालतू बनाने से खेती की शुरुआत हुई।"

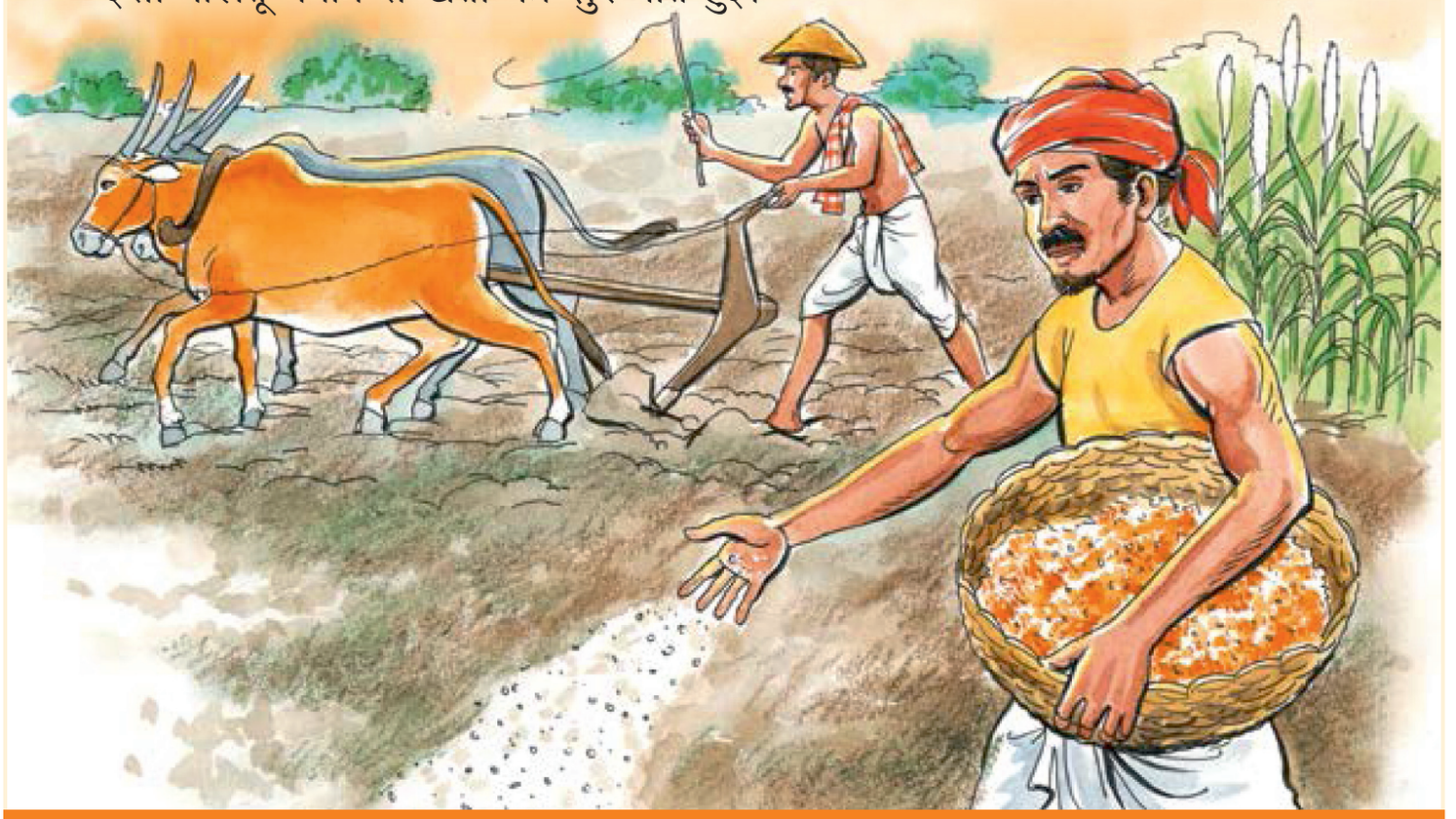

Written by: Chandrabhan, Illustrated by: Partha Sengupta

अनाज के दाने

1. अनाज के दाने आपस में क्या बहस कर रहे थे?

2. इन अनाजों ने अपने बारे में क्या–क्या बताया?

   गेहूँ –

   चावल –

3. इस कहानी के आधार पर लिखें।

दानें	जगह	इन्सान

4. अगर अनाज न होते तो इन्सान क्या खाते?

5. आपको क्या लगता है खेती की शुरुआत कैसे हुई होगी? सोचकर लिखें।

6. इन शब्दों का अर्थ लिखें।

   स्थान –

   अस्तित्व –

   इन्सान –

7. निधि के दिमाग़ में कौन–सी बात बार–बार चुभ रही थी?

8. इस पाठ को पढ़कर आपको क्या–क्या नई जानकारियाँ मिलीं?

9. अनाजों कि तरह आपका या आपके घर वालों का भी इतिहास होगा। सोचकर लिखें।

ताज़गी वाला घोल

नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। आप इन में से कितने शब्दों के अर्थ जानते हैं या इनसे परिचित हैं। उन शब्दों के सामने सही (✓) का निशान लगाएँ और उनके अर्थ लिखें।

शब्द	पहले से जानते हैं	समूह में बातचीत के बाद जाना	शब्द के अर्थ लिखें
ताज़गी			
घोल			
हमेशा			
उपाय			
पड़ोस			
तबियत			
कमज़ोर			
हालत			
दस्त			
मामूली			
शरीर			
पोषक			
लापरवाही			
जानलेवा			
शुक्रिया			
रक्षक			
चौंकना			
परेशानी			
मात्रा			
धन्यवाद			

निर्देश : प्रिय दोस्तो, पाठ पढ़ने से पहले इन शब्दों को ज़रूर पढ़ें और इनके अर्थ जानने का प्रयास करें। अब आप अपने–अपने समूह में इन शब्दों पर बातचीत करें। ये प्रक्रिया पाठ को पढ़कर समझने में आपकी सहायता करेगी।

ताज़गी वाला घोल

छः महीने का अमर हमेशा खेलता रहता था लेकिन आज वह बहुत रो रहा था। उसकी माँ उसे चुप कराने के लिए तरह-तरह के उपाय कर रही थी। उसे कभी गोद में झुलाती तो कभी खिलौनों से बहलाती लेकिन अमर का रोना बन्द नहीं हो रहा था। अमर इतनी ज़ोर से रो रहा था कि उसकी आवाज़ सुनकर पड़ोस वाली विमला पूछने लगी, "अमर की माँ! क्या बात है? अमर इतनी ज़ोर से क्यों रो रहा है।"

अमर की माँ दुःखी मन से बोली, "क्या बताऊँ? अमर की तबियत ठीक नहीं है।"

विमला अमर के पास आई, "अरे! यह तो बहुत कमज़ोर लग रहा है। इसे क्या हो गया है?" "कल रात से दस्त हो रहा है, इसलिए इसकी यह हालत है। कुछ बताओ कि क्या करूँ?"

विमला बोली, "तुम भी कमाल करती हो। रात से अमर को दस्त हो रहा है, और तुम इसे मामूली बात समझ रही हो। तुम्हें पता है, लगातार दस्त होने से शरीर में



पानी और पोषक तत्त्वों की मात्रा कम हो जाती है। इसलिए अमर को परेशानी महसूस हो रही है और वह इतना रो रहा है।"

अमर की माँ चौंक गई, "अब मुझे क्या करना चाहिए?"

विमला बताने लगी, "सबसे पहले तुम अमर को जीवन रक्षक घोल पिलाओ। यह बच्चे के शरीर में पानी की कमी को पूरा करता है। यह घोल अमर को दिन में कई बार देना। ध्यान रहे यह घोल उबले हुए साफ़ पानी में ही बनाना।"

अमर की माँ ने विमला की बात मानकर अमर को यह घोल पिलाया। थोड़ी देर में अमर का रोना और दस्त कुछ कम हुआ। अमर की माँ विमला का शुक्रिया अदा करते हुए बोली, "सच विमला, मुझे इसके बारे में कुछ भी पता नहीं था। अगर आज तुम नहीं आती तो मेरा अमर ऐसे ही परेशान रहता। मुझे यह जानकारी देने के लिए तुम्हारा धन्यवाद।"

विमला ने कहा, "सिर्फ़ परेशान ही नहीं, दस्त का इलाज अगर समय पर ना हो तो जानलेवा भी हो सकता है। इसलिए लापरवाही नहीं करनी चाहिए और साफ़-सफ़ाई का ध्यान रखना चाहिए क्योंकि दस्त का असली कारण तो गंदगी ही है।"



Written by: **Jyoti**, Illustrated by: **Rajeev Verma 'Banjara'**
Reviewed by: **Sakshi Dudeja**,

ताज़गी वाला घोल

1. आपके अनुसार इस कहानी का दूसरा और क्या नाम हो सकता है?

2. माँ अमर को चुप कराने के लिए क्या–क्या कर रही थी?

3. लगातार दस्त होने से शरीर में किन चीज़ों की कमी हो जाती है?

4. इन शब्दों का अर्थ लिख कर वाक्य में प्रयोग करें।

   रक्षक –

   तबियत –

   शुक्रिया –

5. आप अपने घर में किसी छोटे बच्चे को चुप कराने के लिए क्या–क्या करते हैं?

6. दस्त होने के क्या–क्या कारण हैं?

7. जीवन रक्षक घोल किस काम आता है?

8. इस पाठ को पढ़कर आपको सबसे महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ क्या लगी?

9. क्या हमें ज़रूरत के समय किसी की मदद करनी चाहिए? अपने विचार लिखें।

सुनामी

नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। आप इन में से कितने शब्दों के अर्थ जानते हैं या इनसे परिचित हैं। उन शब्दों के सामने सही (✓) का निशान लगाएँ और उनके अर्थ लिखें।

शब्द	पहले से जानते हैं	समूह में बातचीत के बाद जाना	शब्द के अर्थ लिखें
सुनामी			
समुद्र			
सैर–सपाटा			
लहरें			
झागभरी			
तन–मन			
शांत			
हमेशा			
उग्र			
धारण			
भूकंप			
रौद्र			
अत्यंत			
भीषण			
क़हर			
भयंकर			
उद्‌गम			
तट			
मंज़िल			
विशाल			

निर्देश : प्रिय दोस्तो, पाठ पढ़ने से पहले इन शब्दों को ज़रूर पढ़ें और इनके अर्थ जानने का प्रयास करें। अब आप अपने–अपने समूह में इन शब्दों पर बातचीत करें। ये प्रक्रिया पाठ को पढ़कर समझने में आपकी सहायता करेगी।

सुनामी

समुद्र के आसपास सैर-सपाटा करने का अलग ही मज़ा होता है। ऐसा लगता है जैसे लहरें उछल-उछल कर हम से ही मिलने आ रही हों। झागभरी लहरें पैरों को छूती हैं और तन-मन सब ठंडा हो जाता है। किनारे की ओर बढ़ती, रुकती लहरें खुद शांत होकर हमें भी शांत करती हैं।

लेकिन ये लहरें हमेशा शांत नहीं रहतीं। कभी-कभी उग्र रूप भी धारण कर लेती हैं। समुद्र की तह में जब भी भूकंप आते हैं तो ऊँची-ऊँची लहरें उठने लगती हैं। रौद्र रूप धारण कर लेती हैं ये लहरें। अत्यंत भयानक! लहरों के इस भीषण रूप को जापानी भाषा में 'सुनामी' कहते हैं। सुनामी यानी किनारे आकर क़हर ढाने वाली एक भयंकर लहर।



जिस जगह ऐसी लहरों का उद्‌गम होता है वहाँ उनकी ऊँचाई ज़्यादा नहीं होती। लेकिन वहाँ से ये लहरें तेज़ी से दूर तक फैलती हैं। जब वे तट तक पहुँचती हैं तब उनकी गति थोड़ी कम हो जाती है लेकिन उनकी ऊँचाई 8–10 मंज़िलों की इमारत जितनी होती है। पानी की एक विशाल दीवार! जैसे-जैसे आगे आती हैं ये लहरें, तटवर्ती इलाक़ों को जलमग्न करती जाती हैं। इन लहरों की मार से वृक्ष तथा इमारतें ढेर हो जाती हैं। जानवर मर जाते हैं। लोगों को जान-माल दोनों का नुक़सान होता है। सभी जगह विनाश ही विनाश!

सन् 2004 में भारत के समुद्र-तट पर आई सुनामी ने तमिलनाडू की राजधानी चेन्नई के समुद्र में तांडव मचा दिया था। समुद्र में खड़ा एक बड़ा जहाज़ सुनामी की वजह से बीच सड़क पर आ गिरा था। अभी हाल ही में, 2011 में जापान में आई सुनामी ने समुद्र के किनारे बसे सारे शहरों का नामो-निशान मिटा दिया। ऐसे कई उदाहरण हैं, फिर भी समुद्र के किनारे टहलना लोगों को अच्छा लगता है। लाखों लोग टहलते हैं। समुद्र तो हमेशा अपना ही लगता है।



Written by: Usha Rane, Illu~strated by: Partha Sengupta

सुनामी

1. लहरें कब उग्र रूप धारण कर लेती हैं?

2. सुनामी किसे कहते हैं?

3. इस पाठ को पढ़कर आपको क्या–क्या जानकारियाँ मिलीं?

4. सुनामी के अलावा अन्य प्राकृतिक आपदाएँ भी हैं जो नुक़सान पहुँचाती हैं। ऐसी दो आपदाओं के बारे में लिखें।

5. बाढ़ आने से लोगों को किन–किन परेशानियों का सामना करना पड़ता है?

6. समुद्र शब्द को देखकर आपके दिमाग़ में कौन–से शब्द आते हैं? ख़ाली डिब्बे में लिखें।

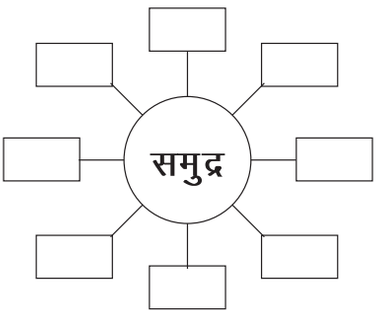

7. शब्दों का अर्थ लिखें और वाक्य बनाएँ।

रौद्र – _____

तटवर्ती – _____

8. सुनामी से बचने के क्या–क्या तरीक़े हो सकते हैं? सोचकर लिखें।

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

9. अगर आपको समुद्र के किनारे जाने का मौक़ा मिले तो आप क्या–क्या करना पसंद करेंगे?

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

तारों के नीचे तारा

नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। आप इन में से कितने शब्दों के अर्थ जानते हैं या इनसे परिचित हैं। उन शब्दों के सामने सही (✓) का निशान लगाएँ और उनके अर्थ लिखें।

शब्द	पहले से जानते हैं	समूह में बातचीत के बाद जाना	शब्द के अर्थ लिखें
बेचैनी			
डिब्बे			
स्टेशन			
केवट			
खिड़की			
मीनापुर			
चमक			
रोशनी			
कैमरा			
हिरण			
तस्वीर			
पुरखे			
नक्शा			
राह			
ताक़त			
झिलमिलाना			
परदादा			
प्रकाश			
फोटोग्राफर			
छाँव			

निर्देश : प्रिय दोस्तो, पाठ पढ़ने से पहले इन शब्दों को ज़रूर पढ़ें और इनके अर्थ जानने का प्रयास करें। अब आप अपने–अपने समूह में इन शब्दों पर बातचीत करें। ये प्रक्रिया पाठ को पढ़कर समझने में आपकी सहायता करेगी।

तारों के नीचे तारा

तारा को बेचैनी हो रही थी। लगता था कि रेल बहुत धीमी चल रही है। तारा ने खिड़की से बाहर देखा। ऊँची इमारतों की खिड़कियों में से रोशनी चमक रही थी। एक यात्री ने पूछा, "बेटी तुम घर से भाग कर तो नहीं आई हो?" "नहीं, नहीं" तारा बोली। डिब्बे में सब सोने की तैयारी में थे। सुबह सवेरे तारा मीनापुर स्टेशन पर उतर गई। वह गंगा के घाट पर पहुँच कर एक लदी हुई नाव में चढ़ गई। नाव में बैठे कई लोगों ने सोचा, "अकेले यात्रा करने वाली यह लड़की कौन हो सकती है?" तारा जब नदी पार पहुँची तो केवट ने पूछा, "क्या घर से भाग कर आई हो?" तारा मुस्कराई, "नहीं, नहीं काका, मैं घर जा रही हूँ!" तारा एक जंगल में पहुँची। उसने् कैमरा निकाला। एक हिरण ने उसको ऐसे देखा, मानो पूछ रहा हो कि वह यहाँ क्या कर रही है। तारा ने झट उसकी तस्वीर खींच



ली। "प्यारे हिरण, मैं घर आ गई हूँ। मेरे पुरखे यहाँ गाँव में रहते थे," वह बोली। जब सूरज डूबा तब तारा एक झूला पुल पार कर रही थी। झूला पुल धीमे-धीमे हिल रहा था। यह सोचते हुए कि पुल के पार क्या है तारा के होठों पर मुस्कराहट फैल गई। दूसरी तरफ़ पहुँच कर तारा ने नक्शा निकाला और आगे की राह तय करने लगी। उसने् आँखें बंद कर के गहरी साँस ली। कितनी अच्छी ख़ुशबू थी जंगल के पेड़-पौधों की! तारा ने आग जलाई और कुछ खाया। वह आसमान को ताकते हुए लेट गई। तारे उसको देख झिलमिलाए। कल वह पैदल चलने के बाद अपने गाँव के लिए बस लेगी। वहाँ उसके परदादा-परदादी रहते हैं। तारा प्रकाश जो एक मशहूर फोटोग्राफर है, आज सिर्फ़ तारों की छाँव में सोएगी और घर के सपने देखेगी।



Translated by Manisha Chaudhry
Original story Tara Finds Her Stars by Mala Kumar and Manisha Chaudhry
Illu~strated by Shikha Nambiar

तारों के नीचे तारा

1. गाँव में तारा का कौन रहता था?

2. आपको क्या लगता है तारा को बेचैनी क्यों हो रही थी?

3. तारा अपने गाँव कैसे पहुँची?

4. नीचे दिए गए शब्दों का अर्थ पता करके शब्द बनाएँ।

पुरखे– ☐

ख़ुशबू– ☐

5. तारा को कहाँ पहुँचने की जल्दी थी? दिए गए बॉक्स में सही का (✓) निशान लगाएँ।

(क) मीनापुर स्टेशन ☐

(ख) रेल में ☐

(ग) शहर ☐

6. मिलान करे।

यात्रा	चित्र
तस्वीर	भवन
जंगल	सफ़र
इमारत	वन

7. कहानी पढ़कर क्या लगता है कि तारा क्या काम करती थी?

9. वाक्य सही करें।

1. तारा ने खीड़की से बहार देखी।

2. उसकी होटौ पर मुसकराहट खैल राइ।

3. तारे असको दैख झीलमीलाए।

9. लोग ऐसा क्यों सोच रहे थे कि तारा भाग कर आई है? अपने शब्दों में लिखें।

10. आप अपने गाँव/शहर कैसे–कैसे पहुँचते हैं?

सो जा टिंकू

नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। आप इन में से कितने शब्दों के अर्थ जानते हैं या इनसे परिचित हैं। उन शब्दों के सामने सही (✓) का निशान लगाएँ और उनके अर्थ लिखें।

शब्द	पहले से जानते हैं	समूह में बातचीत के बाद जाना	शब्द के अर्थ लिखें
ख़ूबसूरत			
चाँदनी			
चित्त			
फुसफुसाना			
लेटना			
जगमग			
मुस्कराना			
टिमटिमाना			
रोशनी			
चकित			
शाख़			
घूरना			
जवाब			
भोजन			
तलाश			
ज़रूर			
लुढ़कना			
उबासी			
थकना			
चमकना			

निर्देश : प्रिय दोस्तो, पाठ पढ़ने से पहले इन शब्दों को ज़रूर पढ़ें और इनके अर्थ जानने का प्रयास करें। अब आप अपने–अपने समूह में इन शब्दों पर बातचीत करें। ये प्रक्रिया पाठ को पढ़कर समझने में आपकी सहायता करेगी।

सो जा टिंकू

ख़ूबसूरत चाँदनी रात थी। सारे पशु सो रहे थे। सिर्फ़ टिंकू जागा हुआ था। "मुझे नींद नहीं आ रही अम्मा!" टिंकू फुसफुसाया। अम्मा ने उसकी बात सुनी नहीं। वह गहरी नींद में थीं। वह दाएँ मुड़ा फिर बाएँ मुड़ा। वह पेट के बल लेटा, फिर चित हुआ। इधर-उधर करवट बदली। पर वह सो ही नहीं पाया! वह उठा और निकल पड़ा।

वह जानना चाहता था कि रात में उसे कौन मिल सकता है। ऊपर आसमान में टिंकू ने चाँद देखा। सफ़ेद, जगमग करता गोल चाँद मुस्करा रहा था। दूर पेड़ पर, पत्तों के बीच टिमटिमाती रोशनी दिखी। "वह रोशनी कैसी?" वह चकित हुआ। एक छोटी-सी रोशनी उड़ती हुई उसके पास आई। "मैं एक जुगनू हूँ," जुगनू ने कहा। "मैं अँधेरे में चमकता हूँ!"

"क्या तुम मेरे दोस्त बनोगे?" टिंकू ने पूछा। "हाँ बनूँगा," जुगनू बोला। एक पंछी उड़ता हुआ आया। पेड़ की शाख़ पर उल्टा लटक गया। "तुम कौन हो



भाई?" टिंकू ने पूछा। "मैं चमगादड़ हूँ।" उसने कहा। "मैं रात के अँधेरे में देख सकता हूँ!" "क्या तुम मेरे दोस्त बनोगे? टिंकू ने पूछा। "हाँ, बनूँगा!" चमगादड़ बोला। एक पेड़ से दो चमकती आँखें उसे घूर रही थीं। "तुम कौन हो?" टिंकू ने पूछा। "मैं उल्लू हूँ।" जवाब आया। "मैं रात को अपने भोजन की तलाश में निकलता हूँ।"

"क्या तुम मेरे दोस्त बनोगे?" टिंकू ने पूछा। "हाँ, ज़रूर बनूँगा!" उल्लू बोला। टिंकू और उसके दोस्त हँसे और उछले-कूदे। वे इधर से उधर लुढ़के, जब तक कि टिंकू को उबासी न आने लगी। हाँ! वह बहुत थक गया है। "मुझे नींद आ रही है, अब घर जाना है," टिंकू बोला। वह घर लौटते समय बहुत ख़ुश था कि उसने आज बहुत से नए दोस्त बनाए थे।



Translated by Arti Smit
Original story Goodnight, Tinku! by Preethi Nambiar
Illustrated by Sonal Goyal and Sumit Sakhuja

सो जा टिंकू

1. अम्मा ने टिंकू की बात क्यों नहीं सुनी?

2. टिंकू की तरह आप रात में किस–किस को अपना दोस्त बना सकते हैं?

3. रात को नींद न आने पर आप क्या–क्या करते हैं?

4. नीचे दिए गए शब्दों के बारे में कोई एक–एक ख़ासियत लिखें।

   जुगनु –

   चमगादड़ –

5. नीचे दिए गए शब्दों के अर्थ लिखें और वाक्य बनाएँ।

   दोस्त –

   ख़ुबसुरत –

   उबासी –

6. कहानी में बहुत सारे ऐसे जीव–जन्तुओं के बारे में बताया गया है जो रात में दिखाई देते हैं। आप इनके अलावा कुछ और जीव–जन्तुओं के नाम लिखें जो रात में नज़र आते हैं।

7. 'रात' शब्द को देखकर आपके दिमाग़ में कौन–से शब्द आते हैं? सोचकर लिखें।

8. रात में आप अपने दोस्तों के साथ कौन–सा खेल खेलते हैं? उनके खेलों के नाम लिखें।

9. इस कहानी से आपको क्या समझ आया?

10. अगर हमें कभी नींद ना आए तो क्या होगा? सोचकर लिखें।

सूर्य

नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। आप इन में से कितने शब्दों के अर्थ जानते हैं या इनसे परिचित हैं। उन शब्दों के सामने सही (✓) का निशान लगाएँ और उनके अर्थ लिखें।

शब्द	पहले से जानते हैं	समूह में बातचीत के बाद जाना	शब्द के अर्थ लिखें
टिमटिमाना			
विभिन्न			
पृथ्वी			
कारण			
मालूम			
शुक्र			
मंगल			
बृहस्पति			
ग्रहों			
नज़र			
समूह			
तारा मंडल			
आकाश			
दुधिया			
धारी			
आकाश गंगा			
ग्रह			
दुरबीन			
ज़रूरत			

निर्देश : प्रिय दोस्तो, पाठ पढ़ने से पहले इन शब्दों को ज़रूर पढ़ें और इनके अर्थ जानने का प्रयास करें। अब आप अपने–अपने समूह में इन शब्दों पर बातचीत करें। ये प्रक्रिया पाठ को पढ़कर समझने में आपकी सहायता करेगी।

सूरज के निकलते ही दिन होता है तथा डूबते ही शाम। दिन भर यह आसमान में चमकता रहता है। ऐसा लगता है जैसे घूम रहा हो। क्या आपने कभी सोचा है कि यह क्या है?



टिमटिमाते हुए जो तारे हमें रात में दिखाई देते हैं, वे सब विभिन्न गैसों के जलते हुए गोले हैं। सूर्य भी गैस का एक ऐसा ही गोला है, जो पृथ्वी से लगभग 10 लाख गुणा बड़ा है। यह पृथ्वी से बहुत दूर है। पृथ्वी से बहुत दूर होने के कारण हमें बहुत छोटा दिखाई देता है।

सूरज पृथ्वी के चारों ओर नहीं घूमता है, बल्कि पृथ्वी सूरज के चारों ओर चक्कर लगाती है। इसलिए सूरज पूरब से पश्चिम की ओर जाता हुआ मालूम पड़ता है।

सूरज का एक बड़ा परिवार है जिसे सौर मंडल कहते हैं। इस परिवार के सदस्यों में शामिल हैं बुध, शुक्र, पृथ्वी, मंगल, बृहस्पति, शनि आदि। सप्ताह के दिनों के नाम भी इन ग्रहों के नाम पर रखे गए हैं।

आकाश में चमकते हुए कुछ तारे तो सूर्य से भी बड़े होते हैं जो बहुत दूर होने के कारण छोटे दिखाई देते हैं।

कुछ तारे समूह में नज़र आते हैं। ऐसे समूह को तारा मंडल कहते हैं। कभी-कभी आकाश में सफ़ेद दुधिया सड़क जैसी धारी दिखाई देती है उसे आकाश गंगा कहते हैं। तारों के बारे में और अधिक जानने का अच्छा तरीक़ा है रात में तारों को ध्यान से देखना। आकाश के कई ग्रह, तारे और अन्य चीज़ें ख़ाली आँखों से ही दिख जाती हैं, लेकिन अधिक दूर की चीज़ों को देखने के लिए दूरबीन की ज़रूरत पड़ती है।



Written by: Pratham Resource Centre, Illu~strated by: **Mitrarun Haldar**

सूर्य

1. सूरज के परिवार के सदस्यों के नाम लिखें।

2. इस पाठ को पढ़कर सूर्य के बारे में दो ख़ास बातें लिखें।

3. दिन और रात कैसे होते हैं?

4. आकाश गंगा किसे कहते है?

5. सूरज पृथ्वी से कितना बड़ा है?

6. सूरज धरती से बड़ा है फिर भी छोटा क्यों दिखता है? सोचकर लिखें।

7. इन शब्दों से वाक्य बनाएँ।

टिमटिमाते –

मालूम –

कारण –

8. इस कहानी से आपको क्या–क्या जानकारियाँ मिलीं? किन्हीं चार जानकारियों के बारे में लिखें।

9. इन शब्दों को सही करें।

पिरथवी –	पशचीम –	चककर –
बलकी –	इसलइये –	बरहसपति –

10. 'सूर्य' शब्द पढ़कर आपके दिमाग़ में जो शब्द आ रहे हैं, उन्हें ख़ाली बक्से में लिखें।

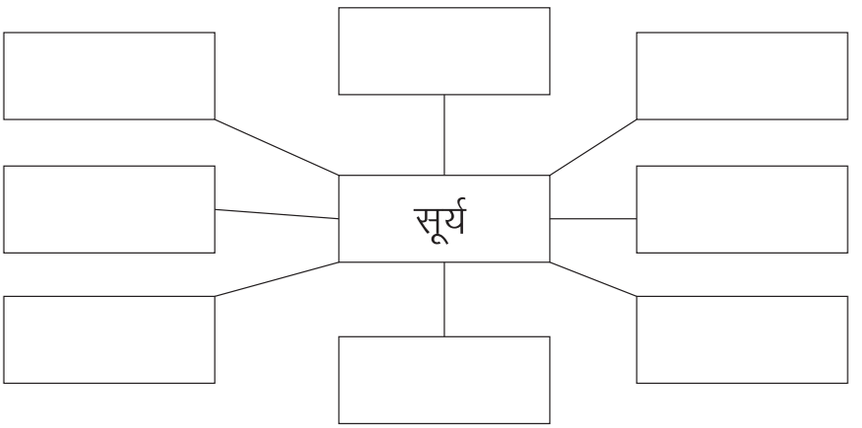

11. अगर रात न हो तो क्या होगा? सोचकर लिखें।

सूर्य की चाल

नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। आप इन में से कितने शब्दों के अर्थ जानते हैं या इनसे परिचित हैं। उन शब्दों के सामने सही (✓) का निशान लगाएँ और उनके अर्थ लिखें।

शब्द	पहले से जानते हैं	समूह में बातचीत के बाद जाना	शब्द के अर्थ लिखें
सूर्य			
देश			
कनाडा			
फिनलैंड			
ग्रीनलैंड			
नॉर्वे			
रूस			
स्वीडन			
आइसलैंड			
हिस्सा			
प्रति			
महीने			
मौसम			
महाद्वीप			
अन्टार्कटिका			
धुरी			
इर्द–गिर्द			
मज़ेदार			
डूबना			
झुकना			

निर्देश : प्रिय दोस्तो, पाठ पढ़ने से पहले इन शब्दों को ज़रूर पढ़ें और इनके अर्थ जानने का प्रयास करें। अब आप अपने–अपने समूह में इन शब्दों पर बातचीत करें। ये प्रक्रिया पाठ को पढ़कर समझने में आपकी सहायता करेगी।

सूर्य की चाल

हम रोज़ सुबह सूर्य देखते हैं। यह सुबह उठता है और शाम के समय डूब जाता है और फिर रात हो जाती है। क्या जिस तरह हम अपने देश में सूर्य को देख पाते हैं, उसी तरह अन्य देशों में भी सूर्य दिखाई पड़ता है।

सूर्य, भारत में साल में 250-300 दिन दिखाई पड़ता है। लेकिन कुछ ऐसे भी देश हैं जहाँ सूर्य निकलता है और फिर कई दिनों तक नहीं डूबता या फिर डूब जाता है तो कई दिनों तक निकलने का नाम नहीं लेता।

कनाडा, फिनलैंड, ग्रीनलैंड, नॉर्वे, रूस, स्वीडन और आइसलैंड के कई उत्तरी हिस्सों में ऐसा होता है। वहाँ सूर्य प्रति वर्ष केवल अप्रैल से अगस्त के बीच ही दिखाई पड़ता है।

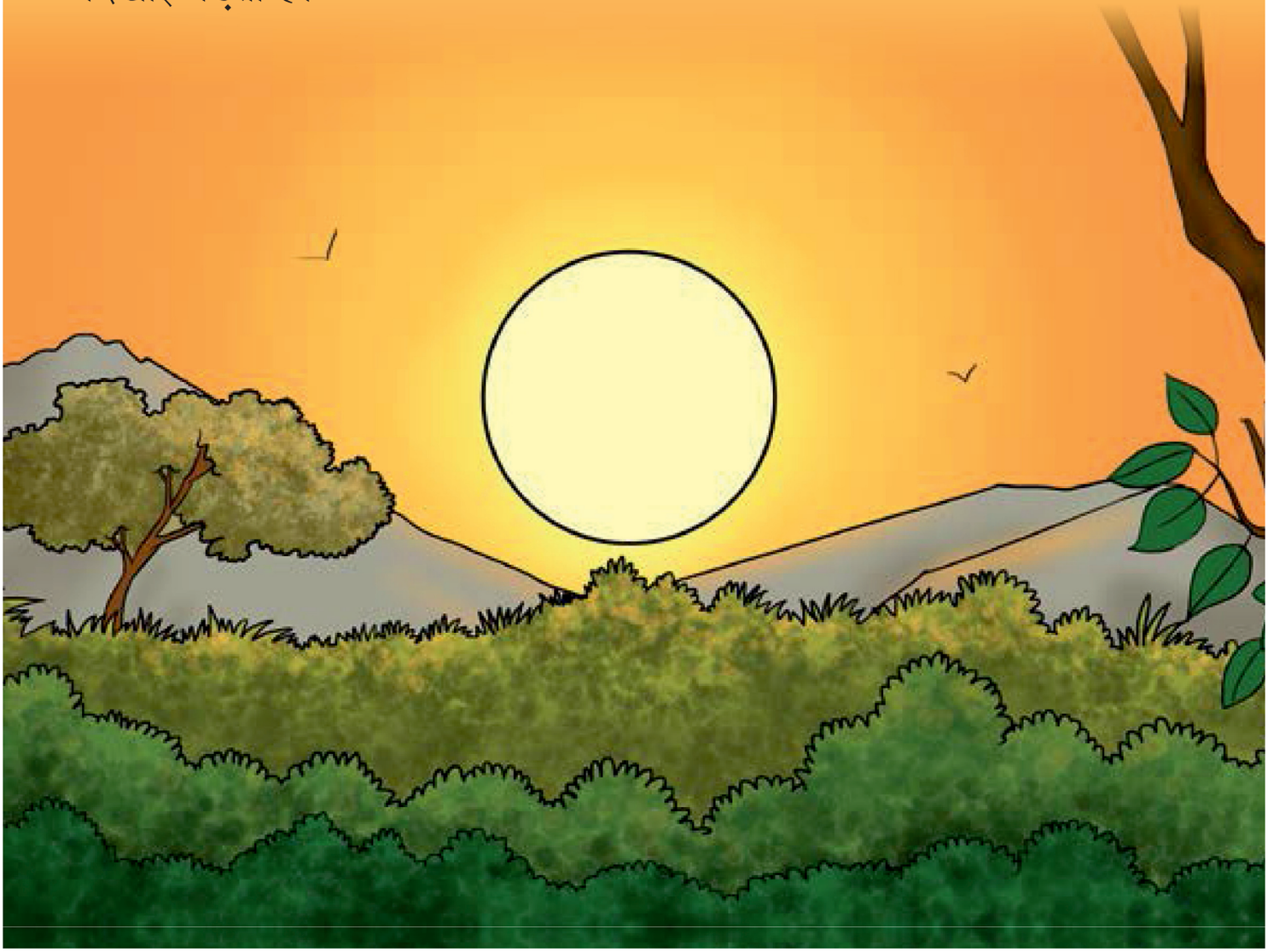

उस समय वहाँ गर्मियाँ होती हैं और चौबीसों घंटे दिन निकला रहता है। जैसे ही सर्दियों का मौसम आता है, सूर्य डूब जाता है और कई महीनों तक चौबीसों घंटे अंधेरा रहता है। इन देशों में रह रहे लोगों को हर समय दिन या फिर हर समय रात की आदत होती है।

एक और ऐसा ही उदाहरण है महाद्वीप अन्टार्कटिका। वहाँ सूर्य केवल सर्दियों के महीनों में ही निकलता है। सितम्बर के बाद ही वहाँ सूर्य उगता है जो फिर कई महीनों तक डूबता नहीं है। फिर कहीं मार्च में जाकर सूर्य डूबता है।

दिन और रात का यह अंतर सूर्य के चारों ओर तथा अपने इर्द-गिर्द घूम रही हमारी पृथ्वी के कारण होता है और ख़ासकर इसलिए क्योंकि पृथ्वी की धुरी एक ओर झुकी हुई है। अपने चारों ओर घूमने, सूर्य के इर्द-गिर्द चक्कर लगाने और धुरी के एक ओर झुकने के कारण पूरी दुनिया में कई मज़ेदार चीज़ें होती रहती हैं।



Written by: Swati Chawla, Illu~strated by: Amar Soni

सूर्य की चाल

1. भारत में सूर्य स्पष्ट रूप से कितने दिन दिखाई देता है?

2. सूर्य किन–किन देशों में सिर्फ़ अप्रैल से अगस्त के बीच ही दिखाई देता है?

3. अंटार्कटिका महाद्वीप जहाँ सूर्य केवल सर्दियों के महीनों में ही निकलता है? बाकी दिनों में यहाँ की स्थिति कैसी होगी ? सोचकर लिखें।

4. इस पाठ में आपको सबसे महत्त्वपूर्ण जानकारी क्या मिली?

5. यदि पृथ्वी सूर्य के चक्कर लगाना बंद कर दे तो क्या होगा?

6. क्या सूरज की बदलती हुई स्थिति हमें समय का ज्ञान करा सकती है, कैसे? अपनी राय लिखें।

8. यदि हमारे यहाँ कई महीनों तक सूरज ना निकले तो यहाँ के लोगों का जीवन कैसा होगा? सोचकर लिखें।

9. सूर्य सुबह निकलता है रात को डूब जाता है क्योंकि...

- यह प्राकृति का नियम है। ☐
- पृथ्वी का हिस्सा सूर्य के सामने आ जाने से रात हो जाती है। ☐
- क्योंकि ये लोगों के सोने का समय होता है। ☐

पूरी कैसे फूलती है?

नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। आप इन में से कितने शब्दों के अर्थ जानते हैं या इनसे परिचित हैं। उन शब्दों के सामने सही (✓) का निशान लगाएँ और उनके अर्थ लिखें।

शब्द	पहले से जानते हैं	समूह में बातचीत के बाद जाना	शब्द के अर्थ लिखें
पर्व			
कढ़ाई			
दिलचस्प			
गूँथना			
ग्लूटेन			
रबड़			
लोई			
तापक्रम			
ताकतवर			
फूलना			
बेलना			
मिलाना			
प्रोटीन			
फैलना			
लचीला			
अक्सर			
तैरना			
सतह			
उड़ना			
भाप			

निर्देश : प्रिय दोस्तो, पाठ पढ़ने से पहले इन शब्दों को ज़रूर पढ़ें और इनके अर्थ जानने का प्रयास करें। अब आप अपने–अपने समूह में इन शब्दों पर बातचीत करें। ये प्रक्रिया पाठ को पढ़कर समझने में आपकी सहायता करेगी।

पूरी कैसे फूलती है?



पर्व-त्योहारों में हमारी थालियों में हलवा-पूरी, खीर-पूरी की एक ख़ास जगह होती है। पूरी तलने की ख़ुशबू सब को अपनी ओर खींचती है। कढ़ाई में तैरती पूरी को देखना भी बहुत दिलचस्प होता है। हम अक्सर सोचते हैं कि पूरी फूलती क्यों है? क्या उसके अंदर हवा भरी होती है? आज हम इसी के बारे में जानेंगे और पता लगाएँगे।









एक बड़े से बर्तन में अम्मा ने थोड़ा-सा आटा लिया। उन्होंने उसमें थोड़ा-सा तेल और नमक डाला और फिर पानी मिलाया। वह अब अपनी हथेली में थोड़ा-सा तेल लगाकर उसे अच्छी तरह गूँथ रही हैं । उनका कहना है कि अगर आटे को अच्छी तरह गूँथा नहीं जाता है तो पूरी नहीं फूलती है।

जब आटे को गूँथते हैं तो एक दूसरे से चिपके कण, फैलने लगते हैं। फिर इस तरह फैलने के बाद एक नया प्रोटीन बन जाता है, जिसे कहते हैं ग्लूटेन। ग्लूटेन, रबड़ की तरह लचीला होता है, इसलिए गूँथे हुए आटे को हम कोई भी आकार दे सकते हैं।











अम्मा ने कढ़ाई चढ़ा कर उस में थोड़ा तेल डाल दिया है। अब वह एक पूरी बेल रही हैं। गर्म तेल में पूरी को डालते हैं। थोड़ी देर में पूरी फूल जाती है।

क्या हुआ है? गूँथे हुए आटे में ग्लूटेन होने की वजह से उसे बेला जा सकता है। जब इस आटे की एक छोटी-सी लोई को बेला जाता है तो पूरी में ग्लूटेन की एक सतह बन जाती है। जब पूरी को गर्म तेल में डालते हैं तो उसकी निचली सतह तेल की वजह से बहुत गर्म हो जाती है। याद है न कि आटे को गूँथने के लिए इसमें पानी मिलाया गया था? ज़्यादा तापक्रम की वजह से पूरी के अंदर का पानी भाप बन कर उड़ जाता है। यह भाप बहुत ताक़तवर होती है और इससे ग्लूटेन की सतह ऊपर चली जाती है। इसी वजह से पूरी फूलती है।

Translated by Poonam S. Kudesia
Original story Why Does A Poori Puff Up? by Varsha Joshi
Illu~strated by Sonal Gupta

पूरी कैसे फूलती है?

1. पूरी बनाने के लिए अम्मा ने क्या किया?

2. गूँथे हुए आटे को हम कोई भी आकार क्यों दे सकते हैं?

3. पूरी गर्म तेल में डालते ही फूलने लगती है। ऐसा क्यों होता है?

4. त्योहारों में खीर और पूरी का ख़ास स्थान क्यों होता है? सोचकर लिखें।

5. इस कहानी में से वे शब्द छाँटकर लिखें जिन्हें आपने पहली बार पढ़ा है? उनसे कोई दो वाक्य भी बनाएँ।

7. पूरी की तरह खाने की और कौन–कौन सी चीज़ें बनाते वक़्त फूल जाती है?

8. एक बड़े से बर्तन में अम्मा ने थोड़ा–सा आटा लिया। रेखांकित शब्द को बदलकर कोई ऐसा वाक्य लिखें जिससे उस वाक्य का अर्थ ना बदले।

9. कढ़ाई से निकलते ही पूरी ...

- भूरे रंग की होती है। ☐
- ख़ूशबूदार होती है। ☐
- कुरकुरी होती है। ☐

तर्क ज़रूर दें।

ऐसा भी गाँव है...

नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। आप इन में से कितने शब्दों के अर्थ जानते हैं या इनसे परिचित हैं। उन शब्दों के सामने सही (✓) का निशान लगाएँ और उनके अर्थ लिखें।

शब्द	पहले से जानते हैं	समूह में बातचीत के बाद जाना	शब्द के अर्थ लिखें
यात्रा			
शौक़			
घबराहट			
ग़लती			
स्वभाव			
विपरीत			
नन्दवाड़ा			
ड्राइवर			
हैरत			
व्यवस्था			
विकसित			
प्रखण्ड			
मुख्यालय			
फ़ैसला			
उत्सुकता			
एकड़			
आबादी			
विशेषता			
ग़रीब			
इष्टदेव			

निर्देश : प्रिय दोस्तो, पाठ पढ़ने से पहले इन शब्दों को ज़रूर पढ़ें और इनके अर्थ जानने का प्रयास करें। अब आप अपने–अपने समूह में इन शब्दों पर बातचीत करें। ये प्रक्रिया पाठ को पढ़कर समझने में आपकी सहायता करेगी।

ऐसा भी गाँव है...

मुझे यात्रा करने का बिल्कुल शौक़ नहीं है। यात्रा की जहाँ बात आती है तो जैसे साँस थम-सी जाती है। क्योंकि मुझे टैक्सी या कार में यात्रा करने पर घबराहट होती है। ग़लती से ऐसा हो जाए तो मुझे सँभलना मुश्किल हो जाता है। परन्तु मेरी नौकरी मेरे स्वभाव के बिल्कुल विपरीत है। मैं यात्रा करने से जितना बचती हूँ उतना ही मुझे यात्रा करना पड़ता है। महीने में एक दो बार तो दिल्ली से बाहर जाना ही होता है।

इस बार मैं अजमेर ज़िला के मसूदा ब्लॉक जा रही थी। नन्दवाड़ा गाँव की ओर हमारी जीप दौड़ रही थी कि रास्ते में एक गाँव दिखा। मैंने अचानक ड्राइवर को गाड़ी रोकने के लिए कहा। इस गाँव को देखकर मैं हैरत में पड़ गई। आस-पास बहुत से गाँव थे जो काफ़ी विकसित थे। पक्के घर, पानी व बिजली की पूरी व्यवस्था थी। मगर प्रखण्ड मुख्यालय मसदू से केवल 3.5 किमी. की दूरी पर बसे इस गावँ की हालत दूसरे गाँवों से भिन्न थी। इस गाँव के बारे में जानने के लिए मेरी उत्सुकता बढ़ गई। हम ने गाड़ी से उतर कर गाँव में पैदल जाने का फ़ैसला किया। थोड़ी दूरी पर कुछ बुज़ुर्ग बैठे थे। मैंने उन्हें नमस्ते किया। मुझे देखकर बड़े ही आदर-भाव से उन्होंने अपने पास बिठाया। मैं अभी भी चारों तरफ़ बड़ी हैरानी से देख रही थी। तभी मेरी नज़र एक घर पर पड़ी जिसके दरवाज़े पर एक कार व एक मोटर साइकिल खड़ी थी। उससे मुझे और भी हैरानी हुई कि घर में एक नहीं दो-दो गाड़ियाँ हैं। अब आप कहेंगे कि इसमें हैरत



की क्या बात है? हैरत की बात इसलिए है कि इस गाँव में एक भी पक्का घर नहीं है। "ऐसा तो नहीं लगता है कि यहाँ पैसे की कमी है फिर भी सारे घर कच्चे क्यों हैं?" मैंने उनसे सवाल किया। उनसे बात करने पर पता चला कि लगभग 1600 एकड़ में यह गाँव फैला है। इसकी कुल आबादी लगभग 2000 है। इस गाँव में सभी एक ही जाति के हैं। यहाँ तक कहा जाता है कि उनके गोत्र भी एक ही हैं। ये लोग अलग-अलग देवी-देवताओं को मानने में विश्वास नहीं रखते। इनके एक ही इष्टदेव हैं 'देव नारायण' जिनको ये पूजते हैं।

इस गाँव में रहने वाले किसी भी व्यक्ति की अपनी कोई ज़मीन नहीं है। गाँव की आबादी के हिसाब से ज़मीन को आपस में बाँट लिया गया है और उसी पर खेती-बाड़ी करके वह अपनी गुज़र-बसर करते हैं। इसके अलावा बहुत से लोग ऐसे भी हैं जो पुलिस की नौकरी करते हैं। इस गाँव की एक और विशेषता है कि किसी परिवार के पास पैसा अधिक होने पर भी सभी कच्चे मकानों में ही रहते हैं ताकि किसी के मन में यह भाव न आए कि यह अमीर है तो इसका घर पक्का और शानदार बना है और मैं ग़रीब हूँ तो मेरा घर घास-फूस का बना है। इस अनोखे गाँव का नाम है - देवमाली।



Written by: **Saira Bano**, Illu~strated by: **Ajit Narayan**

ऐसा भी गाँव है

1. लेखिका को यात्रा करना क्यों पसंद नहीं था?

2. लेखिका को अपने स्वभाव के विपरीत यात्रा क्यों करनी पड़ती थी?

3. गाँव की कोई तीन बातें जो आपको सबसे ज़्यादा पसंद आई, लिखें।

4. गाँव के लोग अपना गुज़र–बसर कैसे करते थे?

5. नीचे दिए गए शब्दों का अर्थ लिखें और वाक्य में प्रयोग करें।

   हैरत –

   उत्सुकता –

   आबादी –

6. गाँव के घर कच्चे क्यों थे? सोचकर लिखें।

7. कुछ वस्तुओं के नाम लिखें जो गाँवों में होती हैं पर शहरों में नहीं?

8. क्या आप कभी ऐसी जगह गए हैं जहाँ आपको कोई हैरानी की बात लगी हो? उस घटना का अनुभव अपने शब्दों में लिखें।

9. अपने कार्यों की सूची बनाएँ।

मर्ज़ी से करने वाले कार्य	बिना मर्ज़ी के करने वाले कार्य

10. इस कहानी को केवल दस वाक्यों में लिखें।

साहस कथा

नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। आप इन में से कितने शब्दों के अर्थ जानते हैं या इनसे परिचित हैं। उन शब्दों के सामने सही (✓) का निशान लगाएँ और उनके अर्थ लिखें।

शब्द	पहले से जानते हैं	समूह में बातचीत के बाद जाना	शब्द के अर्थ लिखें
डेनियल			
इंग्लैण्ड			
वार्षिक			
सम्मेलन			
उपस्थित			
मुख्याध्यापिका			
अभिभावक			
शाबाश			
दक्षिण			
अभयारण्य			
झुंड			
सलाम			
बख़्शना			
जन्मदिवस			
स्वागत			
पटल			
साकार			
हैपी बर्थ डे			
साहस			
चेम्बकोल्ली			

निर्देश : प्रिय दोस्तो, पाठ पढ़ने से पहले इन शब्दों को ज़रूर पढ़ें और इनके अर्थ जानने का प्रयास करें। अब आप अपने–अपने समूह में इन शब्दों पर बातचीत करें। ये प्रक्रिया पाठ को पढ़कर समझने में आपकी सहायता करेगी।

साहस कथा

डेनियल बेन्ट नाम का एक साइकिल सवार इंग्लैण्ड में रहता था। जब वह 11 साल का था तब एक दिन स्कूल में वार्षिक सम्मेलन हुआ। सभी बच्चों के माता-पिता उपस्थित थे। स्कूल की मुख्याध्यापिका ने सभी बच्चों से पूछा, "बड़े होकर आप क्या बनोगे?" किसी ने कहा, "मैं डॉक्टर बनूँगा।" कोई बोला, "मैं फुटबॉल खेलूँगा।" डेनियल ने कहा, "मुझे साइकिल से पूरी दुनिया की सैर करनी है और भले काम के लिए पैसे जुटाने हैं।" सारी कक्षा उस पर हँस पड़ी। पीछे बैठे हुए कुछ अभिभावकों ने कहा, "बहुत खूब, शाबाश।"

उसके 20 साल बाद डेनियल सचमुच 90,000 मील की यानि लगभग 1,44,840 किलोमीटर की दूरी तय करके इंग्लैण्ड से भारत आया। बिल्कुल



अकेले, साथ में बस उतना ही सामान था जितना वह साइकिल पर रख सकता था। अपनी यात्रा के आख़िरी दिन डेनियल दक्षिण भारत के बांदीपुर अभयारण्य पहुँचा। एक हाथी के झुंड ने उस पर हमला कर दिया। किसी से सुना था, "जब हाथी हमला करे तब उसके सामने खड़े हो जाओ और गर्दन झुकाकर उसे सलाम करो।" 30 टन वज़न का यह जानवर अपने मार्ग में आने वाले भारी-भारी पेड़ों तक को तो बख़्शता नहीं, मुझे कहाँ छोड़ेगा? यही सोचकर डेनियल भाग खड़ा हुआ।

छह महीने बाद अपने 31 वें जन्म दिवस पर वह चेम्बकोल्ली नामक छोटे गाँव में पहुँचा। वहाँ के लोगों ने उसका जमकर स्वागत किया। 'हैपी बर्थ डे' के पटल जगह-जगह लगाए थे। यह देखकर डेनियल की आँखें भर आईं। उसने् उन आँसूओं को बहने दिया। बीस साल बाद उसका सपना साकार जो हुआ था।

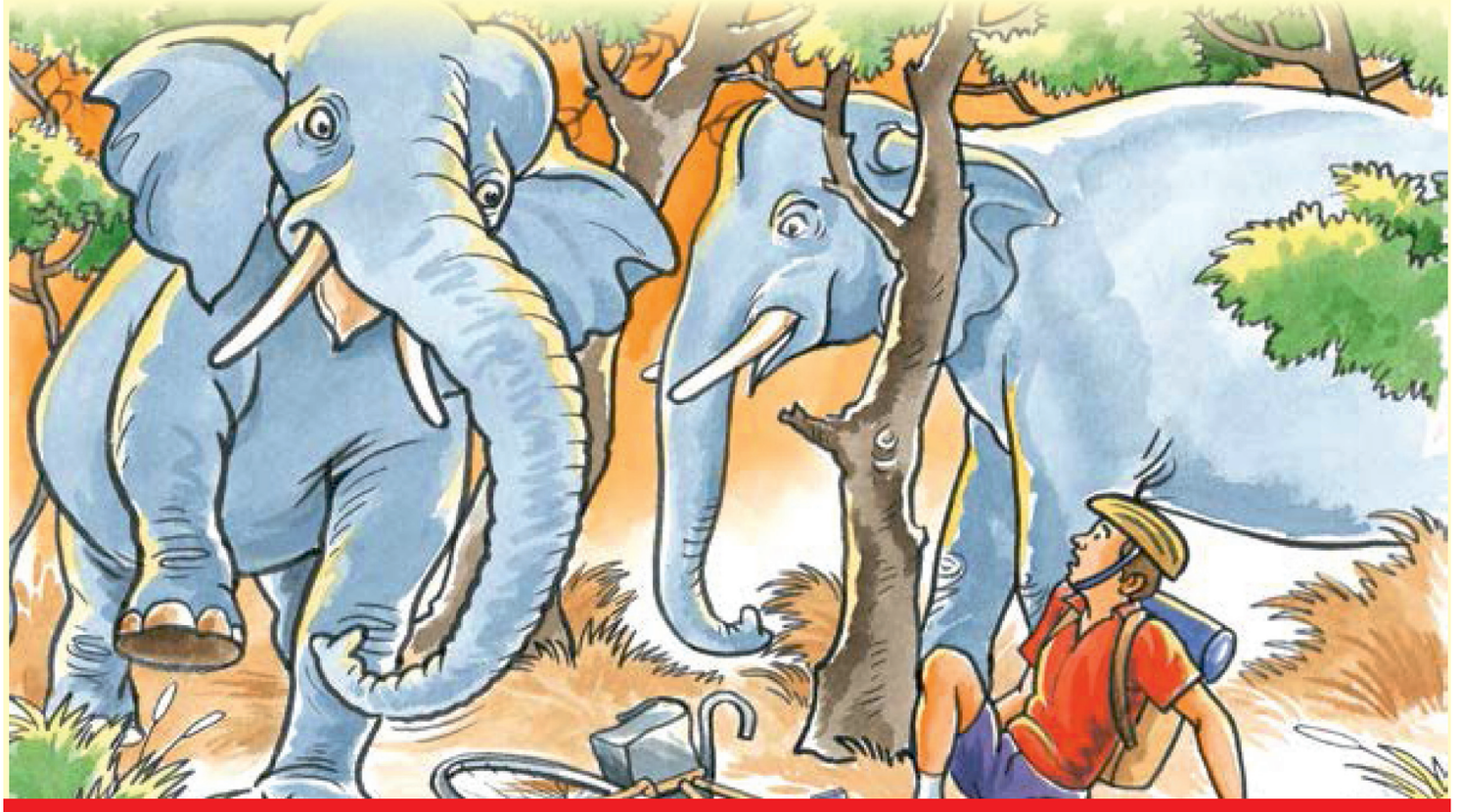

Written by: Meera Tendolkar, Illu~strated by: Partha Sengupta

साहस कथा

1. डेनियल ने साइकिल पर कितनी लम्बी दूरी तय की थी?

2. डेनियल ने किस उम्र में अपनी यात्रा पूरी की? उस यात्रा की समाप्ति कहाँ और कैसे हुई?

3. डेनियल की बात सुनकर पूरी कक्षा उस पर क्यों हँस पड़ी?

4. पीछे बैठे कुछ **<u>अभिभावकों</u>** ने उसे शाबाशी दी।
   रेखांकित शब्द का अर्थ बताएँ और इसी शब्द से एक नया वाक्य बनाएँ।

5. 'यह जानवर भारी–भारी पेड़ों को तो बख़्शता नहीं, मुझे कहाँ छोड़ेगा।'
   रेखांकित शब्द को ऐसे शब्द से बदलें कि वाक्य का अर्थ न बदले। अब इसी शब्द से एक नया वाक्य बनाएँ।

6. इस पूरे पाठ की चार घटनाओं को क्रमवार लिखें।

7. डेनियल किसी भले काम के लिए पैसे जुटाना चाहता था। आपके अनुसार वह भला काम क्या था?

8. डेनियल की यात्रा के दौरान का कोई एक दिन सोचें और उसके बारे मे विस्तार से बताएँ, निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यान में रखते हुए :
   - दिन भर उसे क्या दिक्कतें आई होंगी?
   - रास्ते में उसे कौन–कौन से लोग मिले होंगे?
   - दिन भर उसके मन में क्या चल रहा होगा?

9. अपना सपना पूरा करके डेनियल की आँखों मे आँसू आ गए क्योंकि...
   - 1000 मील की यात्रा करना मामूली काम नहीं था। ☐
   - यात्रा के दौरान उन्हें परेशानियों को सामना करना पड़ा था। ☐
   - उन्होंने जो सपना देखाा था उसे पूरा दिखाया था। ☐

सूर्य ग्रहण

नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। आप इन में से कितने शब्दों के अर्थ जानते हैं या इनसे परिचित हैं। उन शब्दों के सामने सही (✓) का निशान लगाएँ और उनके अर्थ लिखें।

शब्द	पहले से जानते हैं	समूह में बातचीत के बाद जाना	शब्द के अर्थ लिखें
सूर्य ग्रहण			
अचानक			
कारण			
असल			
धरती			
इर्द–गिर्द			
धुरियों			
लट्टू			
परछाई			
तुलना			
आकार			
बावजूद			
वजह			
नंगी आँखों			
ख़राब			
हानिकारक			
हालाँकि			
चमकने			
गहरे			
हानिकारक			

निर्देश : प्रिय दोस्तो, पाठ पढ़ने से पहले इन शब्दों को ज़रूर पढ़ें और इनके अर्थ जानने का प्रयास करें। अब आप अपने–अपने समूह में इन शब्दों पर बातचीत करें। ये प्रक्रिया पाठ को पढ़कर समझने में आपकी सहायता करेगी।

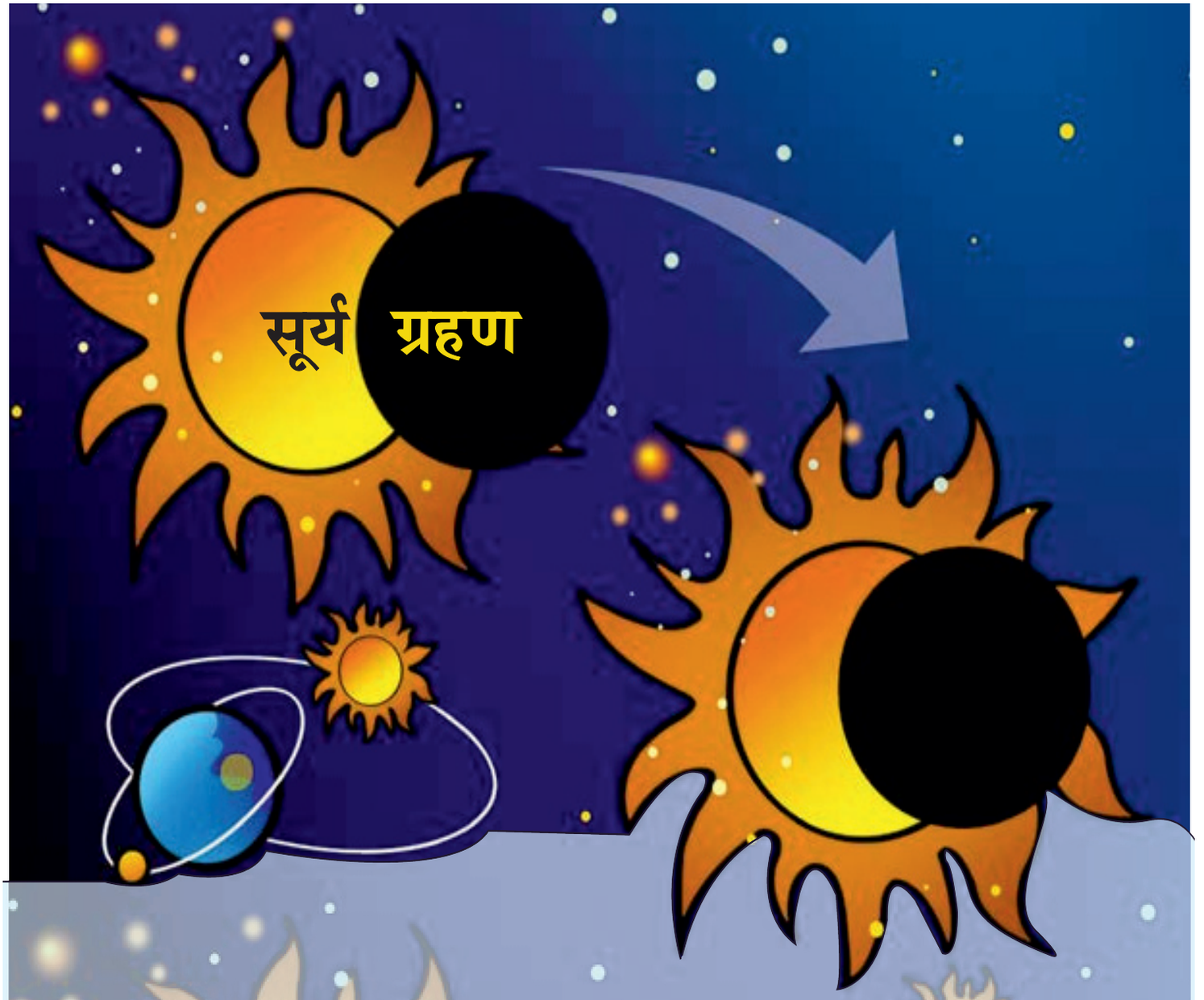

सूर्य ग्रहण

कभी-कभी दिन के समय सूर्य अचानक छुप जाता है और थोड़ी देर के लिए दिन में भी ऐसा लगता है जैसे रात हो गई हो, ऐसा सूर्य ग्रहण के कारण होता है। असल में चाँद धरती के इर्द-गिर्द घूमता है और ये दोनों सूर्य के इर्द-गिर्द घूमते हैं। इसके साथ ही धरती और चाँद अपनी-अपनी धुरियों पर लट्टू की तरह भी घूमते हैं। ऐसे ही घूमते-घूमते ये तीनों जब एक सीध में आ जाते हैं और चाँद धरती और सूर्य के बीच में होता है तो चाँद की परछाई धरती पर पड़ती है। थोड़ी देर के लिए सूर्य दिखता नहीं है, इसी को सूर्य ग्रहण कहते हैं।

चाँद सूर्य से बहुत छोटा है फिर भी वह सूर्य को ढक लेता है क्योंकि सूर्य चाँद की तुलना में 400 गुना दूर है, इसलिए वह आकार में चाँद से 400 गुना बड़ा होने के बावजूद चाँद के बराबर दिखता है। दूर की चीज़ें हमें छोटी दिखाई देती हैं। इसी वजह से चाँद इतने बड़े सूर्य को अपने पीछे छुपा पाता है।

सूर्य ग्रहण दिखने में बहुत सुन्दर लगता है पर इसे नंगी आँखों से देखना हानिकारक होता है। सूर्य की तरफ़ देखने से आँखें ख़राब हो सकती हैं। सूर्य ग्रहण के समय हालाँकि सूर्य चाँद के पीछे छुपा होता है लेकिन जैसे ही चाँद उसके आगे से हटता है सूर्य फिर चमकने लगता है, इसलिए सूर्य ग्रहण को बिना गहरे काले रंग के चश्मे के देखना हानिकारक होता है।



Illu~strated by: **Mitrarun Haldar**

सूर्य ग्रहण

1. सूरज चाँद से कितना दूर है?

2. सूर्यग्रहण के समय धरती से सूर्य क्यों दिखाई नहीं देता?

3. सूर्य ग्रहण कैसे होता है?

4. सूर्यग्रहण को नंगी आँखों से देखना हानिकारक क्यों होता है?

5. सूर्य ग्रहण के बारे में अक्सर बहुत सारी कहावतें प्रचलित हैं। अपने शब्दों में लिखें।

6. इस शब्द को देखकर आपके दिमाग में कौन–कौन से शब्द आते हैं? ख़ाली डिब्बों में लिखें।

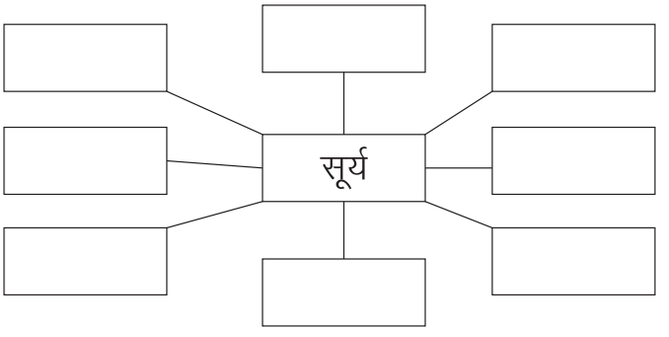

7. नीचे दिए गए शब्दों का अर्थ लिखें और वाक्य बनाएँ।

इर्द–गिर्द – _____

हानिकारक – _____

8. चाँद धरती के **इर्दगिर्द** घूमता है।

रेखांकित शब्द को बदलकर कोई वाक्य लिखें जिससे इस वाक्य का अर्थ न बदले।

_____

_____

_____

9. इस पाठ से क्या–क्या नई जानकारियाँ मिलीं?

_____

_____

_____

_____

_____

10. अगर सूरज रोज़ नहीं निकले तो...

- हमेशा अंधेरा छाया रहेगा। ☐
- सभी लोगों सोते रहेंगे। ☐
- दिन और रात नहीं होंगे। ☐

ज़ुलुबिया

नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। आप इन में से कितने शब्दों के अर्थ जानते हैं या इनसे परिचित हैं। उन शब्दों के सामने सही (✓) का निशान लगाएँ और उनके अर्थ लिखें।

शब्द	पहले से जानते हैं	समूह में बातचीत के बाद जाना	शब्द के अर्थ लिखें
ज़ुलुबिया			
खूबसूरत			
नारंगी			
पाकचूर्ण			
ज़ायकेदार			
चाशनी			
रमज़ान			
जिनासुरा			
उम्र			
वर्ष			
सदी			
नोश			
फरमाएँ			
ज़िक्र			
आमतौर			
ज़ाफ़रान			
नाज़ुक			
रसदार			
हरिद्वार			
सुनहरी			

निर्देश : प्रिय दोस्तो, पाठ पढ़ने से पहले इन शब्दों को ज़रूर पढ़ें और इनके अर्थ जानने का प्रयास करें। अब आप अपने–अपने समूह में इन शब्दों पर बातचीत करें। ये प्रक्रिया पाठ को पढ़कर समझने में आपकी सहायता करेगी।

ज़ुलुबिया

ज़ुलुबिया कितना ख़ूबसूरत नाम है। इसकी नारंगी रंगत मन मोह लेती है। यह कितनी मीठी होती है। नाम से ही लगता है कि कितनी ख़ूबसूरत और ज़ायक़ेदार होगी। बहुत पतली लेकिन नर्म बिल्कुल नहीं। जी हाँ, चाशनी में डूबी इस ख़ूबसूरत चीज़ को आप और हम जलेबी कहते हैं।

चौदहवीं सदी में लिखी मोहम्मद बिन हसन् की किताब (किताबलु तारीख़ – The book of dishes) से जलेबी के बारे में पता चलता है। कहा जाता है रमज़ान के महीने में ग़रीबों में मिठाई बाटँने का चलन था। उस वक़्त इसे जलेबिया कहा जाता था। लेकिन बाद में यह जलेबी हो गई। इतिहास पर नज़र डालें तो पता चलता है कि जिनासुरा ने सन् 1450 में 'प्रियाम्करण्ण कथा' में भी जलेबी का जिक्र किया है। यानी हिन्स्दुतान में ज़ुलुबिया हमारी इस लज़ीज़ तरीन मिठाई 'जलेबी' की उम्र कम से कम 650 वर्ष है। हमारे देश में इसके कई नाम हैं–जिलीबी, जिलिपि, जलापी, ज़िलापिर, इमरती, जहाँगीरी आदि।





पाकिस्तान में इसका इस्तेमाल दवाई के तौर पर भी होता है। लोगों का मानना है कि सिर में तेज़ दर्द हो तो थोड़ी देर तक जलेबी को दूध में रख दें और फिर नोश फरमाएँ तो सिर का दर्द जाता रहेगा। यहाँ एक बात का जिक्र करना ज़रूरी है। जलेबी और इमरती देखने में एक जैसी नज़र आती हैं लेकिन दोनों में बहुत फर्क है। जलेबी इरान से हिंदुस्तान आई, ऐसा माना जाता है। यह आमतौर पर मैदे से बनाई जाती है। दूसरी तरफ़ इमरती अवध की खोज है जो उड़द की दाल को पीस कर तैयार की जाती है। इस तरह हमारे देश में कहीं जलेबी उड़द की दाल और चावल के आटे से बनती है तो कहीं बेसन् और गेहूँ के आटे से। कहीं इसे चने की दाल मिलाकर बनाते हैं। कुछ लोग इसमें खोया, छेना, रवा या सूजी और पाकचूर्ण भी मिलाते हैं। कुल मिलाकर जलेबी एक ऐसी चीज़ है जिसका नाम लेने भर से मुँह में पानी आ जाता है।

अलग-अलग क्षेत्रों में यह अलग-अलग दिखती है - गुजरात में जाफरान मिली हुई पतली, नाजुक सुनहरी जलेबी तो इलाहाबाद की मोटी सी रसदार जलेबी, जिसे दही में मिला कर खाते हैं। जबकि हरिद्वार की जलेबी कुछ और तरह की होती है।

Written by: Faiyaz Ahmed, Illu~strated by: Ajit Narayan
Acknowledgement: Department of Education (SLMA), Government of Bihar

ज़ुलुबिया

1. इस पाठ में जलेबी के कौन–कौन से नाम बताए गए हैं?

2. मौहम्मद बिन हसन की किताब से जलेबी के बारे में क्या पता चलता है?

3. जलेबी कितनी पुरानी है?

4. पाकिस्तान में जलेबी का प्रयोग दवाई के रूप में कैसे किया जाता है?

5. जलेबी और इमरती में क्या फ़र्क है?

6. नीचे दिए गए शब्दों का अर्थ लिखें और इन्हें वाक्य में प्रयोग करें।

   ज़ायकेदार –

   फर्क –

7. जलेबी कैसे बनाई जाती है, उसका तरीका बताएँ?

8. आपको कौन–सी मिठाई पसंद है और क्यों?

9. "नोश फरमाने" से आप क्या समझते हैं? अपने शब्दों में लिखें।

10. 'मुँह में पानी आना' मुहावरे का अर्थ अपने शब्दों में लिखें और एक नया वाक्य बनाएँ।

कचरे का बादल

नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। आप इन में से कितने शब्दों के अर्थ जानते हैं या इनसे परिचित हैं। उन शब्दों के सामने सही (✓) का निशान लगाएँ और उनके अर्थ लिखें।

शब्द	पहले से जानते हैं	समूह में बातचीत के बाद जाना	शब्द के अर्थ लिखें
फ़ौरन			
शार्पनर			
इस्तेमाल			
स्वीटी			
ख़ाली			
लिफ़ाफ़ा			
कूड़ेदान			
गुस्सा			
भिनभिनाना			
बुद्धू			
आंटी			
प्लास्टिक			
थैली			
मुस्कराना			
बिस्कुट			
छीलना			
गायब			
शायद			
बेकार			
ज़्यादा			

निर्देश : प्रिय दोस्तो, पाठ पढ़ने से पहले इन शब्दों को ज़रूर पढ़ें और इनके अर्थ जानने का प्रयास करें। अब आप अपने–अपने समूह में इन शब्दों पर बातचीत करें। ये प्रक्रिया पाठ को पढ़कर समझने में आपकी सहायता करेगी।

कचरे का बादल

चीकू का कोई दोस्त नहीं था। चीकू के साथ कोई खेलना नहीं चाहता था, क्योंकि उसके सिर पर हमेशा एक बादल मँडराता रहता। कचरे से भरा एक बादल।

एक दिन वह सोना से बोली, "हम साथ-साथ स्कूल चलते हैं" सोना फ़ौरन दूर भाग गई। "क्या मैं तुम्हारा पेंसिल शार्पनर इस्तेमाल कर लूँ?" उसने् स्वीटी से पूछा। स्वीटी मुँह बनाते हुए चली गई। अम्मा हमेशा उसे कूड़ा फैलाने से मना करती थीं। "सड़क पर केले का छिलका मत फेंको। बिस्कुट के ख़ाली लिफ़ाफ़े कूड़ेदान में डालो।" लेकिन चीकू ने उनकी बात नहीं मानी। एक दिन अम्मा गुस्से से बोली, "देखना अब यह कूड़ा हमेशा तुम्हारे साथ ही रहेगा!"

अगले दिन जब चीकू सो कर उठी तो चारों तरफ़ मक्खियाँ भिनभिना रही थीं। साथ ही, सिर पर कचरे का बादल मँडरा रहा था। अम्मा की बात सच साबित हुई।

इसके बाद चीकू ने बाला को देखा सड़क पर केले का छिलका फेंकते हुए। चीकू चिल्लाई, "अरे बुद्धू, छिलके को सड़क पर मत फेंको, कोई फ़िसल जाएगा।"



बाला ने, छिलके को कूड़ेदान में फेंक दिया। अगले दिन, कचरे का वह बादल थोड़ा-सा छोटा हो गया। चीकू ने सोचा, "अरे ऐसा कैसे हुआ?" फिर चीकू ने देखा कि रमा आंटी, प्लास्टिक की थैलियों को फेंक रही थीं। चीकू ने कहा, "आंटी, थैलियों को उठाकर दोबारा इस्तेमाल कीजिए।" रमा आंटी थैली उठाकर वहाँ से चली गई! अगले दिन जब चीकू सोकर उठी तो बादल और भी छोटा हो गया था। चीकू मुस्कराई, वह समझ गई थी कि उसे क्या करना है।

फिर जब भी कोई बिस्कुट का पैकेट, लिफ़ाफ़ा या पेंसिल की छीलन फेंकता चीकू उसे रोक देती। बेकार चीज़ें उठाकर कूड़ेदान में डाल देती। अब गाँव और ज़्यादा साफ़ रहने लगा। चीकू का बादल और छोटा होने लगा। फिर एक दिन वह ग़ायब हो गया। और चीकू शायद दुनिया की सबसे खुश लड़की हो गई। उसके बाद चीकू ने कूड़ा नहीं फैलाया।



Translated by Poonam S. Kudesia
Original story A Cloud of Trash by Karanjeet Kaur
Illu~strated by Bhavana Vyas Vipparthi

कचरे का बादल

1. चीकू के साथ कोई खेलना क्यों नहीं चाहता था?

2. चीकू के सिर पर हमेशा बादल क्यों मँडराता रहता था?

3. अम्मा चीकू से किन कामों के लिए मना करतीं थीं?

4. चीकू को अपनी ग़लती का अहसास कैसे हुआ?

4. चीकू के दोस्त उससे दूर क्यों हो रहे थे? क्या आपके साथ भी ऐसा हो सकता है?

5. आपकी किन–किन बातों पर आपकी माता जी को गुस्सा आता है और क्यों? सोचें और लिखें।

6. इस कहानी से आपको क्या समझ आया? सोचकर लिखें।

7. कचरा फैलाने से क्या–क्या नुकसान होते हैं?

8. वाक्यों को सही करें।

- उसकी सीर पर हमेसा एक बादल मडराता रहता।

- छीलके को कुरेदान में फैक दिया।

- थेलीयों का उठाकर दौबारा इसतेमाल करें।

9. हम अपने आसपास सफ़ाई कैसे रख सकते हैं?

10. कचरे का बादल छोटा होने लगा क्योंकि

- चीकू को अपनी ग़लती का अहसास हो गया था। ☐
- वह आसपास सफ़ाई रखने लगी थी। ☐
- जो लोग गंदगी करते थे उन्हें टोकती थी। ☐

चम्मच, चमचा, चमचागिरी

नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। आप इन में से कितने शब्दों के अर्थ जानते हैं या इनसे परिचित हैं। उन शब्दों के सामने सही (✓) का निशान लगाएँ और उनके अर्थ लिखें।

शब्द	पहले से जानते हैं	समूह में बातचीत के बाद जाना	शब्द के अर्थ लिखें
चमचागिरी			
वस्तु			
इस्तेमाल			
आश्चर्य			
पृथ्वी			
बर्तन			
उँगली			
रसदार			
शोरबा			
तरल			
दिलचस्प			
सीपियाँ			
बेधना			
प्रमाण			
ऋग्वेद			
धातु			
प्रकाश			
ज़िक्र			
यूनानी			
रोमन			

निर्देश : प्रिय दोस्तो, पाठ पढ़ने से पहले इन शब्दों को ज़रूर पढ़ें और इनके अर्थ जानने का प्रयास करें। अब आप अपने–अपने समूह में इन शब्दों पर बातचीत करें। ये प्रक्रिया पाठ को पढ़कर समझने में आपकी सहायता करेगी।

चम्मच, चमचा, चमचागिरी



चम्मच, चमचा, चमचागिरी... इन वस्तुओं और शब्द का हम सभी इस्तेमाल करते हैं। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि चम्मच पृथ्वी पर इस्तेमाल होने वाले बर्तनों में सबसे पुरानी है। हाँ, आपकी बात भी सही है कि आपकी उँगलियाँ तो उससे भी पुरानी हैं, लेकिन आप अपनी उँगलियों को बर्तन तो नहीं कहते न!

रसेदार सब्ज़ी, दाल या शोरबा चम्मच से आसानी से खाए जाते हैं। ख़ास तौर पर तब, जब वे गरमा-गरम परोसे गए हों। जब इंसान को तरल खाना मुँह में पहुँचाने





की ज़रूरत पड़ी, तब उसने् किसी चम्मचनुमा चीज़ का इस्तेमाल किया। इंसान पहले-पहल सीपियों और सही आकार के पत्थर से काम चलाता होगा, पर 1000 ई.पू. में मिस्र में हत्थेवाली चम्मचों के प्रमाण मिलते हैं। ऋग्वेद में भी धातु की बनी चम्मच पर प्रकाश की चमक का ज़िक्र है।

यूनानी, रोमन व चीनी सभ्यता में भी चम्मचों के इस्तेमाल के प्रमाण मिलते हैं। काँसा, चाँदी, लकड़ी, हाथी दाँत और गाय के सींग से चम्मचें बनाई जाती थी और इनके हत्थों पर ख़ूबसूरत नक़्क़ाशी भी की जाती थी।

नारियल के खोल से बनी चम्मचों को आप आज भी ऐसी जगह पाएँगे, जहाँ नारियल के पेड़ उगते हैं और खाने में नारियल का इस्तेमाल होता है। आप भी अपने आस-पास की चीज़ों से चम्मच बना सकते हैं। केरल में आम के पत्ते के दोनों सिरों को सींक से बेध कर बच्चे चम्मच बनाते हैं और बड़े मज़े से ज़्यादा पानी में पके चावल की कंजी खाते हैं।

चम्मचों के बारे में तो काफ़ी जानकारी मिलती है, लेकिन चमचागिरी कब शुरू हुई, यह पता लगाना चाहिए। हमारी भाषा में नए शब्द कहाँ से आते हैं, यह भी एक दिलचस्प खोज होगी।



Written by: Manisha Chaudhry, Illu~strated by: Suvidha Mistry

चम्मच, चमचा, चमचागिरी

1. केरल में चम्मच कैसे बनाए जाते हैं?

2. किन वाक्यों से पता चलता है कि बर्तनों में सबसे पुराना बर्तन चम्मच है?

3. चम्मच का इस्तेमाल क्यों किया गया?

4. इस पाठ को पढ़कर आपको कौन–सी दो नई जानकारियाँ मिलीं?

5. कहानी में नारियल का खाने के अलावा क्या–क्या उपयोग बताया गया है?

6. 'चमचागिरी' शब्द का अर्थ अपने शब्दों में समझाएँ व उससे एक वाक्य बनाएँ।

7. चम्मच किन–किन धातुओं से बनाई जाती है?

8. हमारी अंगुलियाँ सबसे पुरानी है मगर हम अपनी अंगुलियों को बर्तन नहीं कह सकते? कारण बताएँ।

9. अगर चम्मच का अविष्कार न हुआ होता तो हमारा काम कैसे होता? सोचकर लिखें।

कोलकता की लेडिकेनि

नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। आप इन में से कितने शब्दों के अर्थ जानते हैं या इनसे परिचित हैं। उन शब्दों के सामने सही (✓) का निशान लगाएँ और उनके अर्थ लिखें।

शब्द	पहले से जानते हैं	समूह में बातचीत के बाद जाना	शब्द के अर्थ लिखें
लेडिकेनि			
पन्तुआ			
मक्खन			
मिश्री			
स्वाद			
क़िस्मत			
मौक़ा			
पधारना			
लाटसाहब			
लार्ड कैनिंग			
धर्मपत्नी			
चखा			
दीवानी			
रिझाना			
मशहूर			
आदेश			
सालगिरह			
शौक़			
दन्त–चिकित्सालय			
इत्तेफाक़			

निर्देश : प्रिय दोस्तो, पाठ पढ़ने से पहले इन शब्दों को ज़रूर पढ़ें और इनके अर्थ जानने का प्रयास करें। अब आप अपने–अपने समूह में इन शब्दों पर बातचीत करें। ये प्रक्रिया पाठ को पढ़कर समझने में आपकी सहायता करेगी।

कोलकता की लेडिकेनि

पन्तुआ! बोलते ही मुँह में मक्खन और मिश्री का स्वाद घुलने लगता है। आपने खाया है कभी? नहीं! अरे खाया होगा। बस ज़रा नाम अलग होगा। हिंदी बोलने वाले इसे कहते हैं गुलाबजामुन। अब गुलाबजामुन हूबहू पन्तुआ तो नहीं है, इसे पन्तुआ का मौसेरा भाई मान लीजिए। सन् 1856 से पहले तीज-त्योहार के अवसर पर ही बनता था पन्तुआ, वह भी सेठों और रईसों के घर। इधर-उधर वालों की क़िस्मत साथ देती, तो उन्हें भी पन्तुआ चखने का मौक़ा मिल जाता।

सन् 1856 में ही कलकत्ता (अब कोलकता) पधारीं बड़े लाटसाहब लार्ड कैनिंग की धर्मपत्नी शालट कैनिंग। पन्तुआ चखा तो बस उसकी दीवानी हो

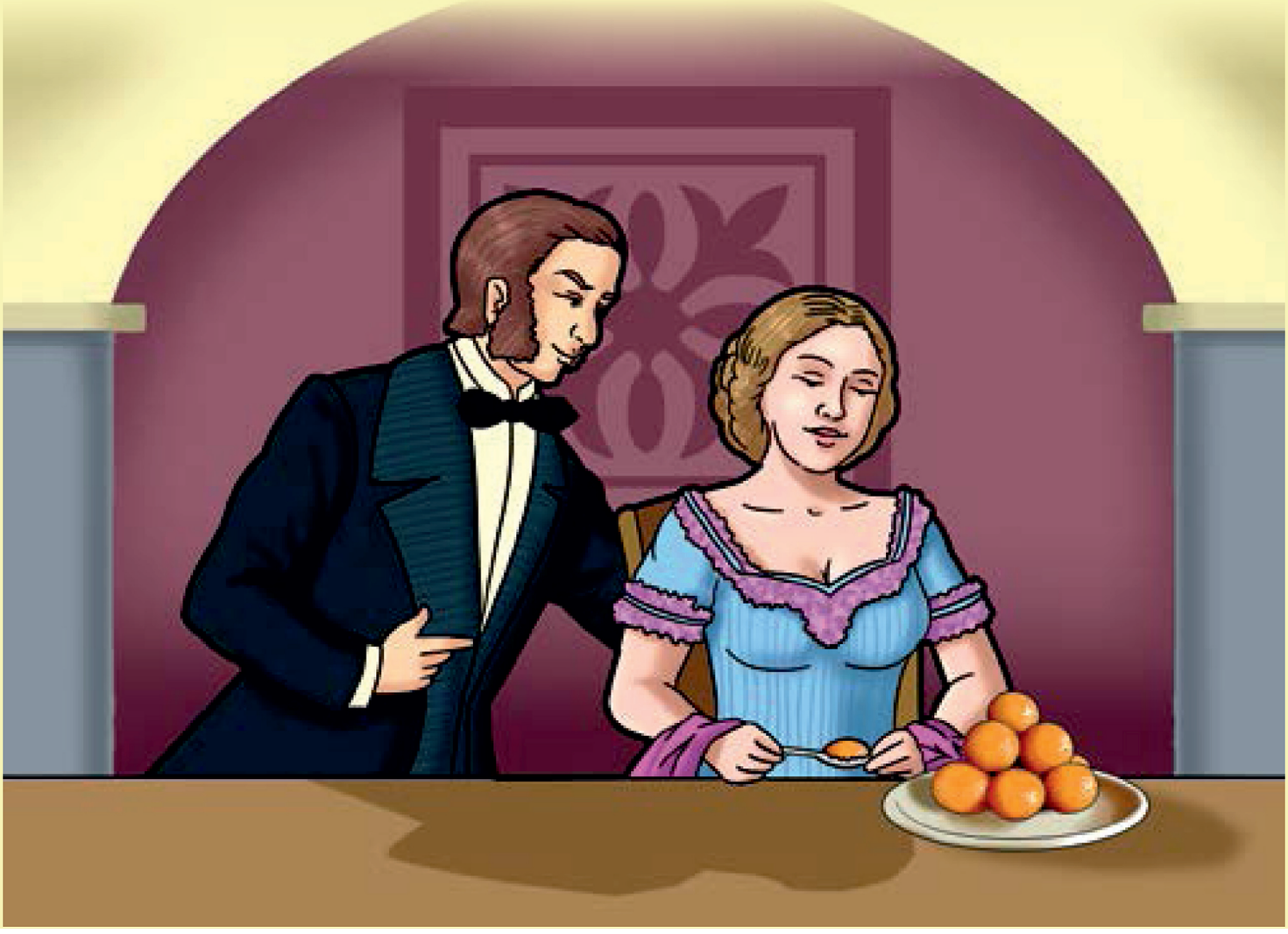

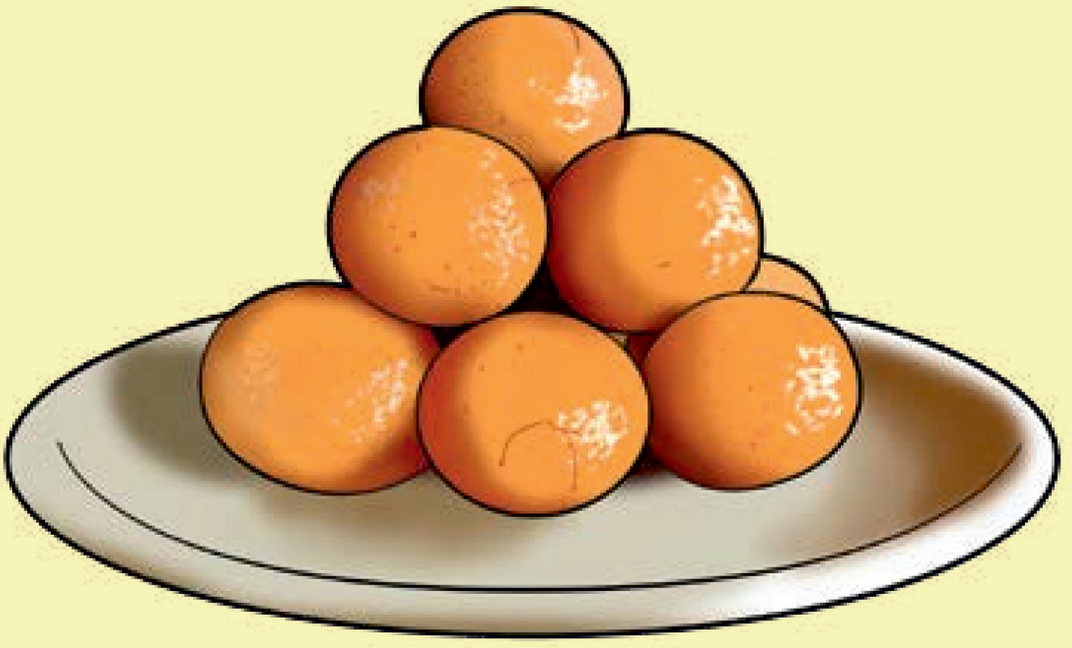

गई। पन्तुए ने उन्हें ऐसा रिझाया कि उस समय के सबसे मशहूर मिठाईवाले भीम नाग को आदेश हुआ कि हर वर्ष उनकी सालगिरह के अवसर पर एक ख़ास क़िस्म का पन्तुआ बनाया जाए, जिसका मज़ा उनके सारे मेहमान लें।

फिर क्या था, पन्तुए का नाम पड़ गया 'लेडिकेनि', लेडि कैनिंग के शौक़ के सम्मान में। सन् 1940 के बाद तो कलकत्ता की हर गली-मुहल्ले की मिठाई की दुकान पर मौजूद रहने लगीं 'लेडिकेनि'। उनकी ऐसी धूम मची कि पूछिए मत। अब सुनिए, कलकत्ता का पहला दन्त-चिकित्सालय खुला सन् 1949 में। कहीं 'लेडिकेनि' खा-खाकर लोगों ने अपने दाँत तो नहीं ख़राब कर डाले थे? पक्के तौर पर तो कुछ कहा नहीं जा सकता, लेकिन बाज़ार में 'लेडिकेनि' की धूम और दाँत के इलाज के लिए अस्पताल खुलना केवल इत्तेफाक़ है, दिल नहीं मानता।

Written by: Saktibrata Sen, Illu~strated by: Amar Soni

कोलकता की लेडिकेनि

1. इस पाठ में गुलाबजामुन के क्या–क्या नाम हैं?

2. पन्तुए का नाम 'लेडिकेनि' कैसे पड़ा?

3. क्या देश का पहला दन्त–चिकित्सालय गुलाबजामुन या मिठाइयों की वजह से खुला?

4. पन्तुए का मौसेरा भाई कौन है?

5. इस पाठ से आपको क्या–क्या नई जानकारियाँ मिलीं?

7. नीचे दिए गए शब्दों के अर्थ लिखें और इन्हें वाक्यों में प्रयोग करें।

चिकित्सालय

इत्तेफ़ाक

हू–बहू

7. अपनी मनपसंद मिठाई के बारे में लिखें कि वह मिठाई आपको क्यों पसंद हैं?

8 . हमें ज़्यादा मीठा खाना चाहिए या नहीं? इस बारे में अपने विचार लिखें।

9. लार्ड कैनिंग की पत्नी ने पंतुआ चखा तो वह उसकी दिवानी हो गई क्योंकि

- क्योंकि उन्हें मीठी बहुत पसंद था।
- पंतुआ बहुत स्वादिष्ट था।
- जिसने उसे बनाया था उसके हाथ की हर चीज़ स्वादिष्ट होती थी।

धागे से कपड़े तक

नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। आप इन में से कितने शब्दों के अर्थ जानते हैं या इनसे परिचित हैं। उन शब्दों के सामने सही (✓) का निशान लगाएँ और उनके अर्थ लिखें।

शब्द	पहले से जानते हैं	समूह में बातचीत के बाद जाना	शब्द के अर्थ लिखें
सिंथैटिक			
सिकुड़न			
आश्चर्य			
जूट			
प्रकृति			
पटसन्			
कपास			
रेशम			
ऊन			
सूती			
चरखा			
सूत कातना			
नाइलोन			
पॉलीस्टर			
एक्रिलिक			
रेयान			
रसायन			
हैंडलूम			
मज़बूत			
प्राकृतिक			

निर्देश : प्रिय दोस्तो, पाठ पढ़ने से पहले इन शब्दों को ज़रूर पढ़ें और इनके अर्थ जानने का प्रयास करें। अब आप अपने–अपने समूह में इन शब्दों पर बातचीत करें। ये प्रक्रिया पाठ को पढ़कर समझने में आपकी सहायता करेगी।



धागे से कपड़े तक

''मामू, कितनी गरमी है और यह रूमाल पसीना भी नहीं पोंछ रहा है।'' गरमी से परेशान सलमा बोली।

''यह सिंथैटिक है। यह पसीना नहीं सोखेगा। इसमें सिकुड़न नहीं पड़ती है। इसे इस्त्री करने की ज़रूरत भी नहीं है।'' सलमा के भाई असलम ने जवाब दिया।

''सच मामू?'' सलमा को आश्चर्य हुआ।

''हाँ।'' मामू ने जवाब दिया, ''कपड़े दो तरह के धागों से बनते हैं। एक तरह के धागे हमें प्रकृति से मिलते हैं, जैसे–सूती, रेशमी और ऊनी धागे। जूट के पेड़ की छाल से जूट बनता है। इसे पटसन् भी कहते हैं। कपास के पौधे से रुई मिलती है। इससे सूती धागा बनता है। भेड़, खरगोश, ऊँट और याक जैसे जानवरों के बालों से ऊन बनती है। इसी तरह रेशम के कीड़े से रेशमी धागे मिलते हैं। कपड़े बनाने के लिए दूसरी तरह के धागे हम अलग–अलग रसायन से फैक्टरी में बनाते हैं। इन्हें सिंथैटिक धागे कहते हैं।''

मामू कुछ पल रुके और उन्होंने मुस्कराते हुए पूछा, ''खादी का नाम सुना है?''

''हाँ,'' सलमा और असलम ने एक साथ कहा।

''खादी हाथ से बुना सूत का कपड़ा होता है। महात्मा गांधी चरखे से सूत काता करते थे।'' असलम ने बताया।

''मामू, सिंथैटिक धागे के बारे में भी बताएँ?'' सलमा ने कहा।

''सिंथैटिक धागे जैसे, नाइलोन, पॉलीएस्टर, एक्रिलिक और रेयान अलग- अलग रसायन से फैक्टरी में तैयार होते हैं। सिंथैटिक धागे प्राकृतिक धागों से ज़्यादा मज़बूत होते हैं। ये धागे पानी नहीं सोखते और आग के नज़दीक जाते ही पिघल जाते हैं। सिंथैटिक धागों को लपेटकर फिर ताने-बाने में पिरोकर उससे हैंडलूम या मशीन पर बुनाई करते हैं और कपड़ा तैयार हो जाता है।'' मामू ने बताया।

''अब मैं सूती रूमाल ही लूँगी।'' सलमा मुस्कराते हुए बोली।



Written by: Kusum Singh, Illu~strated by: Partha Sengupta

धागे से कपड़े तक

1. सिंथैटिक धागे किसे कहते हैं?

2. पटसन किसे कहते हैं? अपने शब्दों में लिखें।

3. सिंथैटिक धागे आग के नज़दीक जाते ही क्यों पिघल जाते हैं?

4. सिंथैटिक कपड़ा कैसे तैयार होता है?

5. इस पाठ से आपको कौन–सी जानकारी सबसे महत्त्वपूर्ण लगी?

6. 'खादी' का अर्थ समझाते हुए वाक्य लिखें।

7. 'कुछ प्रकार के धागे हमें प्रकृति से मिलते हैं।' इस वाक्य का अर्थ समझाते हुए प्राकृतिक धागे मिलने के स्त्रोत बताएँ।

8. मामू की बात सुनकर सलमा को **<u>आश्चर्य</u>** हुआ।
   रेखांकित शब्द को ऐसे शब्द से बदलें कि इस वाक्य का अर्थ न बदले। इसी शब्द से दो नए वाक्य भी बनाएँ।

9. 'अब मैं सूती रुमाल ही लूँगी।' सलमा ने ऐसा कहा
   - क्योंकि वह सारी बात समझ चुकी थी। ☐
   - सूती कपड़ा पसीना सोख लेता है सिंथैटिक नहीं। ☐
   - त्वचा के लिए सूती कपड़ा फायदेमंद होता है। ☐

टक-टक...टक-टक

नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। आप इन में से कितने शब्दों के अर्थ जानते हैं या इनसे परिचित हैं। उन शब्दों के सामने सही (✓) का निशान लगाएँ और उनके अर्थ लिखें।

शब्द	पहले से जानते हैं	समूह में बातचीत के बाद जाना	शब्द के अर्थ लिखें
शोरगुल			
अंगरक्षक			
सेनापति			
मेहरबानी			
गिड़गिड़ाना			
घुसपैठिए			
अधिकार			
दुहना			
न्यायी			
बुद्धिमान			
दरोगा			
पिंजरा			
फुदकना			
आश्चर्यचकित			
बेहद			
प्रजा			
पहरेदारी			
घोषित			
कारण			
दुश्मन			

निर्देश : प्रिय दोस्तो, पाठ पढ़ने से पहले इन शब्दों को ज़रूर पढ़ें और इनके अर्थ जानने का प्रयास करें। अब आप अपने–अपने समूह में इन शब्दों पर बातचीत करें। ये प्रक्रिया पाठ को पढ़कर समझने में आपकी सहायता करेगी।

टक-टक...टक-टक



सोनापुर के राजा पेटूचन्द ने अपना सिर तकिए के नीचे दबा लिया। पिछली रात स्वाद ले लेकर कुछ ज़्यादा ही खाया गया मुर्गा उनको परेशान कर रहा था। ऊपर से यह भयानक आवाज़! "यह क्या शोरगुल हो रहा है?" राजा ने गुस्से से अपने अंगरक्षकों से पूछा। "श्रीमान हमें पता नहीं," अंगरक्षक काँपते हुए बोले। "हम इस शोर मचाने वाले की तलाश कर रहे हैं लेकिन अभी तक कोई मिला नहीं है।" "अगर तुम लोगों ने अगले पाँच मिनट के अन्दर उसे ढूँढ नहीं लिया तो मैं तुम सबको नौकरी से निकाल दूँगा," राजा चिल्लाए। टक-टक...टक-टक! रक्षकों ने तुरन्त सेनापति रणवीर सिंह को बुलाया। "साहब, मेहरबानी करके ज़रा इस टक-टक की आवाज़ करने वाले को ढूँढने में हमारी मदद करें, नहीं तो हम सब की नौकरी चली जाएगी।" सन्तरी गिड़गिड़ाए। रणवीर सिंह ने सिपाहियों की एक टोली बनाई। टक-टक...टक-टक! जवान? जाओ और फ़ौरन इस घुसपैठिए को ढूँढ निकालो!" उसने् आदेश दिया। वे महल के चारों तरफ़ ढूँढते रहे। उन्होंने सारी खिड़कियों में झाँककर, सोते हुए बच्चों को डरा दिया। तमाम बक्सों को खोला और सभी दीवारों को ठकठकाया। कुल मिलाकर उन्होंने इतना हो-हल्ला किया कि उस रात महल में कोई सो नहीं पाया। अगले दिन राजा देर से जागे और दरबार में देर से पहुँचे। उनके सामने पहला मामला पेश किया गया। दो लोग एक गाय पर अपना-अपना अधिकार दिखा रहे थे। "यह मेरी है," पहले व्यक्ति ने कहा। "नहीं, मैं इस गाय का दूध दो सालों से दुह रहा हूँ," दूसरे ने कहा। "ऐसा करो, गाय के दो हिस्से करके दोनों को आधा-आधा दे दो।" राजा ने कहा "उसके दो हिस्से करना कोई समझदारी की बात नहीं," चिन्तामणि बोले। माथे पर हाथ मारते हुए राजा बोले, "ओहो! तुम ठीक कह रहे हो! ज़रा बताओ कि तीन रातें बिना सोए मैं एक न्यायी और बुद्धिमान राजा कैसे बना रह सकता हूँ?" राजा पेटूचन्द ने चिन्तामणि को टक-टक की आवाज़ के बारे में बताया। राहत से

मुस्कराते हुए मंत्री जी बोले, "मुझे पता है कि इस मामले में हमारी मदद कौन कर पाएगा।" उस रात जब सब लोग सो चुके थे तब वह चिड़ियाघर के दरोगा पशुपति को राजा के पास लाए... टक-टक...टक-टक! यह आवाज़ सुनते ही पशुपति अपने घर को दौड़ा और एक पिंजरा और कीड़ों से भरा एक कटोरा लेकर लौटा। पशुपति ने शाही बढ़ई से वहाँ पर एक छेद करवाया जहाँ से आवाज़ सुनाई दे रही थी। उसने् कीड़ों से भरा कटोरा छेद के पास रख दिया। सभी लोग ज़रा पीछे हट गए। लम्बी पीली चोंचवाला एक लाल और भूरा पंछी फुदक कर छेद के बाहर निकला और कटोरे में कूद गया। खटाक! पिंजरा पंछी पर आ गिरा। राजा ने आश्चर्यचकित होकर कहा, "इतना नन्हा-सा पंछी और इतना ज़ोर का शोर! आप सब का धन्यवाद, आपने देश की बहुत बड़ी सेवा की है।" अगली सुबह तरोताज़ा राजा जल्दी ही दरबार में पहुँच गए। उधर टक-टक की आवाज़ से चिड़ियाघर का एक भी जानवर रात भर सो नहीं पाया। अब सब जानवर सो रहे हैं और चिड़ियाघर देखने आए बच्चे जानवरों को सोता देख बेहद दुखी हो रहे हैं। राजा ने पूछा, "तो फिर इसका क्या किया जाए? अगर जानवर यह शोर नहीं झेल सकते तो मेरी प्रजा भी यह शोर बिल्कुल नहीं झेल सकती।" "मुझे उपाय मिल गया है।" चिन्तामणि चिल्ला उठे। और यूँ सीमा की पहरेदारी करने वाली पलटन का साथ देने के लिए टक-टक पंछी सोनापुर के महल से बाहर, बहुत दूर भेजा गया। उसने् हर रात सीमा पर जवानों को जगाए रखने का काम इतने बढ़िया ढंग से किया कि उसे देश का राष्ट्रीय पक्षी घोषित कर दिया गया। सैनिकों की चुस्ती के कारण राजा के दुश्मन सोनापुर के पास भी नहीं फटक पाते थे। वे भुनभुनाकर कहते कि इस देश का नाम सोनापुर की बजाय जागपुर रख देना चाहिए।



Translated by Madhubala Joshi
Original story Tok Tok by Vidya Pradhan
Illu~strated by Reshma Barve

टक-टक...टक-टक

1. पेटूचंद किस बात से परेशान थे?

2. राजा अंगरक्षकों को नौकरी से निकालने की धमकी क्यों दे रहे थे?

3. सिपाहियों ने घुसपैठियों को कहाँ–कहाँ ढूँढा?

4. राजा के सामने क्या मामला पेश आया? अपने शब्दों में लिखें।

5. पशुपति ने क्या किया?

6. नीचे दिए शब्दों का अर्थ लिखकर वाक्य बनाएँ।

   बेहद –

   उपाय –

   पहरेदार –

7. जब कभी आपको नींद नहीं आती है तो उसका कारण क्या होता है? सोचें और लिखें।

8. राजा टक टक टक की आवाज़ से परेशान था, क्योंकि...

- वे रात भर सो नहीं पाते थे। ☐
- आवाज़ पसंद नहीं थी। ☐
- वे जानना चाहते थे कि यह किसकी आवाज़ है। ☐

9. राजा जिस शोर से परेशान थे, वह शोर कहाँ से आ रहा था?

10. चिड़ियाघर के सभी जानवर दिन भर क्यों नहीं सो पाए थे?

11. आप भी अपने मुहल्ले में किसी शोर शराबे से सो नहीं पाते होंगे? ऐसा कब होता है? जब ज़्यादा शोर होता है तो आप क्या करते हैं?

पाटलिपुत्र

नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। आप इन में से कितने शब्दों के अर्थ जानते हैं या इनसे परिचित हैं। उन शब्दों के सामने सही (✓) का निशान लगाएँ और उनके अर्थ लिखें।

शब्द	पहले से जानते हैं	समूह में बातचीत के बाद जाना	शब्द के अर्थ लिखें
पाटलिपुत्र			
अलौकिक			
कल्पना			
तक़रीबन			
मगध			
साम्राज्य			
सम्राट			
सुरक्षा			
मज़बूत			
झरोखे			
इमारत			
बुद्ध विहार			
सदाहरित			
बसंत			
ऋतु			
सदैव			
सार्वजनिक			
तरणताल			
फ़व्वारे			
सौंदर्य			

निर्देश : प्रिय दोस्तो, पाठ पढ़ने से पहले इन शब्दों को ज़रूर पढ़ें और इनके अर्थ जानने का प्रयास करें। अब आप अपने–अपने समूह में इन शब्दों पर बातचीत करें। ये प्रक्रिया पाठ को पढ़कर समझने में आपकी सहायता करेगी।

पाटलिपुत्र

यह कहानी है गंगा की गोद में बसे हुए एक अलौकिक शहर की, जिसका नाम था पाटलिपुत्र। यह नगरी इतनी सुन्दर थी कि अब सिर्फ़ उसकी कल्पना ही की जा सकती है। तक़रीबन 2400 वर्ष पूर्व गंगा के किनारे सैंकड़ों मील में फैला था यह शहर। यह मगध साम्राज्य की शान थी और इसके सम्राट थे चन्द्रगुप्त मौर्य।

इस शहर का आकार चौकोर था। चारों तरफ़ सुरक्षा हेतु लकड़ी की मज़बूत ऊँची दीवार खड़ी थी। दीवार के बीच-बीच में झरोखे थे। बाहरी देख-रेख के लिए दीवार पर 570 लकड़ी के मनोरे खड़े किए थे। चारदीवारी के बाहर 600 फुट चौड़ी और 30 गज़ घनी खाई खोदी गई थी जिसमें हमेशा पानी भरा रहता था। इस शहर में प्रवेश करने के लिए कुल 64 द्वार थे। ऐसा कहते हैं कि उस समय भूकंप लगातार आते रहते थे, इसलिए सभी इमारतें लकड़ी की ही बनाई जाती थीं। राजमहल, मंदिर और बुद्ध विहार इस शहर की ख़ासियत थी। शहर, बाग़-बग़ीचे, बड़े ताल और छोटे तालाबों से भरा रहता था।

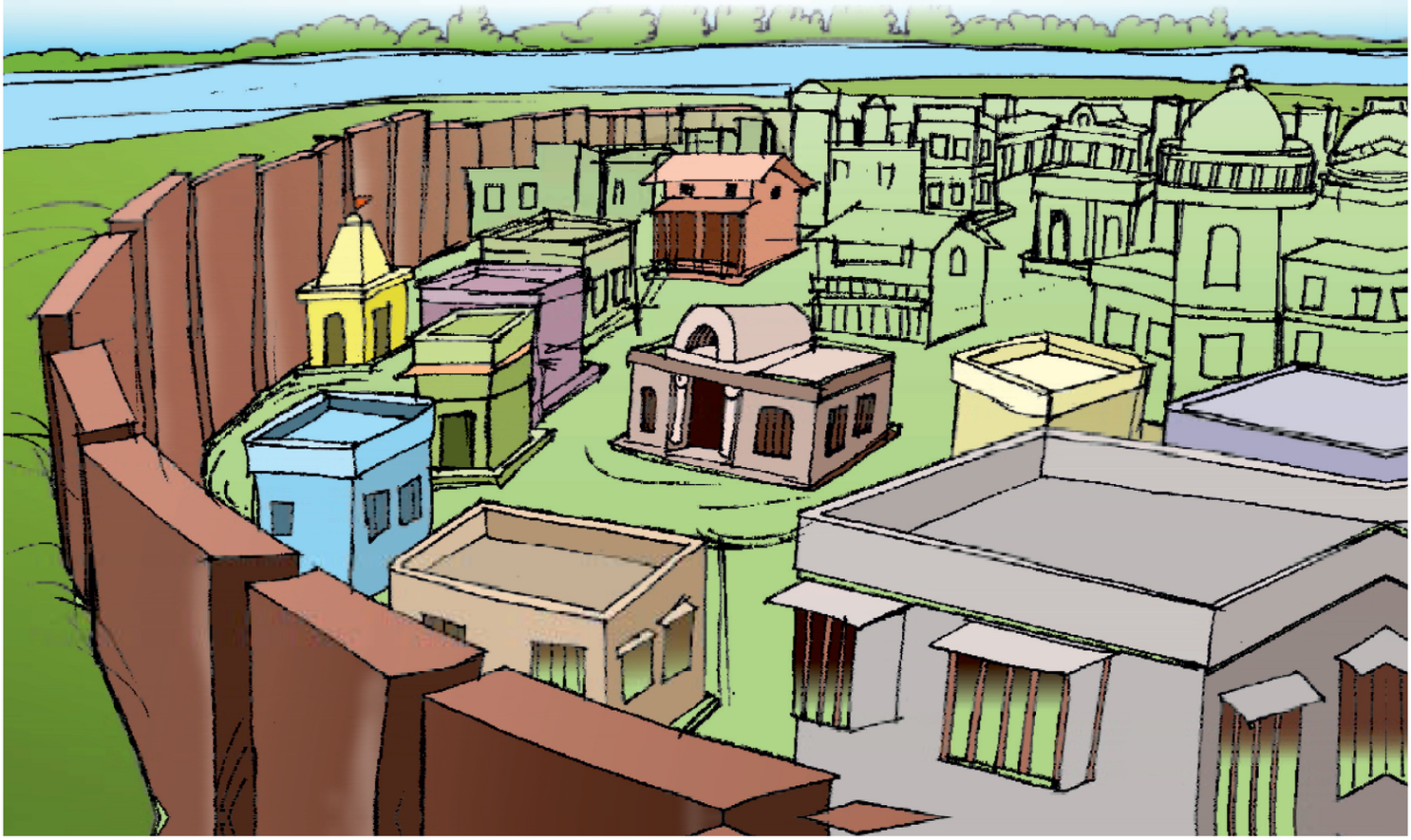

कमल के फूल और सदाहरित बग़ीचे नगर की शोभा बढ़ाते थे। मोर, तीतर, तोते और अन्य पक्षियों की गूँज से लगता था मानो वसंत ऋतु सदैव मौजूद है। जगह-जगह बने सार्वजनिक तरणताल और फ़व्वारे अपना सौंदर्य प्रदर्शित करते थे। गोल-गोल घूमने वाले फ़व्वारों से पानी की बूँद उड़ती रहती थीं। जिस यंत्र से ये बूँद उड़ती थीं उसे वारियंत्र कहते थे। पर्यटकों के लिए शहर में सार्वजनिक आवास की सुविधा थी जहाँ हर तरह का स्वादिष्ट भोजन बेचा जाता था। पैसों का व्यवहार 'कर्षपण' नाम के सोने, चांदी और ताम्र के सिक्कों से होता था। सिक्के चवन्नियों के आकार के होते थे।

शहर की रचना सुनियोजित थी और रास्ते इतने चौड़े थे कि रथों के आवागमन में भी कोई दिक़्क़त नहीं होती थी। एक दिशा में कपास और ऊनी वस्त्र तैयार करने वाले लोगों की बस्ती थी तो दूसरी तरफ़ दुकानें थीं, जहाँ व्यापारी वर्ग के लोग रहते थे। पुरोहित-शिक्षकों की बस्ती भी थी। यहाँ जवाहरात भी बनाए जाते थे। इत्र, सुगंधित फूलों के हार बनाने वाले, मूर्तियाँ और अन्य चीज़ें बनाने वाले कारीगर, बुनकर, सुनार और क्षत्रिय दूसरी तरफ़ रहते थे। लोग काम के समय काम करते थे और फ़ुर्सत में 'चतुरंग' नाम का खेल बड़े चाव से खेलते थे। आज उसी खले को हम शतरंज कहते हैं। कारोबार की भाषा संस्कृत थी लेकिन लोग 'पाली' भाषा बोलते थे। पाटलिपुत्र शहर को अब पटना के नाम से जानते हैं।



Written by: Purnima Bala Srivastaw, Photographs by: Ravishankar

पाटलिपुत्र

1. चन्द्रगुप्त मौर्य किस राज्य के शासक थे?

2. "चतुरंग" कौन–सा खेल है? इसमें कितने खिलाड़ी होते हैं?

3. चारदीवारी के बाहर खाई बनाने का क्या कारण हो सकता है?

4. पाटलिपुत्र में सभी इमारतें लकड़ी की क्यों बनाई गई थी?

5. निम्न शब्दों के अर्थ पता करें और वाक्य बनाएँ।

साम्राज्य– ☐ _____

सदाहरित– ☐ _____

ताम्र – ☐ _____

6. मिलान करें।

अलौकिक	रोशनदान
पाटलिपुत्र	सुन्दरता
झरोखा	राजा
सौंदर्य	अदभुत

7. इस पाठ में आपने कौन से नए शब्द सीखे उनमें से तीन शब्दों का अर्थ लिख कर वाक्य बनाएँ।

8. पाठ के आधार पर तालिका भरें।

काम–धन्धे	काम करने वाले	भवन / जगह	मुद्रा

9. पाठ में दी गई जानकारियों को खानों में लिखें।

10. कर्षण उस समय की मुद्रा थी। आज हम कौन–सी मुद्रा का प्रयोग करते हैं? उन मुद्राओं के नाम भी बताएँ?

11. "पटना" पाटलिपुत्र के बारे में आप क्या जानते हैं? लिखें।

मेरा नाम रूपा है।
मुझे जलेबी बहुत पसंद है।
मेरे बाबा जलेबी लाते हैं।
मैं मज़े से जलेबी खाती हूँ।

सूरज निकल आया है।
चारों ओर उजाला फैला है।
अंधेरा मिट चुका है।
बच्चे स्कूल जा रहे हैं।

बारिश का मौसम आया।
ढेर सारी खुशियाँ लाया।
पानी में हम बहुत खेलेंगे।
गरम-गरम पकौड़ियाँ खाएँगे।

एक बहुत बड़ा बग़ीचा है।
बग़ीचे में बहुत सारे पेड़ हैं।
पेड़ों में फल लगे हैं।
कुछ फल मीठे कुछ खट्टे हैं।

चारों ओर बहुत सारे पेड़ हैं।
पेड़ों पर चिड़ियाँ रहती हैं।
चिड़ियाँ दाना चुगती हैं।
वे नदी में पानी पीती हैं।

समीर नाम का एक लड़का है।
वह रोज़ अपने स्कूल जाता है।
रोज़ नई कहानियाँ पढ़ता है।
वह सब को कहानियाँ सुनाता है।

मंगल नाम का एक लड़का है।
नदी किनारे उसका घर है।
वह रोज़ नदी में नहाने जाता है।
नदी में नहाना उसे अच्छा लगता है।

मैं एक छोटी-सी तितली हूँ।
मुझे फूलों का रस पसंद है।
बच्चे मुझे पकड़ना चाहते हैं।
मैं किसी के हाथ नहीं आती हूँ।

गाँव में बहुत सारे मोर हैं।
मोर के पंख बहुत सुंदर हैं।
आकाश में जब बादल छाते हैं,
मोर पंख फैलाकर ख़ूब नाचते हैं।

सुमन नाम की एक लड़की है।
सुबह उठकर मुँह धोती है।
नाश्ता करके स्कूल जाती है।
शाम में वह खेलती है।

सोनी आँगन में खेल रही थी।
तभी एक परी आकाश से उतरी।
सोनी को आकाश में ले गई।
दोनों आकाश में साथ-साथ खेलने लगे।

बहुत ही सुहाना मौसम है।
कोयल कुहू-कुहू कर रही है।
उसका रंग काला है।
वह रोज़ गाना गाती है।

पिताजी जंगल जाते हैं।
जंगल से लकड़ी लाते हैं।
लकड़ी बाज़ार में बेचते हैं।
मेरे लिए नई किताबें लाते हैं।

मेरे चाचाजी किसान हैं।
खेत में धान उगाते हैं।
जब बारिश होने लगती है,
धान का पौधा लहलहाता है।

रवि के पास एक कुत्ता है।
वह रोज़ उसे घुमाने ले जाता है।
कुत्ता घर की रखवाली करता है।
रवि उससे बहुत प्यार करता है।

सुबह ख़ूब बारिश हुई है।
धान के खेत में पानी भर गया है।
फ़सलों में हरियाली आई है।
किसान फ़सल देखकर ख़ुश हैं।

मेरे शिक्षक बहुत अच्छे हैं।
वे कभी नहीं डाँटते।
मुझे प्यार से समझाते हैं।
उनसे पढ़ना अच्छा लगता है।

राजू के घर में एक गाय है।
गाय का रंग काला है।
राजू उसे रोज़ घास खिलाता है।
वह रोज़ दूध देती है।

बसंत का महीना है।
रंग-बिरंगे फूल खिले हैं।
फूलों पर भँवरे मंडरा रहे हैं।
तितलियाँ फूलों पर बैठी हैं।

भरत एक अच्छा लड़का है।
वह रोज़ पाठशाला जाता है।
उसे कविताएँ अच्छी लगती है।
वह सब को कविताएँ सुनाता है।

मीनू का घर बहुत बड़ा है।
घर के पास एक फुलवारी है।
वहाँ बहुत से फूल खिले हैं।
फूलों पर भँवरे बैठे हैं।

हमारे घर के पास एक तालाब है।
तालाब बहुत सुंदर और बड़ा है।
उसके किनारे रंग-बिरंगे फूल खिले हैं।
उसमें बहुत सारी मछलियाँ भी हैं।

पहाड़ पर एक पेड़ है।
पेड़ पर कई डाल हैं।
एक डाल पर एक घोंसला है।
घोंसले में एक अंडा है।

हमारे गाँव में एक घोड़ा है।
उसका रंग सफ़ेद है।
वह बहुत तेज़ दौड़ता है।
वह बहुत काम आता है।

आसमान में तारे टिमटिमाते हैं।
दिन में ये सारे छुप जाते हैं।
रात होते ही निकल आते हैं।
तारों के साथ चाँद भी दिखता है।

चाचाजी हमारे घर आए हैं।
घर में चटपटे पकौड़े बने हैं।
साथ में इमली की चटनी भी है।
सब चाय के साथ पकौड़े खा रहे हैं।

मुझे पतंग उड़ाना पसंद है।
जब तेज़ हवा चलती है,
मेरी पतंग ख़ूब ऊँची उड़ती है।
मुझे बहुत मज़ा आता है।

मेरे पास एक कुरसी थी।
उसकी एक टाँग टूट गई थी।
मैंने उसे ठीक करवा लिया।
अब मैं उस पर रोज़ बैठूँगी।

मैं मौसी के घर गई थी।
घर के सामने एक बग़ीचा है।
उसमें बच्चे खेलते हैं।
लोग उसमें घूमने जाते हैं।

रसोई में एक खिड़की है।
उससे रोशनी और हवा आती है।
जब खिड़की खोल देते हैं,
रसोई में गरमी नहीं लगती है।

नदी के किनारे एक झोंपड़ी है।
झोंपड़ी में बूढ़ी दादी रहती हैं।
उन्हें बहुत सारी कहानियाँ आती हैं।
वह सबको कहानी सुनाती हैं।

मेरा गाँव बहुत सुंदर है।
चारों तरफ़ पेड़-पौधे हैं।
गाँव में एक तालाब भी है।
तालाब में बहुत मछलियाँ हैं।

मेरे पास एक किताब है।
उसमें बहुत सारी कहानियाँ हैं।
मैं रोज़ कहानी पढ़ती हूँ।
मेरी नानी भी कहानी पढ़ती हैं।

भालू ने नाच दिखाया।
शेर को बहुत ग़ुस्सा आया।
हाथी ने उसे समझाया।
फिर सबने मिलकर गाना गाया।

घर में नानी आई हैं।
ख़ूब सारे लड्डू लाई हैं।
हम सब लड्डू खाएँगे।
दोस्तों को भी खिलाएँगे।

रघु भैया रिक्शा लेकर आए।
हम झट से उसमें बैठ गए।
दिन भर शहर की सैर की।
शाम में घर लौट आए।

आज बादल छाए हुए हैं।
लगता है बारिश होगी।
हम सब बारिश में नहाएँगे।
काग़ज की नाव भी चलाएँगे।

हम रोज़ स्कूल जाते हैं।
स्कूल में पढ़ते-लिखते हैं।
स्कूल में हम खेलते भी हैं।
हमारा स्कूल बहुत बड़ा है।

आलिया छोटी-सी लड़की है।
दिन-भर मौसी के पास रहती है।
शाम में जब माँ घर आती है,
आलिया माँ से लिपट जाती है।

आज हमने एक पौधा रोपा।
हम रोज़ उसको पानी देंगे।
उसमें थोड़ी खाद भी डालेंगे।
अगले साल वह पेड़ बन जाएगा।

मेरी एक गाय है।
वह हरी घास खाती है।
मीठा दूध देती है।
दूध से दही बनता है।

एक तौलिया और कुरते थे दो
केशव लाया था उनको धो
दो रुपये के हिसाब से रुपये दिए
बताओ कुल कितने रुपये दिए?

एक दर्जन में होते बारह केले
चुन्नू-मुन्नू बैठे खाने केले
मम्मी ने एक-एक केला पकड़ाया
बताओ बचे अब कितने केले?

पापा लाए नया कैलेंडर
उसमें नहीं था माह सितंबर
इसके आगे कौन से महीने
नहीं आते जिनमें पसीने?

हमने पाली एक बकरी
चारा खाती दिन में दो टोकरी
हफ़्ते में वह कितना चारा खाए
कोई तो मुझे यह बतलाए?

सोमवार को चढ़े ट्रेन में हम
गुरुवार को जा पहुँचे अपने शहर
सुबह, शाम, रात और दोपहर
बताओ कितने दिन किया सफ़र?

चार बजे नानी आईं।
सात बजे तक गप्पें मारीं।
आठ बजे वह चली गईं।
बताओ कितने घंटे साथ रहीं?

एक गाड़ी के थे छह डिब्बे
हर डिब्बे के थे आठ पहिए
जो भी पहियों का जोड़ बताए
कक्षा में वह नाम कमाए।

मेरी एक गाय है।
वह हरी घास खाती है।
मीठा दूध देती है।
दूध से दही बनता है।

फूलों के रस से शहद बनता है।
शहद बहुत मीठा होता है।
इसे खाने से ताक़त आती है।
शहद बीमारी को भगाता है।

मेरा नाम नीम है।
मैं खाने में कड़वा हूँ।
मैं सबको छाया देता हूँ,
और बिमारियों से लड़ता हूँ।

नदी का पानी बहता हुआ,
तालाब का पानी रुका-रुका।
झरने का पानी बहता हुआ,
कुएँ का पानी रुका-रुका।

मैंने आज चाय बनाई।
उसमें चीनी डालना भूल गई।
मैंने चाय सबको दी।
फिर भी सबने मज़े से पी।

रमन लाया रबड़ी।
अमर लाया अचार।
पूनम कचौड़ी लाई।
सबने मिल कर खाई।

मामा ने गिलहरी पाली है।
गिलहरी बहुत मोटी है।
वह दूध-रोटी खाती है।
खाकर छुप जाती है।

आज पुलाव बन रहा है।
उसमें काजू भी डाला गया।
ख़ुशबू घर में फैली है।
पुलाव चटनी के साथ खाएँगे।

मेरे घर में एक तोता है।
वह इधर-उधर उड़ता है।
मिर्च-अमरूद खाता है।
सबका नाम लेता है।

कल माँ बाज़ार से चावल लाई।
माँ ने चावल की खीर बनाई।
खीर में बादाम भी डाले।
सबने मिलकर खीर खाई।

तितली सुंदर होती है।
यह रंग-बिरंगी होती है।
फूलों पर मंडराती है।
उनका रस चूसती है।

अनार का रंग है लाल।
आम का रंग है पीला।
केला भी है पीला-पीला।
लीची है लाल-लाल।

झूमा नाम की एक लड़की है।
उसके घर के सामने एक मैदान है।
वहाँ रोज़ छोटे-छोटे बच्चे खेलने आते हैं।
झूमा भी रोज़ उनके साथ खेलती है।

मेरे गाँव में एक तालाब है।
तालाब में बहुत सारी मछलियाँ हैं।
हम सब तालाब में नहाने जाते हैं।
हम सब मछलियाँ भी पकड़ते हैं।

मेरे पास एक कुत्ता है।
उसका नाम मोती है।
मोती दिन भर सोता रहता है।
वह रात को पहरा देता है।

राधा राम की बहन है।
वे दोनों बग़ीचे में घूमने जाते हैं।
वहाँ से गुलाब के फूल लाते हैं।
फूलों की माला बनाते हैं।

मेरे पास एक सुन्दर चादर है।
उसमें लाल-लाल फूल हैं।
छोटी-छोटी चिड़ियाँ बनी हैं।
मैं उसे ओढ़कर सोती हूँ।

राम रोज़ बाग़ में जाता है।
वहाँ से आम तोड़कर लाता है।
राम को आम बहुत पसंद है।
वह आम का रस भी पीता है।

ताजमहल बहुत बड़ा है।
यह आगरा शहर में है।
इसका रंग सफ़ेद है।
लोग यहाँ घूमने आते हैं।

पेड़ों से ही हमारा जीवन है।
इनं से हमें भोजन मिलता है।
हमें पेड़ नहीं काटने चाहिए।
अधिक पेड़ लगाने चाहिए।

आसमान नीला दिखता है।
पानी भी नीला दिखता है।
पतंग का रंग भी नीला है।
मुझे नीला रंग बहुत पसंद है।

मैं चिड़ियाघर घूमने आया।
वहाँ बहुत से जानवर देखे।
मैंने शेर को भी देखा।
वह ज़ोर से दहाड़ रहा था।

आसमान में बादल छाए थे।
थोड़ी ही देर में बारिश शुरु हो गई।
पिताजी बाज़ार से सामान लेने गए थे।
वापस आते-आते वह भीग गए।

आम रसीला है।
छिलका पीला होता है।
आम मीठा-मीठा होता है।
फलों का राजा कहलाता है।

मीनू ने रात में चांद देखा।
वह रोटी की तरह गोल था।
दूध की तरह सफेद था।
चांद को मामा भी कहते हैं।

कोयल काली होती है।
उसकी आवाज़ मीठी होती है।
कोयल गाना सुनाती है।
सबके मन को भाती है।

जंगल बहुत बड़ा होता है।
वहाँ बहुत सारे पेड़ होते हैं।
जंगल में जानवर भी होते हैं।
जंगल बहुत घना होता है।

कल मेरी माँ चावल लाई।
माँ ने चावल की खीर बनाई।
खीर में बादाम भी डाले।
सबने मिलकर खीर खाई।

मेरे चाचा कल फल लाए।
मीठा आम और केला लाए।
हमने फलों की चाट बनाई।
सबने चाट मज़े से खाई।

कंचन के गाँव में कुआँ है।
उसका पानी ठंडा-ठंडा है।
कुएँ के पास बाँस का पेड़ है।
बाँस से सीढ़ी बनती है।

मेरे घर में आम का पेड़ है।
उस पर आम लगते हैं।
माँ ने आम का अचार बनाया है।
मैं रोज़ अचार खाता हूँ।

सावन का महीना आता है।
मौसम बहुत सुहाना होता है।
पेड़ों पर झूला डालते हैं।
सब मिलकर गीत गाते हैं।

कछुआ एक छोटा जीव है।
इसकी पीठ कठोर होती है।
उसका दिल कोमल होता है।
वह धीरे-धीरे चलता है।

सुबह अख़बार आता है।
हर जगह की ख़बर लाता है।
सब अख़बार पढ़ते हैं।
पढ़कर सबकी ख़बर लेते हैं।

आंगन में एक पेड़ है।
पेड़ पर एक घोंसला है।
घोंसले में दो बच्चे हैं।
दोनों बहुत सुंदर हैं।

ख़रगोश सफेद होता है।
ख़रगोश बिल में रहता है।
फुदक-फुदक कर चलता है।
लंबी छलांग लगाता है।

एक नई बस चली है।
वह नीले रंग की है।
सबको शहर घुमाती है।
शाम में वापिस छोड़ती है।

इस साल बहुत बारिश हुई।
नदियों में पानी भर गया।
बाढ़ आने का अंदेशा था।
लेकिन बाढ़ आई नहीं।

गाँव में खेल शुरू हुए।
कुछ खिलाड़ी जीते,
कुछ खिलाड़ी हारे।
सबको बहुत मज़ा आया।

रेलगाड़ी बिजली से चलती है।
कुछ कोयले से भी चलती हैं।
लेकिन सब पटरी पर चलती हैं।
पटरी लोहे की होती है।

बस सड़क पर चलती है।
रेल पटरी पर चलती है।
नाव पानी में चलती है।
इनसे लोग आते-जाते हैं।

फूलों का एक बग़ीचा है।
उसमें तरह-तरह के फूल हैं।
ख़ुशबू से बग़ीचा महकता है।
सभी को वहाँ जाना पसंद है।

माँ ने नई चूड़ियाँ ख़रीदीं।
कुछ चूड़ियाँ हरी हैं।
कुछ चूड़ियाँ लाल हैं।
माँ चूड़ियाँ शादी में पहनेंगी।

मामा ने एक गिलहरी पाली।
गिलहरी बहुत मोटी है।
वह दूध-रोटी खाती है।
खाकर छिप जाती है।

आज माँ बीमार है।
माँ ने खाना नहीं बनाया।
पिताजी ने खिचड़ी बनाई।
हम सबने खिचड़ी खाई।

मेरे घर में एक तोता है।
वह इधर-उधर उड़ता है।
मिर्च-अमरूद खाता है।
सबका नाम लेता है।

गाँव में नई सड़क बनी है।
यह काले रंग की है।
इस पर वाहन चलेंगे।
यह शहर तक जाती है।

बिजली पानी से बनती है।
बिजली कोयले से भी बनती है।
यह हमारे बहुत काम आती है।
इससे घर में रोशनी होती है।

नदी किनारे एक जंगल है।
जंगल बहुत घना है।
उसमें बहुत से जानवर हैं।
सभी जानवर मिलकर रहते हैं।

गाँव में एक तालाब है।
तालाब बहुत बड़ा है।
सब वहाँ नहाते हैं।
कपड़े भी धोते हैं।

तितली सुंदर होती है।
यह रंग-बिरंगी होती है।
फूलों पर मंडराती है।
उनका रस पीती है।

आज बादल छाए हैं।
लगता है बारिश होगी।
हम सब बारिश में नहाएँगे।
काग़ज़ की नाव भी चलाएँगे।

कल दादी बाज़ार गईं।
बाज़ार से मेवे लाईं।
दादी लड्डू बनाएँगी।
हम सब लड्डू खाएँगे।

मेरे पास एक ख़रगोश है।
उसका रंग सफ़ेद है।
जब वह उछलता है,
तब गेंद की तरह लगता है।

कल माँ बाज़ार गई।
बाज़ार से एक कार लाई।
कार चाभी से चलती है।
कार में सीटी भी बजती है।

गरमी में आम आते हैं।
हमें आम बहुत पसंद हैं।
पापा रोज़ आम लाते हैं।
हम मज़े से खाते हैं।

दिल्ली में लाल क़िला है।
यह लाल रंग का है।
उसे देखने सब जाते हैं।
देखकर ख़ुश हो जाते हैं।

जब भी बारिश आती है,
मैं छाता लेकर जाता हूँ।
फिर भी मैं भीग जाता हूँ।
घर आकर गरम चाय पीता हूँ।

ताजमहल बहुत बड़ा है।
यह आगरा शहर में है।
इसका रंग सफ़ेद है।
लोग यहाँ घूमने आते हैं।

चूहा घर में आता है।
अनाज-रोटी खा जाता है।
मेरा कुत्ता भौंकता है।
घर की रखवाली करता है।

एक नई बस चली है।
वह नीले रंग की है।
सबको शहर घुमाती है।
शाम में वापिस छोड़ती है।

पेड़ बहुत काम आते हैं।
यह लकड़ी देते हैं।
यह फल देते हैं।
यह छाया भी देते हैं।

गाँव में नई सड़क बनी है।
यह काले रंग की है।
इस पर गाड़ी चलती है।
यह शहर तक जाती है।

गाँव में खेल शुरू हुए।
कुछ खिलाड़ी जीते।
कुछ खिलाड़ी हारे।
सबको बहुत मज़ा आया।

बस सड़क पर चलती है।
रेल पटरी पर दौड़ती है।
नाव पानी में तैरती है।
इनसे लोग आते-जाते हैं।

सीमा की सहेली रीमा है।
दोनों को पढ़ना पसंद है।
दोनों साथ में खेलती हैं।
दोनों साथ स्कूल जाती हैं।

माँ ने नई चूड़ियाँ ख़रीदीं।
कुछ चूड़ियाँ हरी हैं।
कुछ चूड़ियाँ लाल हैं।
माँ चूड़ी शादी में पहनेंगी।

गरमी में आम आते हैं।
हमें आम बहुत पसंद है।
पापा रोज़ आम लाते हैं।
हम मज़े से आम खाते हैं।

आज माँ बीमार है।
माँ ने खाना नहीं बनाया।
पिताजी ने खिचड़ी बनाई।
हम सबने खिचड़ी खाई।

नदी किनारे एक जंगल है।
जंगल बहुत घना है।
उसमें बहुत से जानवर हैं।
सभी जानवर मिलकर रहते हैं।

आज बादल छाए हैं।
लगता है बारिश होगी।
हम सब बारिश में नहाएँगे।
कागज़ की नाव भी चलाएँगे।

मेरे घर में एक तोता है।
वह इधर-उधर उड़ता है।
मिर्च-अमरूद खाता है।
सबका नाम लेता है।

माँ ने दाल-बाटी बनाई। पापा ने घी से चूरमा। सभी ने मिलकर खाया। सबको खूब मज़ा आया।	यह खीरे का पौधा है। यह मेरे दोस्त है। मुझे रोज़ यह अपना फल देता है। मैं अपने दोस्तों को खिलाता हूँ।	मेरी माँ का नाम दुलारी है। वह रोज़ मुझे दुलार करती है। कभी हँसाती है कभी रुलाती है। इसमें माँ को मज़ा आता है।
मेरे दादा जी बूढ़े हैं। मैं उनकी रोज़ सेवा करता हूँ। कभी पानी कभी दवा देता हूँ। दादाजी कहानी सुनाते हैं।	मेरे पिताजी किसान है। रोज़ खेत में जाते हैं। वहाँ फ़सल लगाते हैं। मैं रोटी लेकर जाता हूँ।	देवघर एक शहर है। बाबा नगरी कहलाता है। काँवड़ियों से भर जाता है। बोलबम सबको भा जाता है।
राजू और राढ़ी बाज़ार गए। बाज़ार में उनको रवि भी मिला। तीनों ने मिलकर रसमलाई खाई। फिर एक साथ घर लौट आए।	आगरा एक बड़ा शहर है। वहाँ ताजमहल भी है। ताजमहल शाहजहाँ ने बनवाया था। ताजमहल आगरा की शान है।	मोहन केला खाता है। राधा के लिए भी लाता है। राधा केला पाती है। खाकर खुश हो जाती है।
आज बारिश हो रही है। मैदान में पानी भर गया है। सभी बच्चे घरों में बैठे हैं। सभी बच्चे टीवी देख रहे हैं।	मीरा और मोहन दोस्त हैं। दोनों साथ खेलते हैं। रोज़ विद्यालय जाते हैं। भेल पुड़ी खाते हैं।	मेरे पास पंखा है। यह बिजली से चलता है। गरमी दूर भगाता है। मेरे मन को भाता है।

घर के पास नदी है।
नदी में मछली है।
नदी गहरी है।
इसमें नाव चलती है।

राम लाया ताला।
ताला काला काला।
घर पर ताला।
ताला बनता रखवाला।

आज बारिश हुई है।
हम पकौड़े बनाएंगी।
सब मिलकर खाएंगे।
बड़ा मज़ा आएगा।

कोयल निराली होती है।
काले रंग की होती है।
कू कू कर गीत सुनाती है।
सबके मन को भाती है।

आज रविवार है।
मौसम दमदार है।
चलो यार घूमने
हम तो तैयार हैं।

कल माँ बाज़ार गई
बाज़ार से एक नाव लाई।
नाव चाबी से चलती है।
पानी में गोल-गोल घूमती है।

आज बारिश हुई है।
हम पकौड़े बनाएंगें।
सब मिलकर खाएंगे।
बड़ा मज़ा आएगा।

दादा जी तालाब गए हैं।
लाल-लाल फूल लाये हैं।
सब मिलकर माला बनाएंगे।
हम सब माला पहनेंगे।

हाथी सैर करता है।
भालू नाच दिखाता है।
बंदर धमाल मचाता है।
भौंरे गुन गुनाते हैं।

गाँव में एक तालाब है।
तालाब बहुत बड़ा है।
सब वहाँ नहाते हैं।
कपड़े भी धोते हैं।

आज बुधवार है।
यहाँ बाज़ार लगा है।
कपड़े जूते, बैग मिठाई।
हम सब लेने जाएंगे।

बरसात के बाद धूप खिली है।
पीली-पीली बसंती धूप
मौसम बहुत सुहावना है।
ठंडी-ठंडी हवा चल रही है।

बग़ीचे में बहुत सारे पेड़ है।
कुछ छोटे पेड़, कुछ बड़े पेड़।
छोटे पेड़ अमरूद के हैं।
बड़े पेड़ आम, नीम के हैं।

रात को आँधी आई थी।
बग़ीचे में ढ़ेरों आम गिरे थे।
दीदी के हम संग गए थे।
कच्चे आम लाए थे।

मैंने फुलवारी लगाई है।
उसमें गुलाब के फूल हैं।
गुलाब लाल रंग के हैं।
सुंघने में खुशबू देते हैं।

घोड़ा हिन-हिन करता है।
बकरी मैं मैं करती है।
चिड़ियाँ चीं-चीं करती है।
कोयल कुहू-कुहू करती है।

काले बादल छाये हैं।
मोर नाच रहे हैं।
रिमझिम फुहारें गिरने लगीं।
मेढ़क टर-टर बोलने लगे।

आज खेत में जाएँगे।
मीठा तरबूज लाएँगे।
दीदी के साथ खाएँगें।
खूब मौज़ मनाएँगे।

आज मेले में जाएंगे।
चाय पकौड़ी खाएंगे।
केला लेके आएंगे।
हमसभी को खिलाएंगे।

राजू मामा लाए हैं।
ढेर मिठाई लाए हैं।
मोटर साथ में लाए हैं।
बच्चों का दिल बहलाए हैं।

आज बाज़ार जाऊँगा।
ढेर खिलौना लाऊँगा।
मोहन को लेजाऊँगा।
खूब मज़ा आएगा।

सेब का पेड़ लगाएँगे।
खाद, पानी डालेंगे।
पेड़ में फल लगाएँगे।
तोड़कर हम खाएँगे।

बरसात का दिन आया।
काला, पीला बादल छाया।
रिमझिम कर बरसात कराई।
ठंडी-ठंडी हवा चलाई।

सीता गाना गाएगी।
राम ढोल बजाएगा।
सारे बन्दर नाचेगें।
हम सब भी नाचेगें।

चलो पकौड़े लाते हैं।
पापा को खिलाते हैं।
छोटी बहना खाएगी।
जमके धूम मचाएगी।

मोहन के पास भालू है।
भालू सबसे चालू है।
दूध मलाई खाता है।
हम सबको ललचाता है।

आज सोमवार है।
मेले की बहार है।
राजा ढोल बजाता है।
सबको नाच दिखाता है।

रिमझिम रिमझिम सावन आता
सबके मन को है बहलाता।
बूदें टपटप करती जाती,
चारों ओर शोर मचाती।

कौआ आता काँय-काँय,
बकरी बोले मेय-मेय,
चिड़िया बोले चै-चै,
कुत्ता बोले भौ-भौ

मटर गोल-गोल होती है।
हरे रंग की होती है।
फलियों के अंदर रहती है।
खाने में मीठी लगती है।

गोल-गोल आलू है।
बड़ा ताकतवर है।
जो रोज़ आलू खाता है।
खूब (आलू जैसा) मोटा हो जाता है।

सफ़ेद-सफ़ेद चीनी के दाने।
मीठे-मीठे लगते हैं।
चाय हो या हलवा डालो।
सबको मीठा करते हैं।

दादा ने खीरे बोए।
खीरे हरे रंग के थे।
कुछ खीरे बेच दिए।
कुछ हमने खा लिए।

खीरा मोटा होता है।
ककड़ी पतली होती है।
दोनों गरमी में उगते हैं।
सलाद में खाए जाते हैं।

हरी-हरी मिर्च,
ख़ूब तीखी मिर्च,
खाने में डलती है।
मुँह को जलाती है।

नदी का घाट बड़ा है।
सब यहाँ नहाने आते हैं।
देर तक नहाते हैं।
ख़ूब मज़े करते हैं।

मामा घर आया।
साथ में आम लाया।
हमने आम खाया।
खूब मज़ा आया।

लाल लाल टमाटर
बड़ा बड़ा टमाटर
लाल बड़ा टमाटर
खट्टा खट्टा टमाटर

कमल और नग़मा आए।
साथ में अनार लाए।
अनार लाल लाल था।
लाल अनार रसदार था।

नाना और मामा आए।
नाना माला लाए।
मामा फल लाए।
हम सब नाच उठे।

कमल बाजा लाया।
बाजा लाल था।
बाजा लम्बा था।
लम्बा बाजा सुंदर था।

इलाहाबाद बड़ा शहर है।
वहाँ पर संगम है।
संगम के किनारे किला है।
हम सब वहाँ घूमने जाएंगे।

पेड़ पर एक घोंसला है।
घोसले में दो बच्चे है।
बच्चे चीं-चीं करते हैं।
बहुत सुंदर लगते हैं।

मेरे पास एक गिलहरी है।
वह रोटी, चावल खाती है।
उसकी पूँछ पर धारियां हैं।
उसकी आँखें गोल सुनहरी हैं।

भालू काला होता है।
घने जंगलों में रहता है।
मस्ती में वह झूमता है।
सबको नाच दिखाता है।

अनिल मेरा भाई है।
वह बहुत आलसी है।
वह बहुत खाता है।
फिर भी मोटा नहीं हो पाता है।

गोल-गोल यह चलता है।
सबके मन को भाता है।
गरमी दूर भगाता है।
ख़ूब मज़ा आ जाता है।

चीनी सफेद होती है।
गन्ने से यह बनती है।
खाने में यह मीठी है।
रोज़ काम में आती है।